* नया वर्ष शुभ हो
* इस अंक में कैलेंडर
* झिलमिल जापान की सैर

नंदन

नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक



जनवरी '९५

पांच रुपए

Scanned with CamScanner

केस गळणे? अकाली पिकणे? कोंडा होणे?

केसांची समस्या?

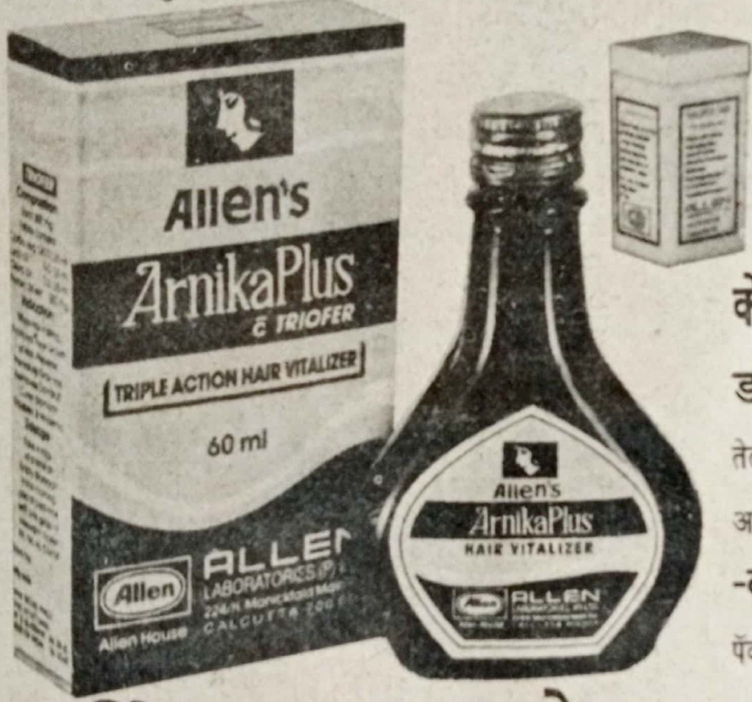
हे केसांचे रोग नाहीतच, ही केवळ लक्षणे आहेत. ह्या समस्येच्या संपूर्ण उपचारासाठी डोक्याला लावण्याचे लोशन तसेच पोटात योग्य औषध घेणे अत्यंत आवश्यक आहे.

डॉ. सरकार



कोंडा विरहीत सुंदर काळे दाट केस, **अर्निकाप्लस ट्रायोफरचा** संदेश.
अकाली पिकणे, गळणे आणि पोटांचे विविध विकार,
निरामय होऊन सुंदर नवीन केसांची वाढ,
अप्रतिम नितळ, मोहक आणि आकर्षक कांती उपहार,
हाच एकमेव दुष्परीणाम विरहीत होमिओपॅथीचा उपचार.

जगात प्रथमच



केसांच्या संपूर्ण उपचारासाठी

डॉ. सरकार यांची "संशोधनावर आधारीत तेलविरहीत हेअर लोशन **अर्निकाप्लस** आणि पोटात घेण्यासाठी योग्य होमोओ हेअर टॉनिक, **-ट्रायोफर** टॅबलेट्स एक नवीन वेष्टनात."

पॅकींग : ६० मि.ली. आणि १०० मि.ली.

अर्निकाप्लस-ट्रायोफर

ट्रिपल ॲक्शन हेअर व्हायटलायझार

केसांच्या समस्यानिवारण साठी अनुभवलेले आणि प्रमाणित केलेले होमिओ औषध

औषध घेण्याची नियमावली :
वेष्टणात उपलब्ध

लिव्होसिन निर्मिती करणाऱ्या कंपनीच्या
सहयोगी संस्था Allen
यांचे होमिओ उत्पादन

ॲलन लॅबोरेटरीज प्रा. ली.

ॲलन हाऊस, २२४/एच, माणीकतल्ला मेन रोड,
कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०९६

Jupiter, Emars, Allen, allen's india — Dr. Sarkar Group

ॲलोपाथी
होमोओपाथी
आणि आयुर्वेदीक
औषधींचे निर्माते :

त्यांची प्रयत्न वरुण मिळतात आपला आरोग्य आणि विश्वास.

Marketed by :
Allen's India Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. India

C & F AGENTS : H. V. ENTERPRISES MAYO HOSPITAL ROAD, NAGPUR-440018 PH : 720688
SHAMA TRADING CORPORATION JAYA TALKIES BLDG., S. V. ROAD, BORIVLI (WEST) BOMBAY-400 092 TEL : 8054857

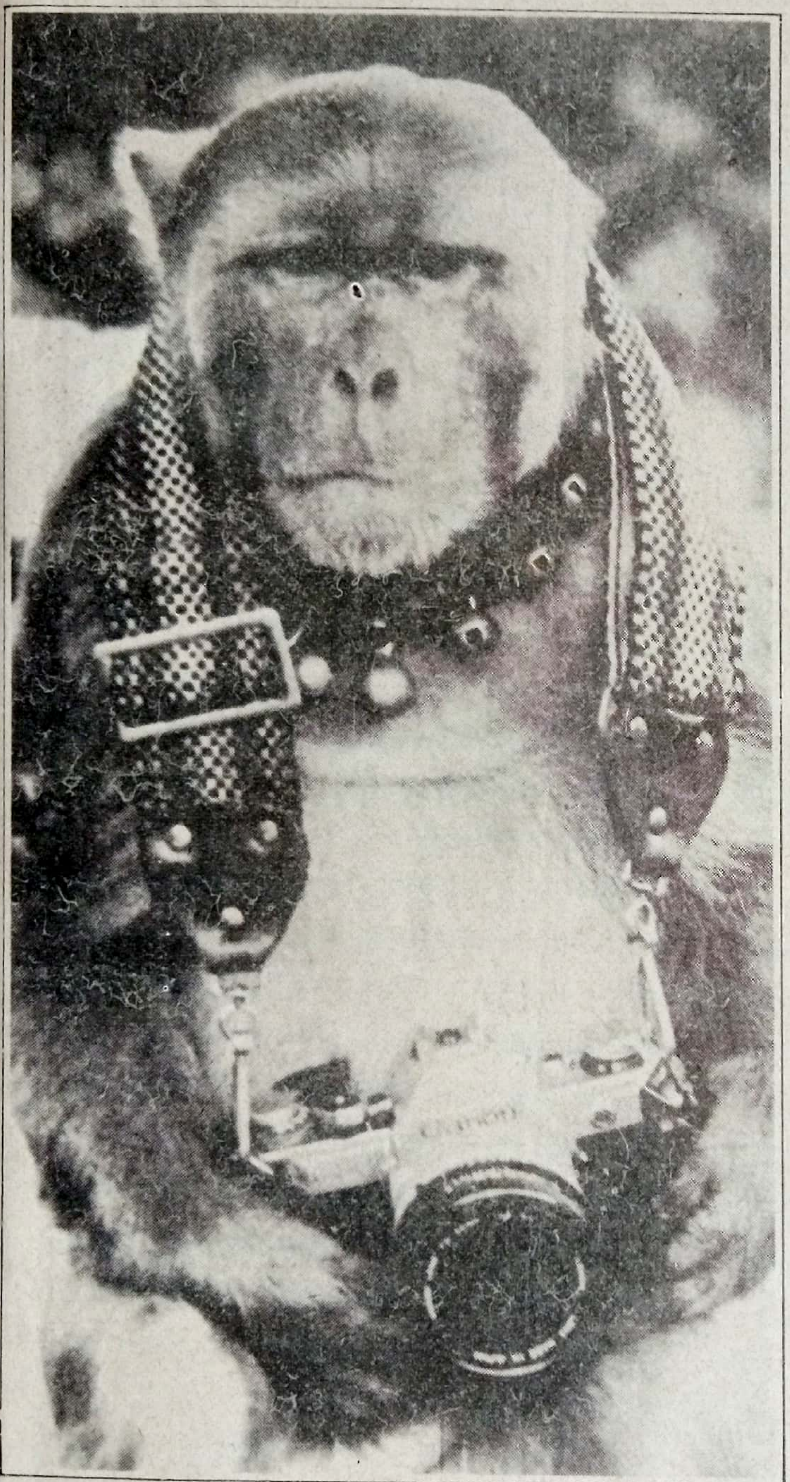
नंदन

जनवरी '९५

वर्ष : ३१ अंक : ३

सम्पादक

जयप्रकाश भारती



आवरण : राजेन्द्रकुमार वधवा एलबम : अशोक वाही

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार

मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील

वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार; चित्रकार : नारायण

कहां क्या है

कहानियां

गिरीश भंडारी	बरगद का दरवाजा	७
सविता चड्ढा	राजा का दंड	९
कविराज ओमप्रकाश	हिली धरती	१२
हरफूल सुईवाल	ठग का बैल	१५
दिलीपकुमार तेत्तरवे	नए वर्ष का उपहार	१७
रेखा कौस्तुभ	पेड़ मत काटो	१८
जेर्जी कोसिंस्की	खोया बेटा	२४
शांता ग्रोवर	सिर पर गदा	२८
डा. ओम्प्रकाश सिंहल	सूरज का नया घर	४१
दिनेश 'दिवाकर'	अदल-बदल	४२
नागेश पांडेय 'संजय'	मुंहमांगा इनाम	४५
मधु भटनागर	बड़ा कौन	४६
मनोज राय	ढम-ढम	४६
जाकिर अली रजनीश	नदी में नथ	५३
स्नेह अग्रवाल	दो कहानियां	५४
संजय सिन्हा	वन की बेटी	५६
सुरेन्द्रकुमार 'महाचन्द्र'	आधा-आधा	५८
जीवराम जोशी	खाली हाथ	५९
कुलदीप तलवार	आ गया तूफान	६४

कविताएं

कृष्ण शलभ, बाबूराम शर्मा विभाकर, कृष्णकांत तैलंग, आनन्द रस्तोगी ३२

इस अंक में विशेष

जसपाल राणा	मैं नंदन पढ़-पढ़कर बड़ा हुआ हूं	१०
उगते सूरज का देश जापान	रंगीन झांकी	२२-२३
डा. राज बुद्धिराजा	जापान में भारत	३०
गाजर का हलुवा	चित्र-कथा	३३-३४
सब कुछ	चित्र-कथा	३५-३६
कैलेंडर १९९५		बीच में
दो अँगूठियां	चित्र-कथा	३७-३९
बृजमोहन गुप्त	अजब-अनोखी दुनिया	६९

स्तम्भ

एलबम ११; आप कितने बुद्धिमान हैं २१; चटपट ४८; तेनालीराम ४९; ज्ञान-पहेली ५७; चीटू-नीटू ६१; पत्र मिला ६३; पुरस्कृत कथाएं ६६; नई पुस्तकें ७०

आओ बात करें

दिल्ली के सम्राट वीरवर पृथ्वीराज चौहान उस दिन सुबह-सवेरे नहाने बैठे, तभी उन्हें लगा कि पानी में अनोखी सुगंध आ रही है। उन्होंने समझा कि नहाने के पानी में कुछ मिलाया गया है।

यह तो एक पहेली बन गई। महल में खलबली मच गई। खोज होने लगी कि पानी में सुगंध कहां से आई ? जो कहार राजमहल में पानी भरते थे, उनके यहां सैनिक दौड़े हुए गए। पता चला कि कहार के पुत्र का हाल ही में ब्याह हुआ था। उसकी नव-वधू का नाम करुणा था। उसी ने नहाने का वह पानी भरा था।

करुणा को वहां लाया गया। लजाती-सकुचाती वह महाराज के सामने आई। उसने महाराज को प्रणाम किया। महाराज बोले—"सौभाग्यवती हो पुत्री, हम यह जानना चाहते हैं कि आज पानी में सुगंध कैसे आ रही है ?"

करुणा बोली—"महाराज, अपराध क्षमा करें। यह जल मेरे पीहर के पास एक कुंड का है। मैं नडायना (नारायणा) की हूं, यहां से चार कोस पर है। इन दिनों उस कुंड में सुगंधित जल ही निकलता है।"

महाराज के मन की उलझन नहीं सुलझी। उन्होंने पूछा—"इसका कोई कारण तो होगा। क्या उस कुंड के आसपास सुगंधित फूलों के पेड़ हैं ? या फिर वहां की मिट्टी में गंध वाला कोई खनिज होगा ?"

करुणा आदर दिखाते हुए बोली—"जी नहीं महाराज, वहां सुगंध वाले पेड़-पौधे नहीं हैं। धरती में भी ऐसा कोई खनिज नहीं, जो सुगंध देता हो। पानी में कोई सुगंध मिलाता हो, ऐसा प्रबंध भी नहीं है।"

राजमहल के कितने ही कर्मचारी वहां थे। उन्हें यह उत्तर अटपटा लगा। महाराज भी इस उत्तर पर यकीन नहीं कर पाए। उन्होंने फिर पूछा—"सुलक्षणे, इतना और बता दो कि उस कुंड में पानी किस स्रोत से आता है ?"

करुणा ने फिर उत्तर दिया—"अन्नदाता, उस कुंड में पानी कहीं से नहीं आता। आप मेरी बात का विश्वास करें—उसके पानी में अपनी ही सुगंध है।"

महाराज पृथ्वीराज ने निश्चय किया कि वह स्वयं जाकर उस कुंड को देखेंगे। महाराज चले तो मंत्री और कई दरबारी भी उनके पीछे-पीछे चल दिए। जल्दी ही वे लोग पहाड़ी के उस एकांत कुंड पर जा पहुंचे।

उस शांत जगह पर एक कुटिया ही थी। महाराज ने वहां तपस्वी कुमार को ध्यान में बैठे देखा। उसे सादर प्रणाम किया और वहीं खड़े रहे। बहुत देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। तपस्वी युवक ने मुसकराते हुए आंखें खोलीं। वह बोला—"हे राजन, मैं जानता हूं कि आप यहां क्यों पधारे हैं ? जल के सुगंधित होने के पीछे कोई बड़ा रहस्य नहीं है। इस सरल-सीधी बात को मैं छिपाना भी नहीं चाहता। जब मैं यहां आया तब इस कुंड का जल सुगंधित नहीं था।"

महाराज उस युवक को एकटक देखे जा रहे थे। लगता था, उसके शब्द कानों में मिश्री घोल रहे हों। युवक ने आगे बताया—"दिल्लीश्वर, यह जल सुगंधित ही नहीं, अमृत जैसा मीठा भी है। आप स्वयं आचमन करके देखें।"

महाराज ने आचमन किया। उनका मुख खिल उठा। मधु की तरह मिठास उस जल में थी। महाराज बोले—"हे देव, लगता है आप साक्षात इंद्र हैं। आप हमें सदुपदेश दीजिए।"

वह ऋषिकुमार बोला—"यहां रहकर मैं अमृत योग की साधना करता हूं। हर प्राणी के कल्याण की कामना करता हूं। सब सुखी रहें, सब एक-दूसरे के हित की सोचें। प्राणों की भरपूर शक्ति समेटकर शुभ इच्छा करता हूं। इस संकल्प से ही जल में सुगंध आ गई है। शुभ सोचने से प्रकृति पर भी प्रभाव पड़ता है।"

पृथ्वीराज का जीवन ही उस दिन से बदल गया। उन्होंने तय किया कि वह शुभ ही सोचेंगे।

नए वर्ष में हम भी सबके लिए शुभ सोचें ! कल्याण की कामना संजोएं।

—तुम्हारे भइया

Scanned with CamScanner



बरगद का दरवाजा

—गिरीश भंडारी

वैशाली के निकट एक बड़ा घना वन था। महाराज शूरसेन उस वन में अक्सर शिकार खेलने आते थे। साथ में रहते थे सैनिक, अंगरक्षक और महामंत्री। राजा महामंत्री का बड़ा आदर करते थे,पर महाराज का गुस्सा प्रसिद्ध था। यदि उनको गुस्सा आ जाता, तो सारी धरती उनके क्रोध से कांप उठती थी। गुस्से के कारण उन्हें बहुत नुकसान भी होता था लेकिन राजा अपने को सुधार नहीं सके।

एक बार, राजा वैशाली वन में शिकार खेलने गए। थककर सब लोग एक झरने के पास बैठकर आराम करने लगे। तभी अचानक एक कौआ कहीं से आया और महाराज के सिर पर बैठ गया। सभी लोग आशंका से कांप उठे । तब के प्रचलित विश्वास के अनुसार, कौआ सिर पर बैठने का मतलब होता था मृत्यु की आशंका।

फौरन यह तय हुआ कि वापस लौटकर अनुष्ठान कराए जाएं। राजगुरु और पंडितों की सलाह ली जाए। इस बात को सुनकर महामंत्री मुसकरा पड़े। वह ज्योतिष जानते थे। उन्होंने गणना कर ली थी कि इस घड़ी में कौआ सिर पर बैठने के कारण कोई नुकसान नहीं होने वाला है, वरन यह सूचना है कि महाराज चक्रवर्ती सम्राट बनेंगे।

पर उनके मुसकराने ने गजब ढा दिया। राजा क्रोधित हो उठे। उन्हें लगा कि इस संकट की घड़ी में महामंत्री उनका उपहास कर रहे हैं। उनकी मृत्यु की कामना कर रहे हैं।

महामंत्री ने निवेदन करना चाहा, पर राजा ने फौरन तलवार खींच ली। अपने अंगरक्षकों को आज्ञा दी कि महामंत्री का सिर धड़ से अलग कर दिया जाए। सब लोगों को काटो तो खून नहीं। महामंत्री का राजा इतना आदर करते थे,उनका ही सिर उड़ाने का आदेश देंगे, वह सोच भी नहीं सकते थे। राजा का क्रोध आसमान पर था। वह गरजे—"आज्ञा का पालन हो...।"

अंगरक्षक राजा के आदेश के अनुसार महामंत्री की ओर झपटे। महामंत्री का स्वामिभक्त घोड़ा शायद इस बात को समझ गया। वह फौरन अंगरक्षकों और महामंत्री के बीच में आ गया। मौका देखकर महामंत्री उस पर सवार हो गए और घोड़ा दौड़ चला। राजा और उनके अंगरक्षक पीछे दौड़े। सामने मैदान दिखाई दे रहा था, वैशाली वन के बीच में पड़ता था।

अंगरक्षक पीछे आ रहे थे। लगता था कि महामंत्री पकड़े जाएंगे।

उन्होंने सामने देखा। एक बहुत विशाल बरगद का पेड़ है। उनको लगा कि इसके पत्तों में छिपकर जान बचाई जा सकती है। उन्होंने पेड़ के पास जाकर उस पर चढ़ने की कोशिश की।

आश्चर्य कि बरगद के विशाल वृक्ष का तना एक फाटक की तरह खुल गया। महामंत्री मय घोड़े के उसमें समा गए। बरगद का पेड़ फिर पहले जैसा हो गया था। अंगरक्षक आए और आगे चले गए। अंदर महामंत्री ने देखा कि एक अलग ही संसार बसा है। वहां राजमहल, धन, भोजन सब मौजूद हैं। सोने हीरों के तो पहाड़ ही हैं।

वास्तव में वह कल्पवृक्ष के पास पहुंच गए थे। उनके मन में जो इच्छा थी—राजा से बचने की, वह पूरी हो गई थी।

कुछ दिनों बाद महामंत्री ने इच्छा की कि अब वह अपनी धरती पर वापस पहुंच जाएं। वह वापस आ गए। उन्होंने उस जगह और पेड़ को अच्छी तरह से याद कर लिया।

राजा का क्रोध उन्हें मालूम ही था। उन्होंने वेश बदला और दूसरे राज्य में व्यापार करने लगे। कई वर्ष बीत गए। वह एक धनी व्यापारी बन गए।

धन के लालच ने उनके व्यवहार को बदल दिया। उनके मन में आया कि धन को दुगुना कर लिया जाए। दुगुना होते ही लालच आया कि इसे तिगुना क्यों न कर लूं! उनका पूरा ध्यान धन पर केंद्रित हो गया।



एक दिन अचानक उन्हें उस बरगद के वृक्ष का खयाल आया। सोचने लगे—'अरे, मैं तो बड़ी भूल कर रहा हूं। उस बरगद के वृक्ष के अंदर तो सोने और हीरे के पहाड़ थे। सोना, चांदी भी बेहिसाब था।

उन्होंने निश्चय किया कि वह अकेले जाएंगे और सारा धन प्राप्त कर लेंगे।

घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते, वह वैशाली के जंगल में घुसे। वन के अंदर कई कोस चलने के बाद वह मैदान आ गया।

उन्होंने चारों तरफ नजर दौड़ाई। अचानक उन्हें लगा कि वह वृक्ष दिखाई दे रहा है। वह खुश हो उस वृक्ष की तरफ दौड़ पड़े।

पहले की तरह वृक्ष का तना खुला। वह भीतर गए। उनको तसल्ली हुई कि सारा धन पहले जैसा ही रखा है, बल्कि पहले से भी ज्यादा बढ़ गया है। इतना धन था कि कुबेर के पास भी क्या होगा। वह सोचने लगे कि बाहर निकलकर सौ बैलगाड़ियों में भरकर धन अपने भवन में ले जाऊंगा। वह जितने हीरे-जवाहरात भर सकते थे, अपने थैले में भर लिए। फिर तने के पास आकर बाहर निकलने का यत्न करने लगे। पिछली दफा जैसे ही उन्होंने निकलने की इच्छा की थी तना द्वार की तरह खुल गया था। वह बाहर निकल आए थे। पर इस बार तो कोई असर ही नहीं हुआ। वह रोए, चिल्लाए पर सब व्यर्थ। कोई फायदा न हुआ।

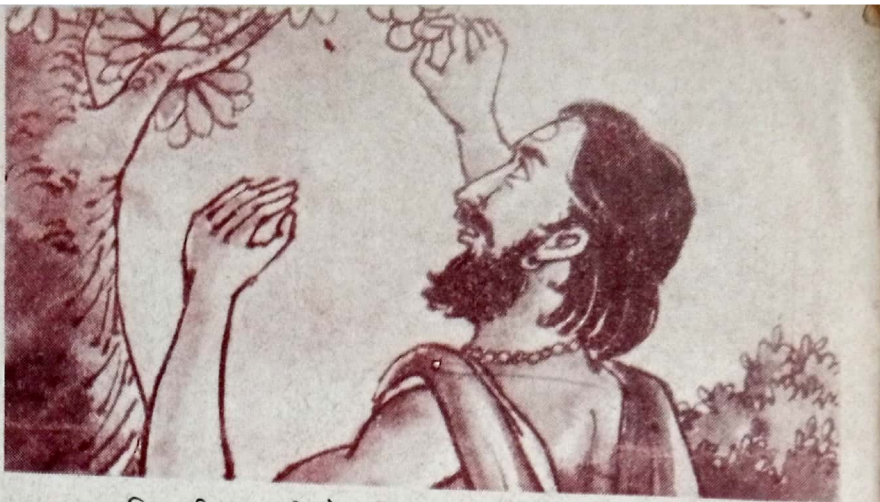
अंत में बरगद से आवाज आई—"यह कल्पवृक्ष है। यहां अक्षय धन है। यहीं रहो और सारे धन को ले लो। पिछली बार तुम संकट में यहां आए थे। इस बार लालच में आए हो। यह सारा धन तुम्हारा है पर तुम अब अपने घर नहीं लौट सकते। तुम धन के दास बन गए हो।"

महामंत्री वहां बंद होकर उस धन का क्या करते?

कहते हैं वैशाली के पास अभी भी उस वन में वह कल्पवृक्ष है। बहुत-से लोग अब भी उसकी तलाश में हैं।

राजा का दंड

—सविता चड्ढा



युद्ध जीतने के पश्चात पांडवों के बड़े भाई युधिष्ठिर का मन अशांत था। वह बार-बार संन्यास के लिए आग्रह कर रहे थे। अनेक ऋषि, मुनि, दार्शनिक, विचारक एवं उनके सगे-संबंधी उन्हें प्रेरित करते कि वह राजा बनकर राज करें। दूसरी और युद्ध में हुए नरसंहार के लिए वह स्वयं को भी दोषी मान रहे थे। उसी समय महर्षि व्यास ने उन्हें यह कथा सुनाई।

शंख और लिखित नाम से दो भाई थे। दोनों भाई कठोर व्रत का पालन करने वाले तपस्वी थे। उनके अलग-अलग आश्रम थे,जो फलों से लदे वृक्षों से सुशोभित थे। एक दिन लिखित अपने भाई शंख के आश्रम में आए। उस समय शंख अपने आश्रम में नहीं थे। लिखित ने वहां के वृक्षों से पके हुए फल गिराए और आराम से उन्हें खाने लगे। वह फल खा ही रहे थे कि ब्रह्मर्षि शंख आश्रम में लौट आए। उन्होंने लिखित से पूछा—"ये फल तुमने कहां से लिए ?"

लिखित ने उठकर बड़े भाई को प्रणाम किया और कहा—"ये फल मैंने यहीं से लिए हैं।"

शंख ने कहा—"मुझसे बिना पूछे तुमने ये फल खाए हैं। अतः यह चोरी है। तुम राजा के पास जाकर इस अपराध के लिए दंड की मांग करो।"

बड़े भाई का आदेश पाकर लिखित, राजा सुद्युम्न के पास गए। जब राजा सुद्युम्न ने सुना कि ब्रह्मर्षि लिखित आए हैं, तो वह अपनी सेना सहित उनके स्वागत के लिए नगर द्वार तक आए। निवेदन किया—"आप जिस भी उद्देश्य से यहां आए हैं, वह पूरा होगा। । कृपया अपने आगमन का कारण कहिए।"

ब्रह्मर्षि लिखित ने कहा—"हे राजन, मैंने अपने बड़े भाई के आश्रम से फल लेकर खा लिए हैं। मुझे शीघ्र दंड दीजिए।"

राजा ने कहा—"यदि आप राजा को ही दंड देने का अधिकारी समझते हैं, तो हम आपको क्षमा कर, लौट जाने की आज्ञा देते हैं।"

ब्रह्मर्षि ने क्षमादान नहीं स्वीकारा और बार-बार दंड की इच्छा प्रकट की। आखिर राजा सुद्युम्न ने दंडस्वरूप उनके दोनों हाथ काट देने की सजा सुनाई। लिखित के दोनों हाथ कटवा दिए गए। दंड पाकर लिखित अपने बड़े भाई के आश्रम में गए और कहा—"भइया,मैंने दंड पा लिया है, अब आप मुझे क्षमा करें।"

शंख ने तब अपने भाई लिखित को बाहुदा नदी पर जाकर विधि पूर्वक तप करने को कहा। भविष्य में कभी बुरे और अधर्म के काम की ओर मन न लगाने की सलाह भी दी। लिखित ने बाहुदा नदी के पास जाकर पवित्र मन से उसमें स्नान किया। तभी उनके दोनों हाथ प्रकट हो गए। लिखित ने अपने बड़े भाई को अपने हाथ दिखाए तो उन्होंने कहा—"मैंने अपनी तपस्या से तुम्हारे दोनों हाथ उत्पन्न किए हैं।"

लिखित ने कहा—"यदि आप तपस्या से हाथ उत्पन्न कर सकते थे, तो पहले ही मुझे चोरी के पाप से मुक्त क्यों नहीं कर दिया ?" इस पर शंख ने कहा—"मुझे तुम्हें दंड देने का अधिकार नहीं, क्योंकि दंड देने का अधिकार केवल राजा को है। भूल हो जाने पर दंड भोगना ही चाहिए। दंड पाकर तुम अब पवित्र हो गए हो।"

यह कथा सुनाकर व्यास जी ने युधिष्ठिर से कहा—"अपने कर्म से यदि तुम विमुख होगे तो यह धर्म नहीं है। राजा को प्रजा पालन का कर्तव्य करना ही है। दंड देकर भी वह प्रजा का रक्षक ही होता है। राजा सुद्युम्न ने लिखित को दंड देकर उच्चतम पदवी प्राप्त की थी।"

मैं नंदन पढ़-पढ़कर बड़ा हुआ हूं

—जसपाल राणा

दो साल पहले की बात है। मुंगेर में निशानेबाजी की एक प्रतियोगिता हुई। प्रथम तीन स्थान जिन्हें मिले, उनमें एक पिता था और दो उसके बेटे। पिता का नाम है नारायण सिंह राणा, उसका बड़ा बेटा जसपाल राणा और छोटा सुभाष राणा। मेरी उम्र उस समय १६ साल की थी। तब तक मेरा नाम कोई नहीं जानता था।

उन दिनों मेरे पिता जी भारत-तिब्बत सीमा पुलिस में थे। उन्होंने अपने किराए के फ्लैट में ही दस मीटर का एक शूटिंग रेंज बनवाया। इसी के साथ शुरू हो गया निशानेबाजी का यह अटूट सिलसिला।

जहां विश्वास होता है, वहां सफलता अवश्य मिलती है। बचपन में मैं सभी खेल खेलता— क्रिकेट, फुटबाल, कभी फोटोग्राफी और कभी कार चलाने की धुन सवार हो जाती। फिर सोचता कि परिवार तो निशानेबाजी का है। क्यों न पिता को ही अपना गुरु मान लूं और कोशिश करूं। बस उसी समय से पिता को अपना गुरु और निशानेबाजी को अपना गोविंद मान लिया। मेरे दोनों भाई अंतर्राष्ट्रीय स्तर के, बहन और मां राष्ट्रीय स्तर की निशानेबाज हैं।

१९९३ में सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी चैंपियनशिप में मैंने सेंटर फायर पिस्टल में व्यक्तिगत रजत पदक जीता। इसी वर्ष ढाका के दक्षेस खेलों में एक रजत और एक कांस्य पदक मुझे मिला।

२३ जुलाई १९९४ में इटली के मिलान शहर में विश्व निशानेबाजी की जूनियर स्पर्धा में स्वर्ण जीता और विश्व जूनियर चैंपियन के रूप में पहले भारतीय होने का गौरव प्राप्त किया। कुछ दिनों बाद कनाडा के विक्टोरिया शहर में मैंने दो स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य जीतकर तहलका मचा दिया।

मैं नंदन को पढ़-पढ़कर ही तो इतना बड़ा हुआ हूं। सफलता के इस शिखर तक पहुंचा हूं। नाम है, इनाम है, शिक्षा है और नौकरी है। खान से कोयला भी निकलता है और हीरा भी। पिता आज भी कहते हैं— "तुम्हें आगे और आगे जाना है। अभ्यास में एक दिन का भी नागा नहीं होगा।"

सेंट स्टीफन कालेज में द्वितीय वर्ष का छात्र हूं। जे.सी.टी. ने दस हजार रुपए का मासिक वेतन देना शुरू कर दिया है। मालवीय नगर में रहने को किराए की कोठी दी है। आने-जाने के लिए कार भी है। लेकिन यह सब कड़ी मेहनत का फल है। पहले इस खेल में राजा कर्णीसिंह, रणधीर सिंह का नाम लिया जाता था, आज मेरा भी लिया जाता है। यह अपने आप में क्या कम खुशी की बात है?

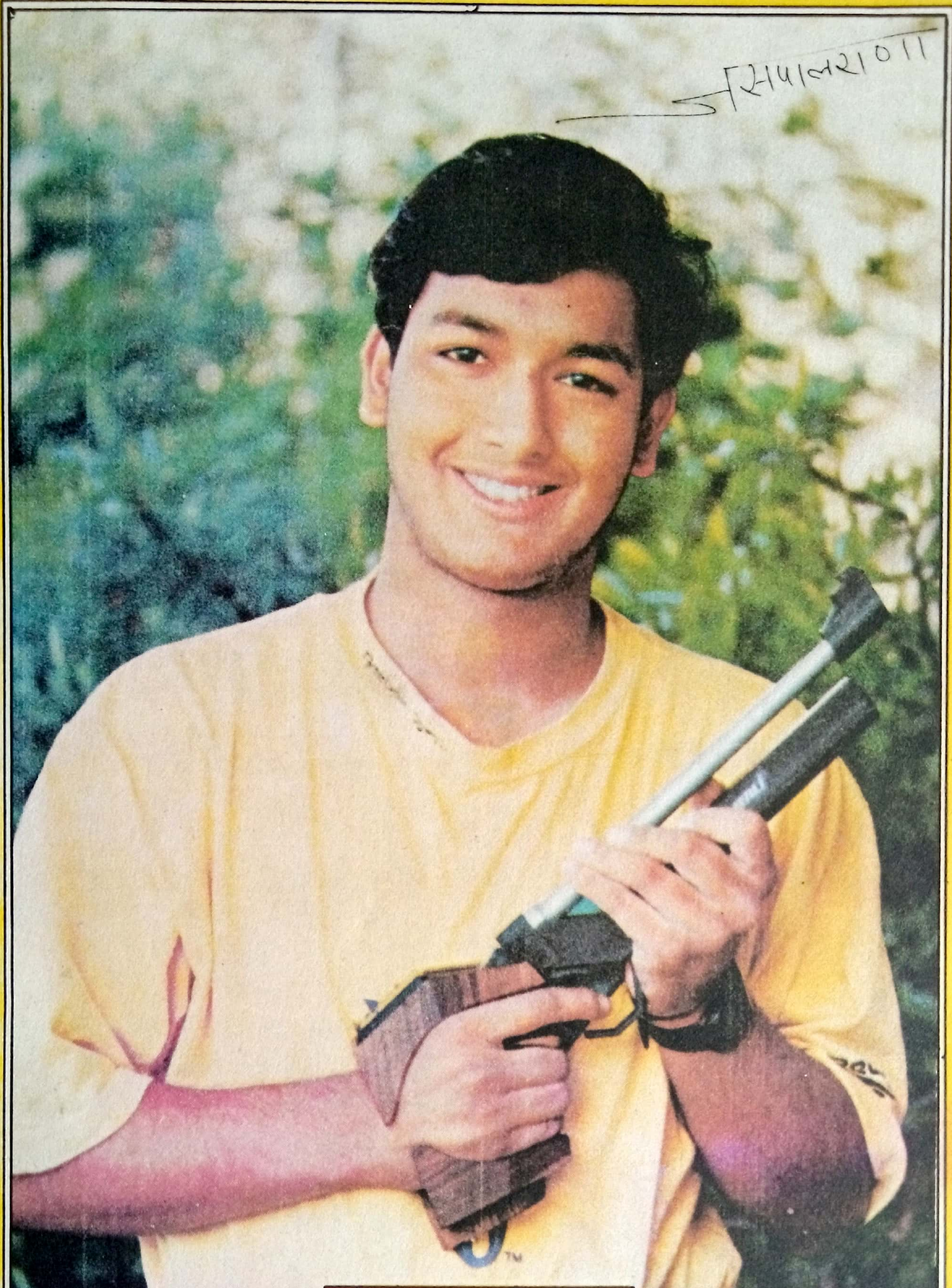
सन १९८७ में दिल्ली राज्य निशानेबाजी चैंपियनशिप में रजत पदक लेने के बाद मेरा कैरियर शुरू हुआ। १९८९ में आयोजित राष्ट्रीय चैंपियनशिप में मैंने उन पांचों स्पर्धाओं में स्वर्ण जीते थे, जिनमें मैंने भाग लिया था। तभी जे.सी.टी. के कार्यकारी निदेशक समीर थापर की निगाह मुझ पर पड़ गई। उनके प्रोत्साहन ने मेरे रास्ते की सारी बाधाएं दूर कर दीं।

हिरोशिमा में सम्पन्न १२वें एशियाई खेलों में सेंटर फायर पिस्टल में स्वर्ण पदक जीतने के बाद अभी से अगली तैयारी में जुट गया हूं। हौसले बुलंद हों तो समय और दुर्भाग्य कुछ नहीं बिगाड़ सकते। किसी भी क्षेत्र में (शिक्षा हो या खेल का मैदान) सफलता प्राप्त करने का कोई छोटा रास्ता नहीं होता। आज देश के चोटी के खिलाड़ियों ने 'पढ़ोगे-लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे तो बनोगे खराब' इस उक्ति को न केवल झुठला दिया है बल्कि इसे उलट भी दिया है। शिक्षा और शारीरिक शिक्षा बस एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

जब भी मैं मैदान में जाता हूं तब मेरे पिता धीरे-से मेरे कान में कह देते हैं—

कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों।

प्रस्तुत— योगराज थानी



जसपाल राणा

एशियाई खेल : निशानेबाजी में स्वर्ण पदक



हिली धरती

—कविराज ओमप्रकाश

चंदनदास संगीतकार थे। एक छोटी-सी रियासत कीरतपुर में रहते थे, पर उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई थी। कीरतपुर के राजा ने चंदनदास को रहने के लिए बड़ी हवेली दे रखी थी। चंदनदास ने उसी में संगीत विद्यालय भी खोल लिया था।

चंदनदास सारा दिन शिष्यों को गायन-वादन सिखाने में लगे रहते। जब राजा बुलाते तो दरबार में जा पहुंचते। शेष सारा समय संगीत की साधना में बीतता। रहन-सहन साधारण था। उन्होंने अपना जीवन संगीत को समर्पित कर दिया था।

एक दिन की बात, बरसात का मौसम था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। हवेली के बड़े कक्ष में चंदनदास अपने तीन शिष्यों के साथ बैठे थे। चंदनदास और उनके तीनों शिष्य तन्मय होकर गा रहे थे। एकाएक चंदनदास का ध्यान भंग हुआ। उन्हें

लगा, जैसे किसी ने जोर से धक्का दिया हो। नेत्र खोलकर सामने देखा, तो दीवार हिलती नजर आई। फिर तो पूरा कक्ष डोल उठा। जमीन थरथराने लगी। अजीब डरावनी आवाज उठ रही थी।

"बाहर भागो, भूकम्प!"— चंदनदास बस इतना ही कह सके। तभी कक्ष का फर्श फट गया, दीवारें झुक गईं। छत से पत्थर गिरने लगे। सब तरफ धूल ही धूल छा गई। कीरतपुर तथा आस-पास के क्षेत्र में भूकम्प आया था। अनेक भवन गिर गए थे। अनेक लोग घायल हुए थे। चंदनदास की हवेली पूरी तरह ढह गई थी। चंदनदास तथा उनके तीनों शिष्य हवेली के मलबे में दब गए थे।

किसी ने राजा को खबर दी, तो वह स्वयं चंदनदास की हवेली पर पहुंचे। शानदार हवेली एक डरावने खंडहर में बदल गई थी।

राजा का आदेश था, चंदनदास की हवेली का मलबा हटाने का काम तेजी से शुरू हुआ। तभी धरती फिर डोल उठी। भूकंप का एक नया झटका कीरतपुर को हिला गया। फिर तेज बारिश शुरू हो गई। कीरतपुर की जनता बुरी तरह डर गई। बहुत सारे लोग तो पहले ही नगर छोड़कर चले गए थे। दूसरे भूकंप के बाद बचे-खुचे लोग भी भागने लगे। मलबे में दबे चंदनदास को होश आया, तो वह टटोलते हुए उठने लगे। सब तरफ घुप्प अंधेरा था। वह एक-एक करके शिष्यों को पुकारने लगे—"अजय, दीपक, राजसिंह, कहां हो तुम?"

कुछ पल सन्नाटा रहा, फिर उन्हें सुनाई दिया—"गुरुदेव, हम तीनों जीवित हैं। अंधेरे के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। खड़े होने का प्रयास करते हैं, तो सिर पत्थरों से टकराता है।"

"ईश्वर को धन्यवाद है।" —चंदनदास ने प्रसन्न स्वर में कहा—"हम लोग मलबे के नीचे दबे हुए हैं। घबराना मत, शायद मलबा हटाया जा रहा होगा। हम जल्दी ही बाहर आ जाएंगे।"

तभी उनके शिष्य अजय की आवाज आई—"गुरुदेव, दीपक की तबीयत खराब हो रही है। वह बोल नहीं रहा है। जोर-जोर से सांस ले रहा है।"

चंदनदास मन ही मन प्रार्थना करने लगे— 'ईश्वर, मेरे शिष्य की रक्षा करो। बचा लो उसे। चाहे मेरे प्राण ले लो।' एकाएक थोड़ी दूर पर एक चमक दिखाई दी, जो तेज होती जा रही थी। चंदनदास उसी तरफ टकटकी लगाए देखते रहे। उन्होंने देखा कि वे चारों मलबे के नीचे फंसे हैं, सामने ही दीपक बेहोश पड़ा दिखाई दिया।

"यह प्रकाश कैसा है?" —चंदनदास के होंठों से निकला। फिर उन्हें कहीं से पानी की टप-टप सुनाई दी।

तभी एक आवाज आई— "चंदनदास, तुम्हारा शिष्य घबराहट के कारण बेहोश हो गया है। लेकिन तुम मत घबराना। पानी की जो बूंद टपक रही हैं, उन्हें इसके मुंह में डाल दो।"

"लेकिन आप हैं कौन? यह प्रकाश कैसा है?" —चंदनदास ने डरे स्वर में पूछा।

—"पहले अपने शिष्य के प्राण बचाओ। बाकी सब बाद में पूछना।"

चंदनदास ने देखा, जहां से प्रकाश आ रहा था, वहीं से पानी की बूंदें टपक रही थीं। अब अधिक सोच-विचार का समय नहीं था। चंदनदास ने बूंदों के नीचे अपनी हथेली फैला दी। कुछ पानी इकट्ठा हुआ तो उसे दीपक के मुंह में डाल दिया। ऐसा उन्होंने कई बार किया। यह करते हुए वह लगातार सोच रहे थे— 'यह प्रकाश कहां से आ रहा है? और ये पानी की बूंदें... कहीं कुछ गड़बड़ न हो।'

पर ज्यादा सोचना नहीं पड़ा। कुछ पल बाद दीपक का शरीर कांपा और उसने आंखें खोल दीं। चंदनदास की आंखों से आंसू बहने लगे। उनके कांपते होंठों से निकला— "आप कौन हैं? आपने दीपक के प्राण बचाए हैं। कृपा करके अब तो बताइए?"

कुछ देर के मौन के बाद फिर आवाज आई—"अभी उसका समय नहीं आया है। ईश्वर का भजन करो, उसे धन्यवाद दो। इतना ही बहुत है।"



चंदनदास ने फिर कुछ नहीं पूछा। उन्होंने शिष्यों को इशारा किया और भजन गाने लगे। तीनों शिष्यों ने भी उनका साथ दिया। धरती के अंदर उनका स्वर गूंजने लगा। चारों तन्मय होकर भजन गाते रहे।

ऊपर बारिश थम गई थी। गिरी इमारतों का मलबा हटाने का काम शुरू कर दिया गया था। हवेली का मलबा हटाते मजदूरों के कानों से गाने की आवाज टकराईं, तो वे चौंक उठे। 'शायद नीचे कुछ लोग अभी जिंदा हैं।' —उन्होंने आपस में कहा। और मलबा तेजी से हटाने लगे। गाने की आवाज अब और भी तेज हो गई थी।

कुछ देर बाद चंदनदास और उनके तीनों शिष्य सही-सलामत बाहर निकाल लिए गए। चंदनदास ने देखा, सूरज डूब रहा था। दूर-दूर तक टूटी-फूटी इमारतें नजर आ रही थीं। यह दृश्य देखकर चंदनदास का मन कांप गया। वह सिर थाम कर वहीं बैठ गए। तब तक राजा को भी चंदनदास के जीवित होने का समाचार मिल गया था। उन्होंने उन्हें बुलाने के लिए सैनिक भेज दिए।

सैनिक आए तो चंदनदास ने कहलवा दिया— "अभी नहीं, बाद में आऊंगा।" वह अपने शिष्यों के साथ वहीं खुले में बैठकर भजन गाने लगे। उसी तरह जैसे जमीन के नीचे गा रहे थे। मन ही मन दोहरा रहे थे— 'हम लोगों की जीवन रक्षा करने वाले आप कौन हैं? मैं आपके दर्शन करना चाहता हूं।'

अंधेरा हो गया, बारिश फिर होने लगी। आस-पास खड़े लोग एक-एक करके चले गए, पर चंदनदास अपनी जगह से न हिले। वह मन ही मन प्रार्थना दोहरा रहे थे।

एकाएक अंधेरे में प्रकाश फूटा। हवेली का खंडहर जगमगा उठा। आवाज़ आई— "चंदनदास, मैं मणिधर सर्प हूं। तुम्हारी हवेली के नीचे एक हजार वर्षों से रह रहा हूं। अगर भूकंप न आता, तो शायद तुम लोग मेरे निकट कभी न आ पाते। मुझे देखने की जिद न करो। लो, मैं तुम्हें अमूल्य हीरे-मोती देता हूं। हवेली के नीचे धरती में अकूत धन गड़ा हुआ है।"

इसके बाद उस प्रकाश में अनेक रंग के हीरे-मोती उछलते दिखाई दिए। चंदनदास अपने स्थान पर अचल बैठे रहे। उन्होंने कहा— "मुझे सबसे अमूल्य रत्न आप से मिल गया है। मेरे और तीनों शिष्यों के प्राण आपने बचाए हैं। अब और कुछ नहीं चाहिए मुझे। मैं आपको धन्यवाद देता हूं।" कहकर उन्होंने हाथ जोड़कर आंखें मूंद लीं।

अजय, दीपक और राजसिंह भी उस अद्भुत प्रकाश में उछलते हीरे-मोती देख रहे थे। दीपक ने अजय से कहा— "चुप रहो। गुरु जी को चाहे धन की आवश्यकता न हो, पर हमें है। आओ, हम अंदर चलकर खजाना निकाल लें।" और फिर दीपक उस गड्ढे में कूद पड़ा, जहां से कुछ देर पहले वह बाहर आया था।

एकाएक जोर से गड़गड़ाहट हुई। धरती कांप उठी। भूकम्प ने तीसरी बार झटका दिया था कीरतपुर को। धरती फट गई। चंदनदास डरी-डरी आंखों से देखते रह गए। उनके दोनों शिष्य मूर्तिवत खड़े थे। दीपक के गड्ढे में गिरते ही फटी हुई धरती जुड़ गई थी।

"दीपक, यह तूने क्या किया!"— चंदनदास के होंठों से निकला, लेकिन अब कुछ शेष नहीं था। विचित्र प्रकाश, उछलते हुए हीरे-मोती एक साथ गायब हो गए थे। ●

ठग का बैल

—हरफूल सुईवाल

बीरमा किसान टोडसर गांव का रहने वाला था । वह अव्वल दर्जे का चालाक आदमी था । चोरी करना और दूसरों को ठगना उसकी खास आदत थी ।

उसके पास बैलों की एक जोड़ी थी । उसमें एक जवान और दूसरा बूढ़ा था । एक दिन बूढ़ा बैल मर गया । बीरमा ने सोचा कि अब अकेला बैल उसके लिए फालतू है । दूसरा बैल लाकर फिर बैलों की जोड़ी बना लेनी चाहिए, या फिर अकेले बैल को भी बेच देना चाहिए ।

बेईमान बीरमा सोचने लगा कि यदि वह बैल खरीदेगा तो रुपए खर्च होंगे । वह रुपए खर्च करना चाहता नहीं था । आखिर किसी को ठगकर या बैल चुराकर ले आने की बात उसने मन में ठान ली ।

अगले दिन सवेरे ही वह अपना बैल खोलकर घर से निकल पड़ा । उसने मन ही मन यह बात अच्छी तरह सोच ली थी कि वह मुफ़्त में ही दूसरा बैल लेकर घर लौटेगा, नहीं तो इस बैल को भी ऊंची कीमत पर बेच आएगा । दिन भर चलने के बाद बीरमा शाम को आठ-दस कोस दूर सुजानपुर गांव पहुंच गया । गांव के बाहर खेतों में लहलहाती फसल देखकर उसने सोचा— 'जरूर इस गांव के किसान खूब धनी हैं ।'

बीरमा ने गांव के बाहर एक किसान का घर देखा । एक ओर एक बैल भी बंधा था । एक ही नजर में बीरमा को वह बैल पसंद आ गया । 'यदि इस बैल को मैं हथिया लूं, तो मेरी बैलों की जोड़ी खूब जोरदार बन जाएगी ।'—बीरमा ने मन ही मन सोच लिया ।

अगले ही क्षण वह बैल के साथ घर में घुस गया । सामने ही घर का मालिक देवदत्त बैठा मिला । बीरमा ने कहा— "बड़ी दूर से चलकर आ रहा हूं भैया ! मैं और मेरा बैल दोनों थक गए हैं । रात भर के लिए टिकने की जगह मिल जाएगी ?"

"क्यों नहीं, खूब आराम से रहो । अभी रोटियां बन जाती हैं । तब तक अपने बैल को उस खूंटे से बांध दो । पास ही घास पड़ी है । उसे खाने को डाल दो ।"— देवदत्त ने आव-भगत करते हुए कहा ।

उसकी बात सुन, बीरमा ने सोचा— 'यह आदमी तो खूब भोला और दयालु लगता है । ऐसे आदमी को ठग लेना तो बहुत आसान बात है ।'

जब वे दोनों भोजन कर चुके, तो देवदत्त ने एक कमरे में बीरमा का बिस्तर लगा दिया, खुद दूसरे कमरे में सो गया । बीरमा जिस कमरे में सो रहा था, उसमें एक बड़ा-सा संदूक पड़ा था । उस संदूक में देवदत्त का धन होने की बात सोच-सोचकर बीरमा को नींद नहीं आ रही थी ।

आधी रात को बीरमा उठा और संदूक खोलने के लिए उसका ताला तोड़ने लगा । देर हो गई, बीरमा से संदूक का ताला नहीं टूटा । अभी वह बैठा-बैठा कोई और उपाय सोच रहा था, तभी उसने देवदत्त की आवाज सुनी । देवदत्त अपनी पत्नी से कह रहा था— "इतनी रात हो गई और तुम अभी तक जाग रही हो ! मैं तो एक नींद सो भी चुका ।"







देवदत्त की पत्नी ने कहा— ''नींद तो तब आए, जब मन में चिंता न हो। कितनी बार कह चुकी हूं कि जल्दी ही दूसरा बैल खरीद लो। पर आप मेरी मानते ही नहीं।''

''सोच रहा हूं कि कल ही किसी से रुपए उधार लेकर परसों तक दूसरा बैल खरीद लाऊं।'' — देवदत्त ने जवाब दिया।

बीरमा कान लगाए सुन रहा था।

उसकी बात पर पत्नी नाराज होकर बोली— ''मेरे बार-बार मना करने पर भी पहले तो अपना बैल उधार में बेच दिया, अब नया बैल खरीदने के लिए दूसरे से उधार मांगोगे। मैं तो कहती हूं कि तुम्हें अब इस गांव में कोई एक भी रुपया उधार देने वाला नहीं। आज तक जिस-जिस से भी उधार लिया है, कभी उसको वापस भी लौटा सके हो ? मेरी बात मानो और सुबह ही मेरे गहने बेचकर नया बैल खरीद लाओ।''

देवदत्त नाराज होकर बोला— ''तुम भी खूब हो। उधार के रुपए तो जैसे-तैसे चुका देंगे, पर दुबारा गहने बनवाना मुश्किल होगा।''

पति-पत्नी में चख-चख होती रही। देवदत्त की पत्नी बार-बार कहे जा रही थी— ''उधार के रुपयों से लाए बैल को मैं इस घर में घुसने तक नहीं दूंगी। हां, नए बैल के बदले गहने देने को तैयार हूं।''

देवदत्त बोला— ''तो ठीक है। तुम भी कान खोलकर सुन लो। मैं अपनी जिद का पक्का हूं। अब नया बैल भी तुम खरीदना अपने गहनों से। मैं इस उलझन में नहीं पड़ूंगा।''

''हां, हां..., मैं ले आऊंगी बैल। जब अपने गहने दूंगी, तो कोई भी अपना बैल खुशी-खुशी इस घर में बांध जाएगा।''— देवदत्त की पत्नी बोली।

बीरमा अब तक दोनों की बातें सुनकर मन ही मन मुसकरा रहा था। वह सोचने लगा— 'लगता है, दोनों पति-पत्नी मूर्ख ही नहीं, बल्कि महामूर्ख हैं। मुझे इनकी मूर्खता का फायदा जरूर उठाना चाहिए।'

सुबह मुंह अंधेरे देवदत्त पत्नी से नाराज होकर कहीं चला गया। बीरमा ने अच्छा मौका देखा और देवदत्त की पत्नी से बात बनाकर बोला— ''मुझे अपना बैल बेचना है। इस गांव में किसी को बैल की जरूरत हो, तो मुझे बता दो। मेरे लिए यह बैल फालतू है।''

वह बोली— ''बैल तो मैं ले लूंगी। पर मेरे पास रुपए नहीं हैं। चाहो तो मेरे गहने ले सकते हो।''

बीरमा हंसकर बोला— ''कोई बात नहीं! मैं तैयार हूं।''

उसी क्षण वह अंदर गई और गहनों की पोटली ले आई। उसे थमाकर बोली— ''देख लो, इसमें मेरे गहने बंधे हैं। चाहो तो बैल का सौदा कर लो।''

पोटली के गहने देख, बीरमा खुश हो उठा। उसने सोचा— 'इन गहनों से तो बैलों की जोड़ी खरीद लूंगा।' उसी समय उसने पोटली संभाल ली और बैल छोड़कर गांव की राह चल पड़ा।

शाम तक वह अपने गांव पहुंच गया। दूसरे दिन गांव के साहूकार के पास गहने बेचने जा पहुंचा। गहनों को देख-परखकर साहूकार बोला— ''अरे भाई, इन गहनों की कीमत तो कुछ भी नहीं। ये तो नकली गहने हैं, सोने-चांदी के नहीं।''

बीरमा ठगा-सा खड़ा रह गया। देवदत्त और उसकी पत्नी ने उससे बैल ठग लिया था। उसने अब जाना कि वे दोनों मूर्ख नहीं, बल्कि उससे कहीं ज्यादा चालाक थे। वह पछताकर रह गया। ●

नए वर्ष का उपहार

—दिलीपकुमार तेतरवे

एलिजा को नए वर्ष के निकट आने की खुशी थी और चिंता भी । वह अपने भाई अंथोनी को एक अच्छा सा उपहार देना चाहती थी । उपहार खरीदने के लिए पैसे की जरूरत थी, जो एलिजा के पास नहीं थे ।

एलिजा ने रंग और कूची उठाई और सुंदर चित्र बनाया । बड़ी-सी तसवीर बना डाली । चित्र में दूर तक हरियाली, नदी और पहाड़ नजर आते थे । चित्र देखकर कोई भी उसे पसंद किए बिना नहीं रह सकता था । एलिजा को लगा कि इस तसवीर को उसे अपने पास रखना चाहिए । लेकिन उसे अंथोनी के लिए उपहार खरीदना था । वह उस चित्र को लेकर एक दुकान पर गई । दुकानदार को चित्र बहुत पसंद आया । उसने तुरंत उसे खरीद लिया । चित्र बेचकर जो पैसे मिले, उससे उसने एक कीमती कलम खरीदी । लौटते हुए एलिजा बहुत खुश थी । उसके पास, अपने प्यारे भाई अंथोनी के लिए एक अच्छा उपहार था ।

उधर अंथोनी भी परेशान था । वह भी एलिजा को नव वर्ष पर उपहार देना चाहता था । वह उसे कोई ऐसी चीज देना चाहता था, जो उसे सच्चा आनंद दे और उसके लिए एक यादगार बन जाए । अंथोनी ने तय किया—'पहले कुछ पैसे इकट्ठे कर लूं, फिर उपहार के बारे में सोचूंगा ।'

अंथोनी सुबह-सुबह घर से निकल जाता और गली-गली घूमकर अखबार बेचता । उसके पास जब दो सौ रुपए जमा हो गए, तो वह एक दुकान पर पहुंचा । दुकान में एक से एक महंगे उपहार सजे थे । उसने एक नजर पूरी दुकान पर डाली । उसकी नजर एक चित्र पर जा टिकी । उसे देखते ही मन-ही-मन बोल उठा—'कितना सुंदर चित्र है । ऐसा लगता है जैसे सचमुच के पेड़, पहाड़ और नदी हैं । इसे पाकर एलिजा सचमुच प्रसन्न होगी । मैं उसे यही चित्र उपहार में दूंगा ।'

अंथोनी ने दुकानदार से पूछा—''इस चित्र की क्या कीमत है ?''

''चार सौ रुपए ।''—दुकानदार बोला ।

अंथोनी के पास मात्र दो सौ रुपए थे । उसने सोचा—'नया साल आने में अभी चार दिन बाकी हैं । अगर चार दिनों में मैं और दो सौ रुपए की व्यवस्था कर भी लूं, तो भी जरूरी नहीं कि मुझे यह चित्र मिल ही जाए । हो सकता है कि इस बीच कोई और इसे खरीद ले ।'

अंथोनी ने दुकानदार से कहा—''अंकल, यह चित्र मैं खरीदना चाहता हूं । इसकी कीमत चार सौ रुपए है । लेकिन अभी मेरे पास मात्र दो सौ रुपए हैं । आप इन रुपयों को बतौर पेशगी रख लें । मैं नए साल



से पहले दो सौ रुपए और देकर इसे खरीद ले जाऊंगा ।''

दुकानदार विल्सन बड़ा नेक आदमी था । उसने अंथोनी का अनुरोध स्वीकार कर लिया । उसनें अंथोनी से दो सौ रुपए लेने के बाद, उस चित्र पर एक कागज चिपका दिया, जिस पर लिखा था—''चित्र बिक चुका है ।''

अंथोनी ने रात-दिन मेहनत कर दो सौ रुपए कमा लिए । इसके लिए उसे अखबार बेचने के साथ-साथ सड़कों पर वाहनों की सफाई भी करनी पड़ी । पैसे पूरे होते ही उसने दुकान पर जाकर वह चित्र सुनहरे कागज में बंधवा लिया ।

नया वर्ष आ गया । एलिजा ने अपने प्यारे भाई को बड़े प्रेम के साथ कलम भेंट की । कलम पाकर अंथोनी बहुत खुश हुआ । अंथोनी ने भी सुनहरे कागज में लिपटा चित्र एलिजा को भेंट दिया ।

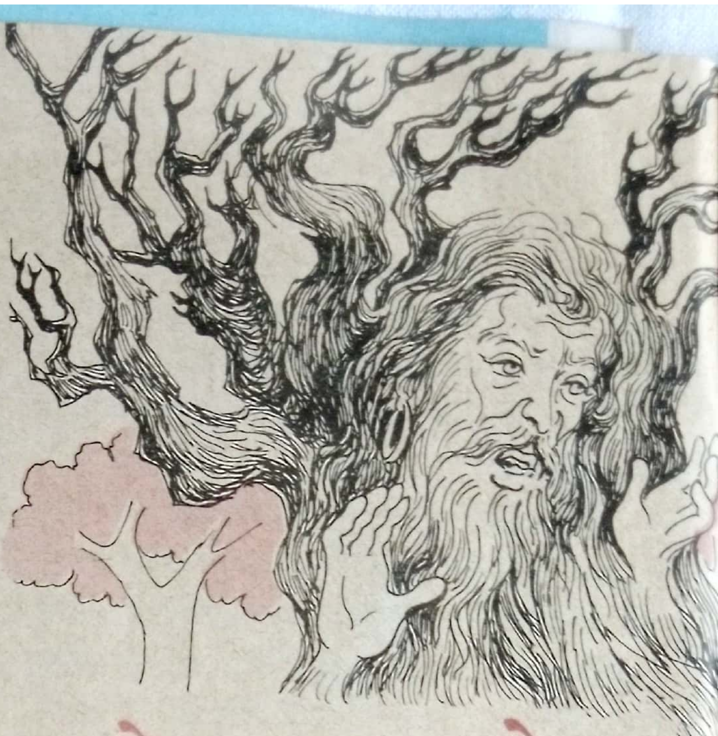
एलिजा ने जैसे ही चित्र पर लिपटे सुनहरे कागज को हटाया, वह आनंद से विह्वल हो उठी । उसकी नीली-नीली आंखों से आंसू बहने लगे ।

एलिजा को रोते देख, अंथोनी ने घबराकर पूछा—''एलिजा, मेरी प्यारी बहन, तुम्हारी आंखों में ये आंसू क्यों ? आज तो बहुत खुशी का दिन है । क्या मेरा उपहार तुमको पसंद नहीं आया ?''

एलिजा ने कहा—''नहीं, मेरे प्यारे भाई, तुम्हारा दिया हुआ उपहार मुझे बहुत पसंद आया है । मैं बहुत खुश हूं । लेकिन इस चित्र को खरीदते हुए तुमने यह नहीं देखा कि इसे किसने बनाया है ?''

अंथोनी ने कहा—''नहीं, यह तो मैंने नहीं देखा । किंतु इसे देखते ही मैंने महसूस किया था कि यह चित्र किसी ने बहुत मन लगाकर बनाया है ।''—यह कहकर अंथोनी ने चित्र के निचले कोने में लिखा, चित्रकार का नाम पढ़ा—''एलिजा विनसेंट ।'' नाम पढ़कर अंथोनी की आंखों में भी आनंद के आंसू छलक आए ।

एलिजा ने कहा—''अब मैं इस चित्र को आजीवन अपने से अलग नहीं करूंगी ।'' ●



पेड़ मत काटो

— रेखा 'कौस्तुभ'

सोनप्यारी के दो बेटे थे, शेखू और लेखू । दोनों अभी बहुत छोटे थे । सोनप्यारी मेहनत कर बेटों का पेट पाल रही थी । एक बार सोनप्यारी बहुत बीमार हो गई । उसका काम पर जाना बंद हो गया । दवाइयों की बात तो दूर रही, भूखों मरने की नौबत आ गई । शेखू और लेखू पर जिम्मेदारी आ गई ।

शेखू को भूख से अधिक मां की चिंता थी । वह चाहता था कि उसे कहीं से कुछ रुपए उधार मिल जाएं तो वह मां का इलाज करवा ले । पर उसे किसी ने एक फूटी कौड़ी भी उधार नहीं दी । वह बहुत परेशान था कि आखिर क्या करे ?

शेखू से मां की हालत देखी नहीं जा रही थी । उधर लेखू का भूख के मारे बुरा हाल था । मां का शरीर तवे की तरह तप रहा था । तेज बुखार में वह ऊल-जलूल बड़बड़ा रही थी । वह दौड़कर पड़ोसी रम्मत चाचा के घर गया। वहां जाकर दुखी मन से उसने कहा— ''चाचा, घर चलकर देखो, मां की हालत ठीक नहीं है ।''

रम्मत चाचा तुरंत दौड़कर शेखू के घर आए । बोले— ''बेटे, तेज बुखार है । ठंडे पानी की पट्टियां सिर पर रखो । फिर किसी डाक्टर को दिखाओ ।''

दोनों भाइयों ने मिलकर ठंडे पानी की पट्टियां चढ़ाईं। बुखार तनिक हल्का हुआ तो मां को होश आ गया। दोनों बेटे मां से चिपट कर रोने लगे। उन्हें धीरज बंधाती मां अपनी बेबसी पर रो रही थी। आखिर शेखू ने कहा— ''मां चिंता न करो। मैं मेहनत-मजदूरी करूंगा और तुम्हारा इलाज करवाऊंगा।''



हिम्मत जुटाते हुए सोनप्यारी बोली— ''नहीं बेटे, तुम अभी बहुत छोटे हो। तुम्हें कौन काम देगा ?''

शेखू ने हठ करते हुए कहा— ''नहीं मां, जब तक तुम ठीक नहीं हो जातीं, घर पर रहकर आराम करोगी। मैं कमाऊंगा और तुम्हारा इलाज करवाऊंगा।''

बेटे की बात सुनकर मां की आंखों में पानी भर आया। वह जानती थी कि शेखू की अभी उम्र ही क्या है ! उसे कौन काम देगा ? मन-ही-मन भगवान को याद कर वह बुदबुदाई— 'भगवान, मेरे बच्चों की रक्षा करना।'

घर में थोड़ा-सा आटा था। इतना नहीं कि उसकी रोटियां बन सकें। शेखू ने आटा पानी में घोला और उसे पका लिया। उसे लेखू को खिलाया। और समझाते हुए कहा— ''लेखू, मैं काम की तलाश में जा रहा हूं। शाम को लौटकर तुम्हें खाना खिलाऊंगा। तब तक तुम मां के पास रहना। यदि बुखार तेज हो जाए, तो पानी की पट्टियां सिर पर रख देना।''

शेखू सुखबीर बढ़ई के कारखाने पर गया। मां की बीमारी की बात बताकर उसने काम मांगा। सुखबीर बोला— ''बेटे, तुम अभी बहुत छोटे हो। मेरे पास तुम्हारे लायक कोई काम नहीं है। हां, तुम कुछ रुपए ले जाओ और अपनी मां का इलाज करवा लो।''

शेखू ने कहा—''बढ़ई दादा, मुझे मजदूरी चाहिए, भीख नहीं। भीख से काम कैसे चलेगा ? मेहनत तो करनी ही होगी ?''

उसकी बात सुनकर सुखबीर बहुत प्रसन्न हुआ। शेखू को कुल्हाड़ी थमाते हुए वह बोला— ''बेटे, तुम्हारी मां के इलाज का प्रबंध कर रहा हूं। तुम निश्चिंत होकर जंगल में जाओ और लकड़ियां काट कर ले आओ।''

उसने बढ़ई दादा को धन्यवाद दिया और जंगल की ओर चल पड़ा। सही पेड़ की तलाश में वह इधर-उधर घूम रहा था। चारों ओर हरे-भरे पेड़ नजर आ रहे थे। वह चाहता था कि कोई सूखा पेड़ मिल जाए तो उसे काटा जाए। आखिर दूर जाकर उसे एक सूखा पेड़ मिला। उसी पेड़ को काटना तय किया। उस पेड़ पर एक यक्ष रहता था। सबको इस बात का पता था। इसीलिए उस पेड़ को कोई नहीं काटता था। पर शेखू को यह मालूम नहीं था। उसने पेड़ को काटना शुरू कर दिया।

ठक-ठक की आवाज सुनकर यक्ष ने इधर-उधर देखा। उसने पाया कि एक छोटा-सा लड़का पेड़ पर कुल्हाड़ी चला रहा है। उसे बहुत क्रोध आया। पर छोटा बच्चा जानकर यक्ष ने उसे समझाना ही ठीक समझा। यक्ष बोला— ''बालक, यह पेड़ मेरा है। तुम इसे मत काटो।''

आवाज सुनकर शेखू चौंका। इधर-उधर देखा। पर कोई भी दिखाई नहीं दिया। उसने इसे मन का भ्रम मानकर फिर अपना काम शुरू कर दिया। कुल्हाड़ी का वार करते ही फिर वही आवाज गूंजी— 'सुना नहीं तुमने, मैं क्या कह रहा हूं ?'

शेखू ने फिर इधर-उधर देखा। पर कहीं कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। जिधर से आवाज आ रही थी, उधर मुंह करके वह जोर से बोला— ''मैं उस आदमी की बात नहीं मानता, जो छिपकर बोले। तुम्हें जो

कहना है, सामने आकर कहो।"

यक्ष उसे आसानी से सबक सिखा सकता था। पर बालक की हिम्मत पर उसे आश्चर्य हुआ। यक्ष ने उसके सामने आने का निश्चय किया। वह पेड़ से उतरा और उसके पास गया। उसने अपना परिचय देते हुए कहा— "मैं यक्ष हूं। इस पेड़ पर रहता हूं। तुम यह पेड़ मत काटो। कोई दूसरा पेड़ काट लो।"

शेखू ने उससे विनम्रतापूर्वक कहा— "यह सच है कि आप यहां रहते हैं। पर मेरी विनती है कि आप इस पेड़ को छोड़कर किसी अन्य पेड़ पर चले जाएं।"

"मैं किसी अन्य पेड़ पर क्यों चला जाऊं? तुम क्यों नहीं दूसरा पेड़ काट लेते?"— यक्ष ने पूछा।

"अन्य पेड़ हरे-भरे हैं। यह पेड़ सूखा है। इसीलिए आप यह पेड़ मेरे लिए छोड़ दें।"— शेखू ने कहा।

यक्ष शेखू की बात से संतुष्ट था, फिर भी वह उसे दूसरा पेड़ काटने के लिए समझाता रहा। पर शेखू नहीं माना। वह बोला— "हरा-भरा पेड़ काटना पाप है जबकि सूखा पेड़ मरे हुए की तरह होता है। अब आप ही बताओ यक्ष जी, मैं यह पाप कैसे कर सकता हूं?"

छोटे-से बालक की समझदारी और दृढ़ता से यक्ष बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा— "बेटे, तुम बहुत छोटे हो। तुम्हारी इतनी उम्र नहीं है कि तुम लकड़ी काटने जैसा कठिन काम करो।"

"यह कुछ भी मुश्किल नहीं है। घर में मेरी मां बीमार है। वह मौत से लड़ रही है। मुझे लकड़ियां काटकर बढ़ई दादा से मजदूरी लेनी है, ताकि मां का इलाज करवा सकूं। प्रार्थना है कि आप मुझे मेरा काम करने दें।"— शेखू बोला।

यक्ष ने पूछा— "यदि मैं तुम्हारी मां को ठीक कर दूं, तो तुम्हें लकड़ी काटने की जरूरत नहीं होगी?"

"मेरी मां को स्वस्थ कर दें तो यह आपकी कृपा होगी। पर लकड़ियां तो फिर भी काटनी होंगी। घर में खाने के लिए अन्न का एक दाना नहीं है। छोटा भाई भूख से तड़प रहा है, मैं भी भूखा हूं। मेहनत नहीं करूंगा तो कैसे काम चलेगा?"— उसने कहा।

यक्ष ने लालच देते हुए कहा— "यदि मैं तुमको इतना धन दे दूं कि तुम आराम से गुजारा कर सको, तब तो इस पेड़ को नहीं काटोगे?"

लालच ठुकराते हुए शेखू बोला— "बस करो यक्ष बाबा, बस करो। जाओ, अपना काम करो और मुझे भी काम करने दो। मुफ़्त का माल मुझे नहीं चाहिए। मैं मेहनत करना अधिक पसंद करता हूं..."

यक्ष को एक बालक के मुंह से इस तरह के जवाब की आशा नहीं थी। वह उसकी ईमानदारी एवं मेहनती स्वभाव के कारण बहुत खुश हुआ। उसने शेखू से कहा— "बेटे, जब घर लौटोगे, तब तुम्हारी मां एकदम स्वस्थ मिलेगी।"

"मैं आपकी बात पर विश्वास कैसे कर लूं?"— शेखू ने कुछ संकोच से कहा।

भोले शेखू की बात सुनकर यक्ष हंस दिया। बोला— "अच्छा, तुम एक पल के लिए अपनी आंखें बंद करो। फिर खोलकर देखो, तो तुम्हें मेरी बात पर विश्वास हो जाएगा।"

शेखू ने आंखें मूंद लीं, फिर तुरंत खोलकर देखा, तो चौंक पड़ा। वह अपने घर के बाहर खड़ा था। अंदर से मां की आवाज आ रही थी। शेखू दौड़कर मां से लिपट गया। उसके कानों में लेखू की आवाज आई— "भैया, घबराने की कोई बात नहीं, मां की तबीयत तो जैसे जादू से ठीक हो गई है।"

शेखू ने मां को पूरी बात बताई तो वह भी हैरान रह गई। उसने कहा— "बेटा, तू जो कुछ बता रहा है, उसमें सच्चाई लगती है मुझे। कुछ देर पहले तक मुझे तेज बुखार था। लेकिन फिर जैसे जादू हो गया। बुखार और दर्द जाते रहे। मेरे अंदर जैसे नई ताकत भर गई है। जैसे मैं कभी बीमार हुई ही न थी।"

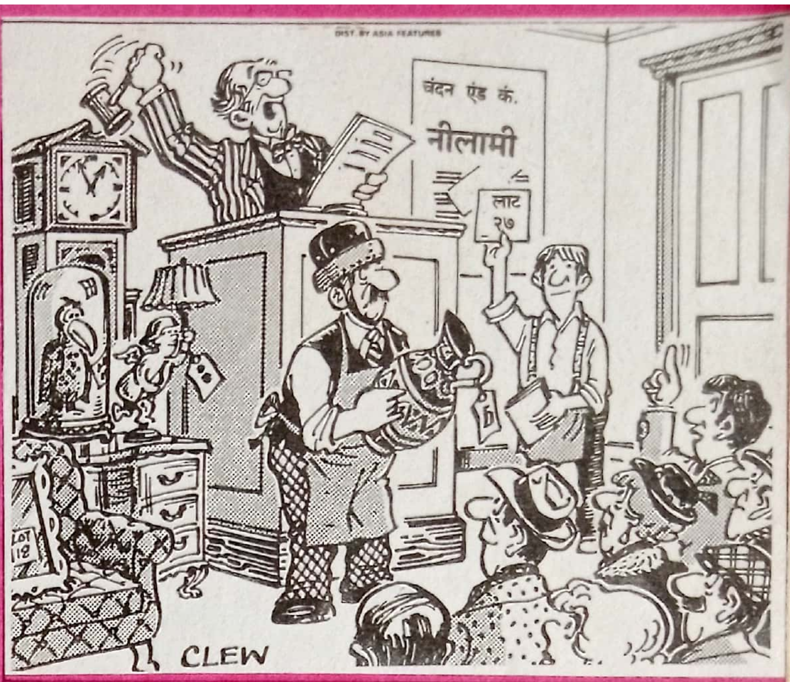
अगले दिन शेखू मां और लेखू को जंगल में ले गया, जहां सूखा पेड़ था। सब तरफ सन्नाटा था। तीनों ने आंखें मूंदकर हाथ जोड़ लिए।

उस दिन के बाद से तीनों का जीवन सुख से बीतने लगा। ●

आप कितने बुद्धिमान हैं?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय— **१५ मिनट।**







कहानी लिखो : १३४

सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० जनवरी '९५ तक कहानी लिखो—१३४, नंदन, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

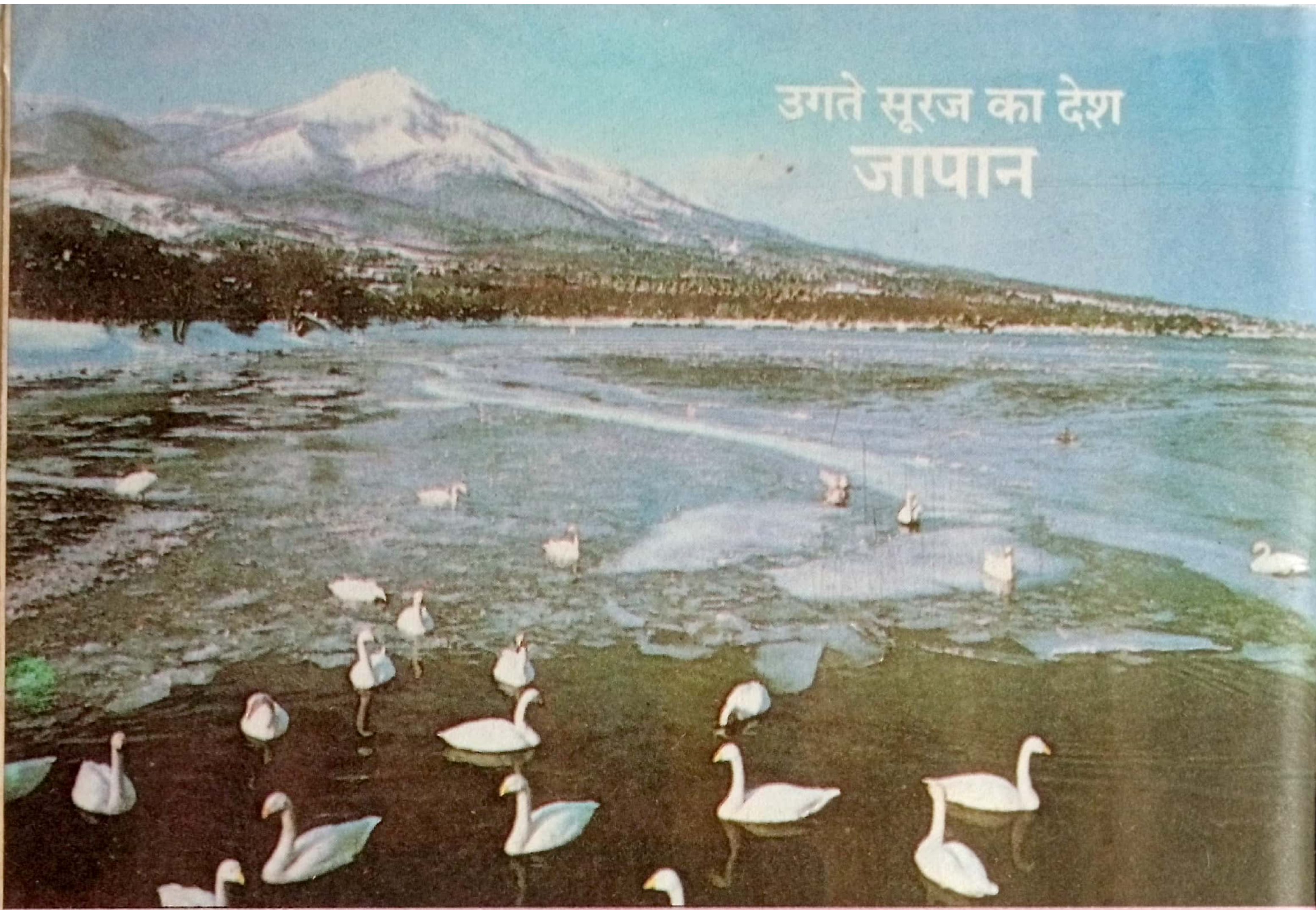
परिणाम : मार्च अंक

चित्र पहेली-१३४

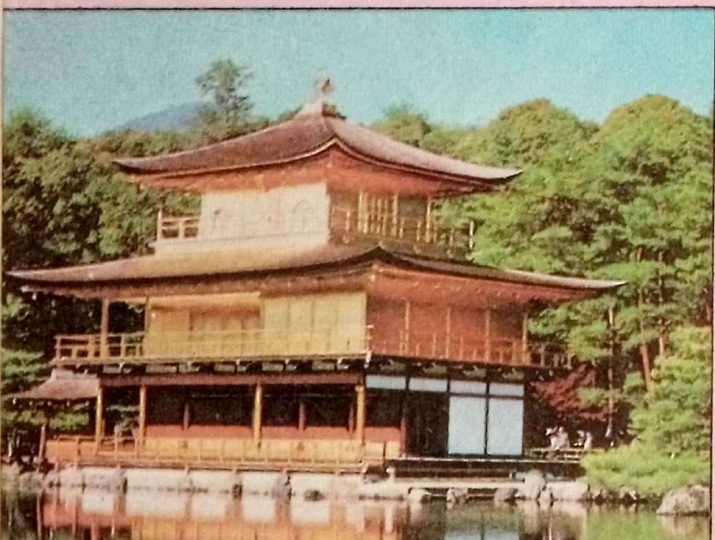
ब्याह की धूमधाम—इस विषय पर रंगीन चित्र बनाइए। चित्र के पीछे अपना नाम, आयु और पता साफ-साफ लिखिए। उसे १० जनवरी तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। पसंद किया गया चित्र नंदन में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : अप्रैल '९५ अंक

उगते सूरज का देश
जापान



अशिजाकी खाड़ी : सर्दियों में हंसों का घर





गुड्डे-गुड़ियों का त्योहार : लड़कियों के लिए

किंकाकूजी मंदिर : छह सौ साल पुराना, मगर रूप नया।

(विशेष लेख पृष्ठ ३० पर)



इकेबाना : ऐसे सजें फूल कि बस . . .



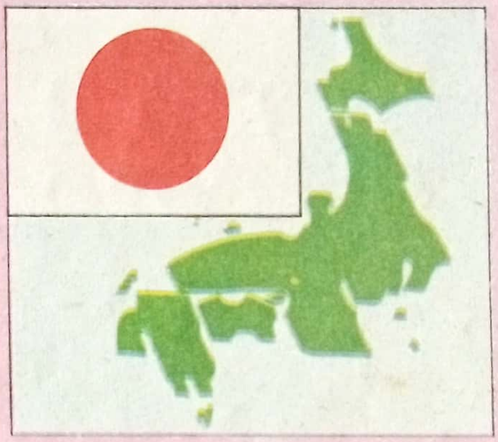
फुटबाल : मनपसंद खेल

नौका विहार : ऊपर खुला आकाश, नीचे मचलता पानी





बसंत आ गया : स्वागत



किंडरगार्डन में : शिक्षा की शुरुआत



खोया बेटा

—जेर्जी कोसिंस्की

दूसरा विश्व युद्ध हुआ । लोग संकट में पड़ गए । एक मां-बाप ने अपने बच्चे को सुरक्षा की दृष्टि से दूर गांव में रहने भेज दिया । वहां मार्ता नामक बुढ़िया उसका पालन-पोषण करने लगी । फिर एक दिन मार्ता की मृत्यु हो गई । बच्चा अकेला भटकने लगा । वह नहीं जानता था कि उसे कहां जाना है । उसके माता-पिता के बारे में भी कुछ पता नहीं था ।

मैं मार्ता की झोंपड़ी में रहता था । सोचता था कि मेरे माता-पिता मुझे किसी भी क्षण वापस लेने आ सकते हैं । मेरे रोने-चिल्लाने का उस बुढ़िया पर कुछ असर नहीं होता था । वह चाहती थी कि मैं घर के आंगन में खेलूं और पालतू जानवरों से दोस्ती करूं ।

झोंपड़ी में कभी-कभी एक गिलहरी घुस आती । आंगन में नाचती, पूंछ हिलाती, मुंह से आवाजें करती, चूजों और कबूतरों को डराती रहती ।

कभी-कभी शाम को मुझे अपने माता-पिता की याद सताती । अपने खिलौने याद आते । मां प्यानो बजाती नजर आती । उसके गाने की आवाज मुझे सुनाई देती । सोचता, शायद अब वे मुझे ढूंढ़ भी पाएंगे कि नहीं !



एक सुबह जब मैं उठा तब मार्ता संसार से जा चुकी थी। वह काफी बीमार जो रहने लगी थी। शाम को जब मैंने घर में लैम्प जलाने की कोशिश की, तो कुछ मिट्टी का तेल जमीन पर गिर पड़ा। बड़ी मुश्किल से माचिस की एक तीली जलाई। उसका जलता हुआ एक टुकड़ा तेल पर गिरा, आग जल उठी। धीरे-धीरे आग झोंपड़ी में फैलने लगी। उठती लपटें देखकर गांव वाले इस ओर भागने लगे। कुत्तों के भौंकने की आवाजें आने लगीं। मुझे डर था कि लोग मुझे देखते ही मार डालेंगे। मैं वहां से भागा। एक जंगल में छिप गया।

प्रातः ठंड से ठिठुरता और घबराया हुआ मैं एक दूसरे गांव में पहुंचा। वहां स्त्री-पुरुषों की भीड़ मेरे चारों ओर इकट्ठी हो गई। उनकी भाषा मेरे लिए अनजान थी। उनकी संदेह भरी आंखों से मुझे डर लग रहा था। एक किसान मुझे बोरे में बंद कर, अपने कंधे पर उठाकर घर ले आया। वह मुझे खानाबदोश जिप्सी समझ रहा था जिनके लिए वहां के लोगों में नफरत थी। उस व्यक्ति ने मुझे खाने को रोटियां दीं। घर की एक कोठरी में बंद कर दिया। उस गांव की एक स्त्री ओलगा ने मुझे उस व्यक्ति से खरीद लिया। वह गांव के बीमार लोगों का इलाज करती थी। उसके साथ रहते हुए मुझे किसी का भय नहीं था।

उन्हीं दिनों गांव में प्लेग फैल गया। लोग डर गए। उन्होंने समझा कि यह अभिशाप मेरे कारण है। उन्होंने मुझे गांव के पास की नदी में हवा से भरे एक थैले के साथ फेंक दिया। मैं पानी में बहने लगा। बहाव कुछ कम हुआ, तो मैं धीरे-धीरे किनारे पहुंच गया। ऊंचे-ऊंचे सरकंडों से गुजरता मैं नदी से दूर जा निकला। तभी मुझे कुछ चरवाहों की अपनी ओर आने की आवाजें सुनाई दीं। मैं पेड़ों के पीछे छिप गया।

कुछ दिन भटकने के बाद मैं एक गांव में पहुंचा। वहां एक चक्की वाले ने मुझे अपने पास रख लिया। वह निर्दयी था। वह अपनी पत्नी को मारता-पीटता था। मौका पाकर एक दिन अंधेरे में मैं वहां से भाग निकला।



अब मैं लेख नामक शिकारी के पास रहता था। मैं उसके लिए चिड़ियां पकड़ने के लिए जाल बिछाता था। वह आसपास के गांवों में चिड़ियां बेचता था। उसका घर तरह-तरह की चिड़ियों से भरा रहता। लोग लेख को चिड़ियों के बदले खाने का सामान देते। एक दिन चिड़ियों की तलाश में न जाने वह कहां खो गया? मैंने कई दिनों तक उसकी राह देखी। अंत में जब वह नहीं लौटा, तो मैंने वहां से जाने का फैसला कर लिया।

इसी बीच एक बढ़ई ने मुझे काम पर रख लिया। दोनों पति-पत्नी सोचते कि मेरे सिर के काले बाल इस गांव और खेतों में बिजली गिरा सकते हैं। गांव में अक्सर तूफान आने और बिजली गिरने से आग लग जाती। रात में आकाश बादलों से घिर जाता। लोग भयभीत हो जाते थे।

एक दिन घास की कोठरी में आग लग गई। आग घर के चारों ओर फैलने लगी। मैं वहां से भाग निकला। जंगल में रेल की पटरी थी जिस पर धीमी गति से चलने वाली रेलगाड़ी के आखिरी डिब्बे में मैं चढ़ गया। उस स्थान से काफी दूर निकल गया।

अब मैं जिस गांव में पहुंचा, वह रेलवे लाइन और नदी से दूर बसा था। मैंने गांव के मुखिया के

जेर्जी कोसिंस्की—पोलैंड में जन्म, बाद में अमरीका चले गए। वहीं पढ़े और अध्यापक बन गए। 'स्टैप्स', 'पिनबाल', 'फ्यूचर इज आवर, कामरेड्स', 'पेंटेड बर्ड' आदि प्रसिद्ध कृतियां हैं। दूसरे विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई 'द पेंटेड बर्ड' की संक्षिप्त कथा यहां दे रहे हैं। —सं.

पास काम करना शुरू कर दिया। लोग सोचते—अगर जर्मन सैनिकों ने मुझे वहां रहते देख लिया, तो वे मेरे कारण पूरे गांव को सजा दे सकते थे।

मुझे पशुओं को खेतों में चराने के लिए ले जाना पड़ता था। गांव में जर्मन सैनिकों के खिलाफ युद्ध कर रहे छापामार आते रहते। मुखिया जर्मन सैनिकों को रसद आदि देता था। एक दिन छापामारों ने मुखिया को भारी सजा दी। वह बुरी तरह जख्मी हो गया। गांव के लोग मुझे पास की जर्मन चौकी पर छोड़ आए। वहां एक सैनिक को मुझे जंगल में ले जाकर गोली मारने का हुक्म मिला। जंगल के पास पहुंच कर उसने मुझे भागने के लिए कहा। मैं जैसे ही भागा, पीछे से गोली चलने की आवाज आई। पता नहीं उसके मन में क्या आया, उसने सीधा निशाना नहीं लगाया। मैं बच निकला।

अब मैं जिस जगह रहता था, वहां जर्मन सैनिक छापामारों की तलाश में आते रहते थे। एक रात मेरे मालिक ने मुझे जगाकर भाग जाने को कहा। जर्मन सैनिक इस गांव में धावा बोलने आ रहे थे। मैं झाड़ी में छिप गया। सैनिकों ने मुझे देख लिया। उन्हें शक था कि या तो मैं यहूदी हूं या कोई जिप्सी। गांव में ले जाकर उन्होंने मुझे एक कोठरी में बंद कर दिया। वहां एक और व्यक्ति भी था। उसके हाथ पीछे की ओर बंधे थे। चेहरे पर संगीन के घाव थे। मैं उसे देखकर डर गया। बाहर गाड़ियों के इंजन का शोर होने लगा। तभी कोठरी का दरवाजा खुला। उन्होंने जख्मी आदमी को बाहर घसीट लिया। वे हमें गाड़ी में बिठाकर पास वाले पुलिस स्टेशन ले जा रहे थे। रास्ते में एक पादरी ने हमें देख लिया। गाड़ी ने पुलिस की इमारत में प्रवेश किया। पादरी बाहर ही खड़ा हो गया। जर्मन अफसर ने मुझे देखा, तो मुझे छोड़ देने का हुक्म जारी कर दिया। एक सैनिक मुझे घसीटता हुआ दरवाजे के बाहर ले आया, जहां पादरी मेरी प्रतीक्षा में खड़ा था।



पादरी मुझे एक फार्म पर ले गया। फार्म के मालिक को पादरी ने मुझे अपने पास रखने के लिए कहा। वह व्यक्ति मुझे देखकर परेशान हो गया। कारण मुझ जैसा जिप्सी लड़का उसके लिए मुसीबतें खड़ी कर सकता था। लेकिन अंत में उसने मुझे अपने पास रख लिया।

फार्म के मालिक गार्बोस को बात-बात पर गुस्सा आ जाता। छोटी-सी गलती हो जाने पर मेरी टांगों पर कोड़े बरसाने लगता। मेरे कान ऐंठता। मालिक का कुत्ता मुझे देखकर गुर्राता। तंग आकर मैंने वह जगह छोड़ दी।

मैं दस वर्ष का हो चुका था। मेरी आवाज को न जाने क्या हो गया था? अब मैं बोलने में असमर्थ था।

जाड़ा शुरू होने पर बर्फ ने धरती को ढक लिया था। मैंने स्केट्स का एक जोड़ा अपने लिए तैयार किया और अपने बूटों से बांध लिया। पाल की तरह एक कपड़े को अपने सिर के ऊपर फैला दिया। हवा

मुझे अनजाने रास्तों पर ले जा रही थी।

गांव की एक स्त्री लवीना ने मेरी दयनीय दशा देखी। वह मुझे अपने घर ले आई। उसने बहुत कोशिश की कि मैं कुछ बोल सकूं, परंतु मैं बोलने में असमर्थ था। गांव वालों की राय थी कि मुझे जर्मन सैनिकों को सौंप दिया जाए। परंतु लवीना ने इसका विरोध किया।

लवीना के पति की मृत्यु हो चुकी थी। वह घर में अकेली रहती थी। लोगों के घरों में काम करके गुजारा करती। गांव के लोग अक्सर उस पर अपने पति को मार डालने का आरोप लगाते जिसे सुनकर वह क्रोध से पागल हो उठती। लोगों से झगड़ती। एक झगड़े ने उसके प्राण ले लिए। मैं फिर अकेला हो गया था। मैंने इस गांव से भी कहीं दूर निकल जाने में ही अपनी भलाई समझी।

गर्मी खत्म होने को थी। गेहूं के पूलों का खेतों में ढेर लगा था। पास ही नदी के पुल की जर्मन सैनिक, दिन-रात चौकसी कर रहे थे। एक दिन घोड़ों पर सवार बहुत से लुटेरे गोलियां चलाते गांव में घुस आए। लोग डर से अपने-अपने घरों में छिप गए। एक लुटेरे ने मुझे झाड़ियों में छिपते देख लिया। मैं वहां से भागने लगा। तभी उसने राइफल के कुंदे से मुझे जख्मी कर दिया। मैं बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। इसी बीच रूसी सैनिक गांव में आ गए। उन्होंने सभी लुटेरों को पकड़ लिया और घायल गांव वालों की मरहम-पट्टी की।

यह १९४४ का पतझड़ था। सेना के अस्पताल में इलाज के बाद मुझे जाने दिया गया। यहां से युद्ध भूमि व मोर्चाबंदी काफी दूर थी। मुझे सैनिकों के साथ ही ठहरने की इजाजत मिल गई। दो सैनिक—गवरीला और मित्का मेरी देखभाल करते। अब मैं ग्यारह वर्ष का हो चुका था। पुस्तकों में मेरी रुचि बढ़ गई थी।

एक दिन गवरीला ने मुझे बताया कि युद्ध अब समाप्त हो चुका है। नियमों के अनुसार खोए हुए



बच्चों को विशेष केंद्रों में भेजा जाएगा। वहां से उनके माता-पिता की खोज-खबर ली जाएगी। उसने मुझसे वायदा किया कि अगर मेरे माता-पिता नहीं मिले, तो वह मुझे अपने पास रख लेगा।

मुझे बहुत से उपहार देकर एक सैनिक के साथ शहर के अनाथालय में भेज दिया गया। गवरीला ने मेरे बारे में सभी जानकारी लिखकर साथ भेज दी।

एक सुबह मुझे प्रिंसिपल के कमरे में बुलाया गया। उनके साथ एक व्यक्ति था। शायद वह मेरे माता-पिता को युद्ध से पहले जानता था।

प्रिंसिपल ने मुझे बैठने के लिए कहा। तभी वह व्यक्ति उठकर साथ वाले कमरे में गया। वहां उसने किसी से बातचीत की। जब वह हमारे कमरे में लौटा, तो उसके साथ एक स्त्री और पुरुष था। वे मुझे कुछ पहचाने-से लगे। मेरा दिल धड़कने लगा। मैंने उनकी तरफ गौर से देखा। वे मेरे निकट आ गए थे। स्त्री मेरे ऊपर झुकी। उसका चेहरा आंसुओं से भीगा था। व्यक्ति घबराया हुआ था। वह अपना चश्मा बार-बार ठीक कर रहा था। उसके चेहरे पर पीड़ा के भाव थे। मेरे कंधे पर बाईं तरफ जन्म से ही एक निशान था जो कमीज हटाने पर साफ दिखाई दे रहा था। निशान देखते ही वे दोनों सिसकियां भरने लगे। उन्होंने मुझे अपने गले से लगा लिया क्योंकि वर्षों बाद उनको अपना खोया बेटा मिल गया था।

(प्रस्तुति : अमरजीत सिंह)

सिर पर गदा

—शांता ग्रोवर



प्राचीन समय में वज्रांग नाम का एक महाबली दैत्य था। दैत्य होते हुए भी वह शांतिप्रिय था। एक दिन वह अपनी पत्नी वरांगी के साथ तप करने वन में चला गया।

वज्रांग जब तपस्या में लीन था, तो देवराज इंद्र ने वरांगी को अनेक यातनाएं दीं। वज्रांग की समाधि टूटी, तो वरांगी ने पति को इंद्र की यातनाओं के बारे में बताया। वह प्रार्थना करने लगी—"नाथ, आप इंद्र से मेरे अपमान का बदला लीजिए।"

वज्रांग बोला—"प्रिये, धैर्य रखो। समय पर सब ठीक हो जाएगा।"

समय बीता। एक दिन वरांगी ने पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम तारक रखा गया। वज्रांग ने पुत्र को अस्त्र-शस्त्र चलाने की विद्या सिखाई। तारक शक्तिशाली बन गया। सभी दैत्य उसकी शक्ति का लोहा मानने लगे। दैत्यों ने उसे अपना राजा बना लिया।

एक दिन वरांगी ने तारक से कहा—"पुत्र, अब समय आ गया है कि तुम अपनी मां का अपमान करने वाले से बदला लो।"

"माता जी, आपका अपमान किसने किया? मैं उस आततायी का सिर काटकर आपके चरणों में डाल दूंगा।"—गुस्से से तारक बोला।

"बेटा, तुम्हारा शत्रु देवराज इंद्र है। उस पर विजय पाने के लिए तुम्हें तप करना होगा।"—वरांगी ने उत्तर दिया।

"माता जी, आप चिंता न करें। मैं इंद्र से बदला लेने के लिए कठोर तप करूंगा।"—ऐसा कहकर तारक तप करने वन में चला गया।

तारक ने वन में कई वर्षों तक कठोर तप किया। एक दिन उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी प्रकट हुए। वह बोले—"वर मांगो वत्स।"

तारक ब्रह्माजी को सामने पाकर प्रसन्न हुआ। ब्रह्माजी को प्रणाम करते हुए बोला—"प्रभो, मैं कभी मृत्यु को प्राप्त न होऊं। आप ऐसा वर प्रदान करें।"

ब्रह्माजी ने कहा—"वत्स, जो संसार में पैदा होता है, एक दिन उसकी मृत्यु अवश्य होती है। मैं तुम्हें ऐसा वरदान नहीं दे सकता।"

तारक बोला—"प्रभो, आप ऐसा वर तो दे ही सकते हैं कि मैं छोटे बच्चे के अलावा किसी अन्य प्राणी द्वारा न मारा जाऊं।"

"तथास्तु!"—कहकर ब्राह्माजी अदृश्य हो गए।

ब्रह्माजी से वरदान पाकर तारक उद्दंड हो गया। उसने दैत्य सेना का संगठन किया और एक दिन देवताओं पर धावा बोल दिया। भयंकर युद्ध हुआ। अनेक देवता घायल हो गए और कुछ इधर-उधर छिप गए।

तारक ने कालनेमि नामक राक्षस को आदेश दिया—"छिपे हुए देवताओं को ढूंढ़कर हमारे सामने ले आओ।" यह सुन, कालनेमि देवताओं को पकड़ने चल दिया। कुछ ही देर में कालनेमि ने इंद्र सहित अनेक देवताओं को तारक के सामने ला खड़ा किया।

तारक ने अपनी मां को दरबार में बुलवाया। मां के आने पर तारक बोला—"माता जी, आपका अपराधी आपके सामने खड़ा है। जैसा चाहें, वैसा इसे दंड दें।"

धरांगी ने कहा—"बेटा, प्रसिद्ध व्यक्ति का अपमान उसके वध से भी अधिक दुःखद होता है। इसलिए इंद्र का मुंडन कर छोड़ दिया जाए।"

"जो आज्ञा माता जी।"—तारक बोला।

तारक ने सैनिकों को वैसा ही करने के लिए कहा। सैनिकों ने इंद्र का मुंडन कर, उन्हें छोड़ दिया। जब इंद्र देवलोक पहुंचे, तो देवता इंद्र की दशा देखकर बहुत दुखी हुए। इंद्र भी कम दुखी न थे।

देवता इंद्र सहित ब्रह्माजी की शरण में गए। उन्होंने दैत्यों के अत्याचारों के बारे में ब्रह्माजी को बताया। ब्रह्माजी ने उन्हें धैर्य बंधाया। बोले—"आप सब देवलोक लौट जाइए। मैं शीघ्र ही कोई रास्ता निकालूंगा।"

"प्रभो! हमें कब तक धैर्य धारण करना होगा?"—इंद्र ने पूछा।

कुछ देर सोचकर ब्रह्माजी बोले—"आप लोगों को शंकरजी के पुत्र-जन्म तक प्रतीक्षा करनी होगी। केवल उनका पुत्र ही तारक का वध कर सकता है।" ब्रह्माजी का कहा मान देवता लौट गए।

देवताओं के जाते ही ब्रह्माजी ने रात्रि का स्मरण किया। कुछ देर बाद रात्रि उनके सामने खड़ी थी। ब्रह्माजी ने कहा—"निशा, तुम्हें पार्वती की कुछ समय के लिए सहायिका बनना होगा।"

रात्रि ने कहा—"प्रभो! आपका जैसा आदेश होगा, उसका मैं पालन करूंगी।" ब्रह्माजी ने उसे सारी बातें समझा दीं। रात्रि ने ब्रह्माजी को प्रणाम किया और वहां से चली गई।

ब्रह्माजी के आदेश से रात्रि ने हिमालय की पत्नी मेनका के घर पुत्री रूप में जन्म लिया। जब वह युवती हो गई, तो इंद्र ने नारद से कहा—"नारद जी, पर्वतराज हिमालय के पास जाइए। वहां आप हिमालय को अपनी पुत्री का विवाह भगवान शंकर से करने के लिए प्रेरित कीजिए।"

"जो आज्ञा देवराज।"—ऐसा कहकर नारद जी वहां से चलकर हिमालय के पास आए।

पर्वतराज हिमालय नारद जी को अपने द्वार पर देखकर हैरान हो गए। उन्होंने उनका स्वागत-सत्कार किया। हिमालय की पत्नी मेनका और पुत्री पार्वती ने भी नारद जी को आकर प्रणाम किया। हिमालय नारद जी से बोले—"भगवन, आप बेटी पार्वती के भविष्य के बारे में कुछ बताइए। हमें इसकी बड़ी चिंता है।"

नारद जी को मुंहमांगी मुराद मिल गई। वह बोले—"पर्वतराज, पार्वती बहुत भाग्यशाली हैं। यह भगवान शंकर की पत्नी बनेंगी।" यह सुन, हिमालय बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने नारद जी को आदर पूर्वक विदा किया।

उधर इंद्र ने कामदेव को भगवान शंकर के पास भेजा ताकि वह भगवान शंकर को विवाह के लिए राजी कर सके। कामदेव ने अपना प्रभाव दिखाया। भगवान शंकर की समाधि टूट गई। शंकर बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने कामदेव का अंत कर दिया।

पार्वती को इस बात का पता चला, तो उन्होंने भगवान शंकर को प्रसन्न करने का निश्चय किया। वह घोर तपस्या करने लगीं। कई वर्ष बीत गए। एक दिन सप्त ऋषियों ने उन्हें आशीर्वाद दिया—"पुत्री, तुम जिनके लिए इतना कठोर तप कर रही हो, वह तुम्हें वर रूप में अवश्य प्राप्त होंगे।" पार्वती की खुशी का ठिकाना न रहा।

सप्त ऋषि भगवान शंकर के पास पहुंचे। उन्होंने शंकरजी को पार्वती के कठोर तप के बारे में बताया। सप्त ऋषियों के समझाने पर भगवान शंकर पार्वती से विवाह करने को तैयार हो गए। एक दिन दोनों का विवाह हो गया। वे मंदरगिरि पर रहने लगे।

कुछ वर्ष बाद पार्वती ने पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम कार्तिकेय रखा गया। बालक अत्यंत शक्तिशाली और पराक्रमी था। एक बार शंकर और पार्वती चौपड़ खेल रहे थे। पार्वती खेल में पारंगत थीं। उन्होंने शंकर को हरा दिया। शंकरजी ने कार्तिकेय को अपनी तरफ मिला लिया और विष्णुजी का नाम लेकर पासा फेंका। शंकरजी जीत गए।

पार्वती शंकरजी की चाल समझ गईं। उन्होंने कार्तिकेय को शाप दे दिया—"तुम कभी जवान नहीं

होगे, सदा बालक बने रहोगे।'' यह सुन कार्तिकेय ने क्षमा मांगी। फिर पार्वती ने कहा—''मेरा शाप तो व्यर्थ नहीं जा सकता लेकिन तुम छोटे होते हुए भी वह काम कर दिखाओगे जो बड़े-बड़े नहीं कर पाएंगे।''

एक दिन देवताओं ने अग्नि-देव को शंकर और पार्वती के विवाह का परिणाम जानने को भेजा। अग्निदेव ने मंदरगिरि से लौटकर देवताओं को बताया कि शंकरजी के यहां पुत्र उत्पन्न हुआ है। वह पराक्रमी है। यह सुन देवलोक में आनंद छा गया।

सभी देवता कार्तिकेय के पास पहुंचे। इंद्र ने कार्तिकेय से कहा—''कुमार, आप अत्यंत शूरवीर और तेजस्वी हैं। आप हमारे सेनापति बनें और असुरों का विनाश करें।'' कुमार ने इंद्र की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

देवता बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने आक्रमण की खूब तैयारी की। एक दिन कुमार कार्तिकेय की देखरेख में देवताओं ने असुरों पर धावा बोल दिया। तारक भी सेना लेकर युद्धक्षेत्र में आ गया। वह छोटे बालक कार्तिकेय को सेनापति के रूप में देखकर हंसने लगा। बोला—''बालक! लगता है तुम्हें अपने प्राणों से मोह नहीं है। जाओ, घर लौट जाओ।''

कुमार बोला—''दैत्यराज, घमंड करना अच्छा नहीं होता। वीर की आयु नहीं, उसके काम देखे जाते हैं। मुझसे लड़ने के लिए तैयार हो जाओ।''

सेनापति कार्तिकेय का इशारा पाते ही देवताओं की सेना असुरों पर टूट पड़ी। तारक ने कुमार पर मुदगर से वार किया। कुमार ने बीच में ही मुदगर को काट गिराया।

अब तारक का क्रोध आसमान छूने लगा। वह गदा लेकर रथ से नीचे उतरा। उसने गदा का एक जोरदार प्रहार कुमार पर किया। कुमार ने गर्दन घुमाकर अपनी गदा उसके सिर पर दे मारी। कुमार के एक ही प्रहार से तारक धराशायी हो गया। तारक के मरते ही दैत्य भाग खड़े हुए।

यह देख, देवों ने कुमार को कंधों पर उठा लिया। चारों तरफ कुमार का 'जय-जयकार' होने लगा। ●



जापान में भारत

—डा. राज बुद्धिराजा

सूर्योदय होता तो हर देश में है किंतु सूर्योदय का देश कहते जापान को हैं। वहां सूर्य के उदय होने का दृश्य इतना मोहक होता है कि बस देखते ही रहिए।

जापान की जो बात सबसे ज्यादा प्रभावित करती है, वह है घुटने तक झुक कर अभिवादन करना। भारत में भी कुछ लोग झुककर अभिवादन करते हैं। प्रातःकालीन नमस्कार को जापान में 'ओहायोओगोज़ाइमास' और शुभरात्रि को 'ओयासुमिनासाइ' कहते हैं। वहां धन्यवाद का प्रयोग भी किया जाता है। उसे 'अरिगातोओ' कहते हैं।

एक-दूसरे के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए व्यक्ति के नाम के बाद 'सान' अर्थात् 'जी' और वस्तु के नाम से पहले 'ओ' यानि 'बड़ा', 'ऊंचा' लगाया जाता है। जैसे शमी सान 'ओ' हना फूल।

घर के मुख्य द्वार पर जूते उतारे जाते हैं। घर के भीतर जूते ले जाना मना है। रेशम, सूत या ऊन के स्लीपर जो दरवाजे पर रखे रहते हैं, पहनकर अंदर जाते हैं ताकि बाहर की धूल-मिट्टी अंदर न जाए। खाना-पीना शुरू करने से पहले भारत की भांति भगवान को धन्यवाद दिया जाता है जिसे 'ईतादाकिमास' कहते हैं और खाना समाप्त करने के बाद आभार याने 'गोचिसोसमा।'



घर बनाते समय जापान में भी भारत की भांति भूमि पूजन किया जाता है। बांस का मंडप बनाकर पूजा कर चावल के लड्डू बांटे जाते हैं ताकि वह घर शुभ हो और प्रेतात्माओं के प्रकोप से बचा रहे। घर पूरा हो जाने पर एक बार फिर चावल के लड्डू बांटे जाते हैं। छत पर भी डाल दिए जाते हैं ताकि पक्षी भी उन्हें खा सकें।

बच्चे का नामकरण जन्म के सातवें दिन किया जाता है। चालीस दिन तक नवजात शिशु के सामने सिगरेट व शराब का सेवन नहीं किया जाता। बच्चे के पालन-पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मां यदि नौकरी करती है तो पांच वर्ष के लिए छोड़ देती है ताकि जन्म से ही बच्चे पर पूरा ध्यान दिया जा सके। वह बच्चा जापान का महत्वपूर्ण भावी नागरिक है। इसी तरह सौ दिन के बाद चावल खिलाकर बच्चे का अन्न प्राशन संस्कार किया जाता है। एक वर्ष का होते-होते वह चलने लगता है। उसके सामने किताबें, पेंसिलें, पैसों की थैली, चावल की थैली, तूलिका, सारोबान (कैल्क्युलेटर) रख दिया जाता है। बच्चा जिसे भी सबसे पहले उठाता है, उसी से उसके भावी जीवन का अनुमान लगाया जाता है। यदि वह चावल उठाता है तो वह किसान, तूलिका उठाने से चित्रकार, पुस्तक उठाने से विद्वान, सारोबान उठाने से गणितज्ञ-वैज्ञानिक और पैसे उठाने से वह निश्चित रूप से धनी बनेगा। एक वर्ष के बच्चे को ढाई किलो चावल की थैली अपनी पीठ पर उठाकर चलना पड़ता है। उसे यह अहसास कराया जाता है कि बड़ा होने पर उसे अपने कंधों पर 'बोझ' उठाना है।

फर्श पर लगी मेज के इर्द-गिर्द आलथी-पालथी लगाकर भोजन किया जाता है। भोजन से पहले गर्म पानी में भीगे तौलिए से हाथ पोंछे जाते हैं। चावल का एक भी दाना जूठा नहीं छोड़ा जाता।

सोने के लिए जमीन पर ही गद्दे बिछा दिए जाते हैं। पलंग का जापानी दुनिया में कोई स्थान नहीं है।

परीक्षा शुरू होने से पहले विद्या की देवी बेनतेन समा की आराधना की जाती है। शिक्षक, गुरु और प्रोफेसर का बहुत सम्मान किया जाता है।

नव वर्ष पर बच्चों को अच्छी-खासी रकम जेब खर्च के लिए दी जाती है जैसे हमारे यहां लोहड़ी या मकर सक्रांति पर। बच्चे भी अपने दादा-दादी के लिए भेंट खरीदकर उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। इन दिनों सभी डिपार्टमेंट स्टोर बच्चों से भरे रहते हैं।

जापानी बच्चों की बात करते समय यदि गुड़ियों की चर्चा न की जाए तो बात अधूरी रह जाएगी। गुड़िया भी और गुड़िया का त्योहार भी। मार्च में होने वाले इस त्योहार पर हर बच्ची को माता-पिता द्वारा गुड़ियों का एक सेट भेंट किया जाता है जिसे 'ओहिनो समा' कहते हैं। विवाह के बाद बेटी यह सेट अपनी ससुराल ले जाती है और अपनी बेटी को उपहार में देती है। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी ये गुड़ियां सफर करती रहती हैं। इनकी कीमत छह से दस लाख रुपए तक होती है।

गुड़ियों के त्योहार के साथ जुड़ा है बर्फ का त्योहार। बच्चे सर्दी के दिनों में पहले हफ़्ते बर्फ का घर बनाते, सजाते, खाना पकाते और अपने दोस्तों और बड़ों का स्वागत करते हैं। इन घरों में पांच से छह लोग आराम से बैठ सकते है। यदि पूर्णिमा हो, तो कहना ही क्या!

यदि आपको जापान जाने का मौका मिले, तो कभी किसी के घर खाली हाथ मत जाइए। क्योंकि जापानी बच्चों को भेंट देना और भेंट लेना बहुत पसंद है। फूल या पुस्तक हो, तो सोने में सुहागा। जापानी बच्चे ढेर सारी पुस्तकें पढ़ते, संगीत सुनते और दोस्ती निभाते हैं। वहां जाने पर सचमुच ऐसा लगता है जैसे हम भारत की झांकी देख रहे हों। ●

चले हवा

मेरी सुनती नहीं हवा, अपनी धुन में चले हवा !
बाबा, इससे बात करो, ऐसे कैसे चले हवा !

जाड़े में हो जाती ठंडी
लाती कोट, रजाई,
सांझ-सबेरे मिले—
बजाती दांतों की शहनाई ।
सूरज के आने-जाने तक ही बस थोड़ा टले हवा !

अफलातून बनी आती है
क्यों ये बाबा जून में,
ताव बड़ा खाती, ले आती
है क्यों गर्मी खून में ।
सबको फिरे जलाती, होकर पागल खुद भी जले
हवा !

जब-जब हौले-हौले चलती
लगती मुझे सहेली सी,
और कभी आंधी होकर
आ धमके एक पहेली सी ।
कभी नरम, हो कभी गरम क्यों, नहीं किसी को खले
हवा !

—कृष्ण शलभ

दादी-मां

मम्मी की फटकारों से
हमें बचाती दादी-मां !
कितने प्यारे वादे करती—
और निभाती दादी-मां !
पापा ने कुछ कहा-सुना,
सब समझाती दादी-मां !
चुन्नू-मुन्नू कहां गए,
हांक लगाती दादी-मां !
ऐनक माथे पर, फिर भी
शोर मचाती दादी-मां !

'हाय राम ! मैं भूल गई'—
हमें हंसाती दादी-मां !
गरमा-गरम जलेबी ला,
हमें खिलाती दादी-मां !
कभी शाम को अच्छी-सी
कथा सुनाती दादी-मां !
खूब डांट दे पापा को,
भौंह चढ़ाती दादी-मां !
हम भी गुमसुम हो जाएं,
रोब जमाती दादी मां ।

—बाबूराम शर्मा विभाकर



जाड़े की धूप

बहुत सुहानी लगती मुझको
यह जाड़े की धूप ।
मधुर कहानी लगती मुझको
यह जाड़े की धूप ।
अभी यहां पर, अभी वहां पर
फुदक रही है,
चिड़िया रानी लगती मुझको
यह जाड़े की धूप ।
मौसम जब अंगड़ाई लेता
यह छिप जाती,
सच अभिमानी लगती मुझको
यह जाड़े की धूप ।
खेल रही है आंख-मिचौली
रह-रहकर यह,
करती कुछ शैतानी लगती
यह जाड़े की धूप ।

—आनन्द रस्तोगी

उड़ जाऊंगा

मैं राकेट एक बनाऊंगा,
उड़ अंतरिक्ष में जाऊंगा ।

चांद-सितारों को छू लूंगा
दूर ग्रहों की सैर करूंगा ।

लोग वहां के होंगे कैसे,
क्या होंगे हम लोगों जैसे ।

अपना राकेट उनको दूंगा,
उड़न तश्तरी उनसे लूंगा ।

रोज सुनाती हमें कहानी,
परी-लोक है, कहती नानी ।

वहां मिलेंगी परियां प्यारी,
रंग-बिरंगी दुनिया न्यारी ।

खूब करूंगा सैर-सपाटा,
आऊंगा कर उनको टा-टा ।

—कृष्णकांत तैलंग

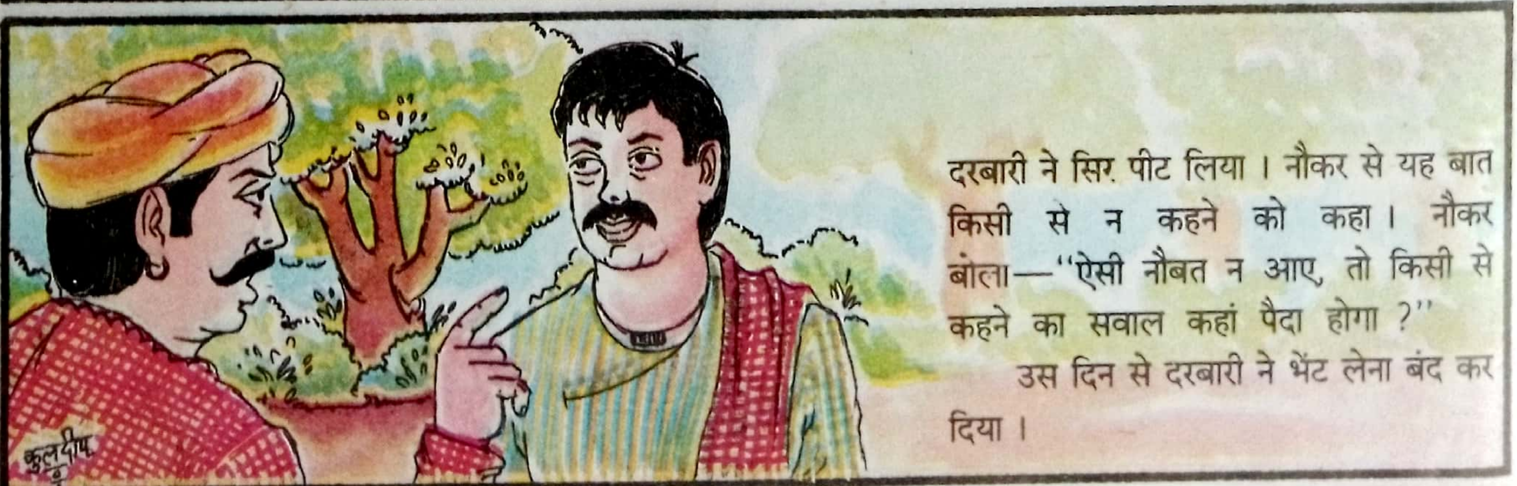
गाजर का हलुवा


किसी रियासत का एक दरबारी बड़ा लालची था। जो चुपके से उसे भेंट दे जाता, उसी का काम कर देता था।
एक बार किसी व्यक्ति ने अपना छोटा-सा काम कराने के लिए उसे गाजर का हलुवा और फलों के रस से भरी एक बोतल भेंट की।
दरबारी ने उसका काम कर दिया। फिर अपने नौकर को हलवे की पोटली और बोतल देकर कहा—"इन्हें घर दे आ। न पोटली को खोलना, न बोतल को। पोटली में सांप है और बोतल में जहर।"
नौकर भी पूरा उस्ताद था। मामला भांप गया। रास्ते में पोटली खोल हलुवा खा गया। बोतल खोल सारा रस पी गया। घर गया ही नहीं।


दोपहर को दरबारी पहुंचा घर। पत्नी बोली—"आज जल्दी आ गए। खाना तैयार होने में तो देर है।"
दरबारी ने कहा—"आज खाना बनाना छोड़ो। नौकर के हाथ हलुवा और रस भेजा था। वही ले आओ।"
मगर नौकर तो घर पहुंचा ही नहीं था।


दरबारी लाल-पीला हो गया। डंडा ले नौकर को ढूंढ़ने निकला। नौकर उसे बगीचे में एक पेड़ के नीचे सोया हुआ मिला। दरबारी ने आव देखा, न ताव, एक डंडा जमा दिया। पूछा—"सामान कहां है ?"


नौकर सुबकता हुआ बोला—"गुस्ताखी माफ हुजूर। चील ने झपट्टा मारा। सांप वाली पोटली ले गई। डर के मारे मैंने बोतल का जहर पी लिया। यहां पड़ा मौत का इंतजार कर रहा था।"


दरबारी ने सिर पीट लिया। नौकर से यह बात किसी से न कहने को कहा। नौकर बोला—"ऐसी नौबत न आए, तो किसी से कहने का सवाल कहां पैदा होगा ?"
उस दिन से दरबारी ने भेंट लेना बंद कर दिया।
कुलदीप


सब कुछ
ब धनी तो था, पर था
बड़ थे उसके यहां । वे
दिन हनत करते । बदले में
उनको सिर्फ जूठन मिलती थी ।
एक दिन शेख का एक दोस्त उसके पास आया । उसका रूखा व्यवहार देखकर बोला—"कुछ ऐसा करो, जिससे नाम बदनाम न हो । मरने के बाद भी लोग याद करें ।"
शेख को उसकी बात लग गई । उसी दिन सारे गुलामों को बुलाकर कहा—"जो कल और परसों सबसे अधिक काम करेगा, उसे मैं आजाद कर दूंगा ।"
सारे गुलाम कड़ी मेहनत करने पर जुट गए । शेख के कारिंदे घूम-घूम कर उन पर नजर रख रहे थे । सभी भूख से परेशान थे, मगर मन में आजाद होने की ललक थी ।


एक गुलाम था, अली । वह शेख की मालिश किया करता था, मगर वह काम न करके एक तरफ चुपचाप खड़ा था ।
कारिंदे से यह सुनकर शेख गुस्से से उबल पड़ा । बोला—''उसको कोड़ों से पीटते हुए लाओ ।'' ऐसा ही हुआ ।
शेख ने दर्द से कराहते, लहूलुहान अली से पूछा—''क्या तुम आजाद होना नहीं चाहते, जो काम नहीं कर रहे हो ?'' अली सुबकते हुए बोला—''नहीं । मैं आपको छोड़कर नहीं जाना चाहता । आप ही मेरे सब कुछ हैं ।''
अली की बात का शेख पर इतना गहरा असर पड़ा कि उसने उसे गुलामी से आजाद कर दिया और महल का प्रधान सेवादार बना दिया । सबसे बड़ी बात यह हुई कि शेख भी बदल गया । उसने सभी गुलामों को आजाद कर दिया ।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : ३१, अंक : ३; जनवरी '९५, नई दिल्ली; पौष-माघ, शक सं. १९१६



शती समारोह का उद्‌घाटन : राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा को 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित करते हुए काशी नरेश, साथ में अर्जुनसिंह (बाएं) और सुधाकर पांडे।

हिंदी का काम देश का काम

नई दिल्ली। "हिंदी का काम देश का काम है। देश को एक रखने के लिए आम भाषा से बढ़कर कोई दूसरी ताकत नहीं है। वह भाषा अपने देश की ही हो सकती है और हिंदी इस काम को बखूबी कर रही है। हमें नई पीढ़ी में हिंदी के प्रति अधिक अनुराग बढ़ाना चाहिए।" ये शब्द राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने कहे। वह नागरी प्रचारिणी सभा के शती समारोह का उद्‌घाटन कर रहे थे। राष्ट्रपति ने कहा कि किसी भी भाषा की बढ़िया पुस्तक हो, वह हिंदी में शीघ्र अनुवाद की जानी चाहिए।

काशी नरेश ने इस अवसर पर राष्ट्रपति को सभा की सर्वोच्च उपाधि 'साहित्य वाचस्पति' प्रदान की। मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुनसिंह ने सभा के कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने सभा के प्रेस को आधुनिक बनाने के लिए दस लाख रुपए देने की घोषणा की। समारोह में श्री कृष्णचंद्र पंत, अटल बिहारी वाजपेयी तथा डा. विभूति नारायण ने कई सुझाव रखे।

सभा के प्रधानमंत्री श्री सुधाकर पांडे ने बताया कि अब तक पांच हजार ग्रंथो का प्रकाशन किया जा चुका है। जिस संस्था की शुरुआत तीन युवकों ने की थी, उससे देश के बड़े से बड़े नेता और विद्वान जुड़े रहे हैं।

शती समारोह १९९६ तक चलेगा। सभा की ओर से कई योजनाएं बनाई गई हैं-जिनमें कुछ हैं—बाल विश्वकोश का पांच भागों में प्रकाशन, हिंदी के १०१ महान ग्रंथों का चयन और उनका विवरण, विज्ञान की सौ श्रेष्ठ पुस्तकों का प्रकाशन, हरिद्वार में हिंदी साहित्य मंदिर की स्थापना, भारतीय भाषाओं के सौ वर्षों का इतिहास तैयार कराना।

धर्म-रत्न व धर्म-विशारद की परीक्षाएं

नई दिल्ली। अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ की ओर से दो परीक्षाएं ली जाती हैं—धर्म-रत्न व धर्म-विशारद। ये परीक्षाएं सन १९४५ से संचालित हैं। परीक्षाओं द्वारा छात्रों को श्रीमद्‌भगवद् गीता, तुलसी रामायण संग्रह, हिन्दू धर्म प्रवेशिका, हिन्दू गौरव-गान, सिखों के दस गुरु तथा हिन्दू धर्म की विशेषताओं आदि की जानकारी कराई जाती है। परीक्षाओं में उच्च अंक पाने वाले छात्रों को छात्रवृति तथा पुरस्कार दिए जाते हैं।

फिर भी बचा

न्यूयार्क। एक आदमी ने सत्रहवीं मंजिल से छलांग लगा दी। लेकिन नीचे गिरने से पहले ही वह एक पेड़ की डालियों में अटक गया। वहां से गिरने पर भी वह जमीन पर न गिरकर एक कार की छत पर गिरा। थोड़ी चोट के अलावा युवक का कुछ न बिगड़ा।

☐ यूक्रेन के नया राष्ट्र बनने के बाद वहां नए नोट जारी किए गए हैं। सरकारी बैंकों में पुराने, बेकार नोटों का ढेर लगा हुआ है। उनसे पेपर मिलें नया कागज बना रही हैं।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

नंदन बाल समाचार

चिंता करना छोड़, अपने कर्म में लग जाओ। सभी विपत्तियां टल जाएंगी।
—वृंदावनलाल वर्मा

ढपोरशंख

ढपोरशंख की कथा किसने नहीं पढ़ी। उससे जो मांगो, वह दोगुना देने को कहे, दे कुछ भी नहीं। देश के बालकों को लेकर यह कथा पूरी तरह लागू होती है। बालक के कल्याण के बारे में ऊंची-ऊंची बातें बहुत की जाती हैं, पर काम कम ही होता है।

भारतीय बाल-कल्याण परिषद ऐसी ही संस्था है। वहां के अधिकारी बड़े-बड़े सम्मेलनों में लगे रहते हैं। उनके पास बच्चों की सबसे बड़ी पत्रिका से मिलने, बात करने का समय नहीं होता। परिषद की ओर से बहादुर बच्चों को पुरस्कार दिए जाते हैं। 'नंदन' में बीस बरस से उन बच्चों के चित्र छपते रहे हैं। इस बार वे चित्र हमें नहीं मिल सके। पाठकों से हम क्षमा चाहते हैं।

रेल बस

बंगलूर। 'भारत अर्थमूवर्स लि.' नामक कम्पनी ने खास किस्म का वाहन बनाया है। देखने में तो यह बस जैसा लगता है मगर रेल की पटरियों पर चलता है। इसकी गति साठ कि.मी. प्रति घंटा है। इसमें इकहत्तर यात्री बैठ सकते हैं। राजस्थान के मेड़ता शहर से मेड़ता रोड तक ऐसी रेल बस चलाई गई है।

चरित्र से ही राष्ट्र निर्माण

नोएडा। "बच्चों को शुरू से ही ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जो उनके चरित्र का निर्माण करे। चरित्र निर्माण से ही राष्ट्र का निर्माण होता है।"– ये विचार उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल वोरा ने प्रकट किए। वह नोएडा में एक स्कूल के भवन का उद्घाटन कर रहे थे। श्री वोरा ने कहा कि यह महात्मा गांधी के जन्म का सवा सौवां वर्ष है। सभी बच्चों को महात्मा गांधी के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि पहले बालिकाएं स्कूल नहीं जाती थीं। मगर अब उनकी स्थिति में सुधार हुआ है।

बच्चे चित्र बनाएं

मास्को। यहां एक विश्व बाल चित्रकला प्रतियोगिता की घोषणा की गई है। उसका विषय है—कल, आज और कल। प्रतियोगिता का आयोजन 'ग्नोसिस' संस्था द्वारा किया जा रहा है जिसे प्रसिद्ध रूसी चित्रकार एन. के. रोरिख ने स्थापित किया था। इसमें दुनिया भर के सत्रह वर्ष तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। रामलीला में राम की भूमिका निभाने वाले जाने-माने कलाकार गेन्नादी पेचनिकोव संस्था के अध्यक्ष हैं। वह चित्रकला प्रतियोगिता के संयोजक भी हैं।

बच्चों को पुरस्कार

गाजियाबाद। रोटरी गाजियाबाद ग्रेटर द्वारा पर्यावरण विषय पर इंदिरा गांधी स्मृति चित्रकला प्रतियोगिता की गई। इसमें ३२ स्कूलों के बारह सौ बच्चों ने भाग लिया। उम्र के हिसाब से प्रतियोगिता को चार वर्गों में बांटा गया था। पुरस्कार पाने वालों के अलावा, प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी बच्चों को उपहार और प्रशंसा-पत्र दिए गए।

नंदन चित्रकला प्रतियोगिता

नई दिल्ली। ममता मार्डर्न स्कूल, विकासपुरी में 'नंदन आशु चित्रकला प्रतियोगिता' की गई। दो हजार बच्चों ने प्रतियोगिता में रंग-बिरंगे चित्र बनाए। दिल्ली के अलावा हरियाणा और उत्तर प्रदेश से भी बच्चे यहां चित्र बनाने आए थे। 'नंदन' की ओर से ऐसी कई प्रतियोगिताएं राजधानी में की जाएंगी।

वे मिसाल हैं

नागपुर। घनश्याम, विनोद और राजेश तीनों जन्म से ही दृष्टिहीन हैं। मगर उन्होंने ऐसे कीर्तिमान बनाए हैं जो दुनिया में किसी ने नहीं बनाए। ये तीनों भाई बोर्ड तथा विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं में हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं। इसके लिए उन्हें कठिन संघर्ष करना पड़ा। उनके पिता हरदयाल दास ने हमेशा उन्हें प्रोत्साहित किया।

अनोखी टुकड़ी

जगरेब। क्रोएशिया में सेना की एक टुकड़ी का नाम है— टाइगर। इसे चार साल पहले स्थापित किया था। इस टुकड़ी के साथ-साथ टैंक तो चलते ही हैं, सबसे आगे होता है जीता जागता बाघ या टाइगर।

हीरे खोजने वाले

टोरटिया। आइवरी कोस्ट के उत्तरी इलाके में बो नदी बहती है। आजकल वहां नदी किनारे पैंतीस हजार लोग रात-दिन लगे हैं। ये लोग हीरों को खोज रहे हैं। कुछ को हीरे मिलते हैं, बहुत-से अपनी जान गंवा देते हैं। नदी किनारे बसे गांव की जनसंख्या साठ हजार पहुंच चुकी है। इनमें से तीन चौथाई विदेशी हैं। हीरे खोजने वालों से वहां के अधिकारी परेशान हैं। दिन पर दिन इनकी संख्या बढ़ती जा रही है।

शादी से पहले पौधे लगाओ

मनीला । यहां के अबरा प्रांत में एक अनोखा कानून लागू है । यहां विवाह से पहले लड़का-लड़की दोनों को दस पौधे अवश्य लगाने पड़ते हैं । पौधे लगाने के बाद उनकी देखभाल भी करनी पड़ती है ।

भूमिगत होटल

पेइचिंग । १९७० में परमाणु हथियारों के आक्रमण से बचाव के लिए यहां एक भूमिगत शहर बसाया गया था । अब यह शहर पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है । इसी शहर में अस्सी कमरों का होटल भी है । इस होटल को पेइचिंग शहर का सबसे सस्ता होटल माना जाता है ।

बाघ शांति

सोल । यहां के योंगिन चिड़ियाघर में जन्मा सफेद बाघ पांच महीने का हो चुका है । कोरिया में जन्मा यह पहला सफेद बाघ है । उसका नाम है—शांति ।

उसका दिल

टोरंटो । एक साल के अनाथ बाबी को दिल की बीमारी थी । लेकिन अब ठीक हो गया है । उसके दिल का आपरेशन कर दिया गया है । डाक्टर हंसकर कहते हैं कि जल्दी ही वह फिर से भौंकने लगेगा । बाबी एक कुत्ता है । बाबी को ठीक करने में डाक्टरों के अलावा पशुओं की सेवा करने वाली संस्था ने भी मदद की ।

विंसी की कापी

न्यूयार्क । लिओनार्द द विंसी ने बहत्तर पृष्ठ की एक कापी पर ब्रह्मांड के रहस्यों के बारे में बहुत-सी बातें लिखी थीं । चित्र बनाए थे । विंसी जाने-माने चित्रकार भी थे । उनकी कलाकृति मोनालिजा पूरी दुनिया में मशहूर है । पिछले दिनों एक नीलामी में विंसी की यह कापी करीब दस करोड़ रुपए में बिकी ।

एकता शिविर

नई दिल्ली । बाल भवन सोसाइटी ने बाल दिवस पर 'अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण शिविर' लगाया । सप्ताह भर के इस शिविर में तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गए । बाल मेला लगा । एक प्रदर्शनी 'हमारा भारत' लगाई गई । नृत्य, संगीत के अलावा एक बाल कवि सम्मेलन भी हुआ । बच्चों ने पेड़ लगाए । इंदिरा गांधी के जीवन पर संतोखबा द्वारा बनाई गई दो सौ बीस मीटर लम्बी चित्रावली को भी बच्चों ने देखा । क्रिकेट मैच भी खेला गया ।

तीस वर्ष से हिंदी सेवा

बान । जर्मनी के दायचे वेले रेडियो स्टेशन से १५ अगस्त, १९६४ को हिंदी कार्यक्रमों के प्रसारण की शुरुआत हुई थी । शुरू में प्रसारण का समय केवल पंद्रह मिनट था । तब इसे सुनने वाले भी कम थे । शुरू में सिर्फ सौ पत्र आते थे । अब यह संख्या हजारों में पहुंच गई है ।

मंत्री और चिड़ियाघर

लखनऊ । रामलखन वर्मा उत्तर प्रदेश सरकार में पंचायत राज्यमंत्री हैं । उनका सरकारी आवास छोटे-मोटे चिड़ियाघर में बदल गया है । घोड़ा, भालू, हाथी व कुत्ते आदि को वर्मा जी बहुत चाहते हैं । वह उनसे कभी अलग होना नहीं चाहते ।

मजेदार हलवा

मैसूर । चारों तरफ बर्फ ही बर्फ । भारत से हजारों किलोमीटर दूर । मगर आराम से हलवा, रोटी तथा अन्य कई भारतीय व्यंजनों का आनंद अंटार्कटिका पर उठाया जा सकता है । ये व्यंजन मैसूर की रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला तैयार करती है । यहां से खाने का सामान अंटार्कटिका भेजा जाता है । यह सामान छह महीने तक खराब नहीं होता ।

नन्हे समाचार

□ ब्रिटेन में ऐसे टायर बनाए गए हैं जिनमें पंक्चर नहीं होता । इन टायरों में एक विशेष प्रकार का द्रव भरा रहता है । टायरों में छेद होते ही द्रव छेद को भर देता है और टायर-ट्यूब सही-सलामत रहते हैं ।

□ अमरीका की श्रीमती ब्रेडफोर्ड को विश्व की सबसे मोटी महिला कहा जाता है, और इस पर उन्हें कोई आपत्ति नहीं । लेकिन जब एक पत्रिका ने उन्हें हाथी के बच्चे और एक कार के बराबर कहा तो उन्होंने पत्रिका पर मुकदमा दायर कर दिया ।

□ त्रिपुरा में एक राष्ट्रीय उद्यान बनाया जा रहा है । इससे पहले असम में स्थापित काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान दुनियाभर में मशहूर हो चुका है ।

□ थाईलैंड में वार्षिक हाथी मेला हुआ । उसमें खिलाड़ियों ने हाथियों पर बैठकर फुटबाल खेली ।

□ न्यूजीलैंड के पास समुद्र में आज से १३० वर्ष पहले सोने से लदा एक जलयान डूब गया था । अब उसमें भरा सोना निकालने की तैयारियां चल रही हैं । इस सोने का मूल्य बहुत अधिक है ।

□ इंग्लैंड और फ्रांस के बीच इंग्लिश चैनल समुद्र के नीचे बनी सुरंग में यात्री गाड़ियां आने-जाने लगी हैं ।

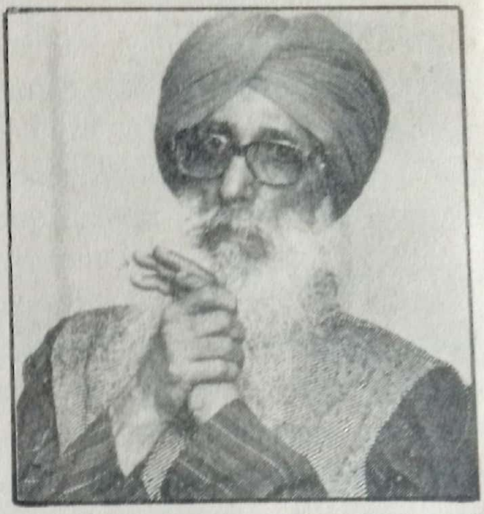
□ बेंटन (अमरीका) में दो कैदी जेल से भागे और दूध ले जाने वाले ट्रक में चल दिए । ट्रक का पिछला दरवाजा खुला रह गया । दूध के पैकेट गिरते रहे और पुलिस सड़क पर बहते दूध का पीछा करती हुई भगोड़ों तक पहुंच गई ।

□ दिल्ली के इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर ६० दर्जन चिड़ियों को देश से बाहर जाने से रोक लिया गया । कहते हैं विश्व बाजार में इनकी कीमत एक करोड़ रुपए से अधिक है ।

सचित्र समाचार



हमारे नए थल सेना-अध्यक्ष श्री शंकर राय चौधरी।



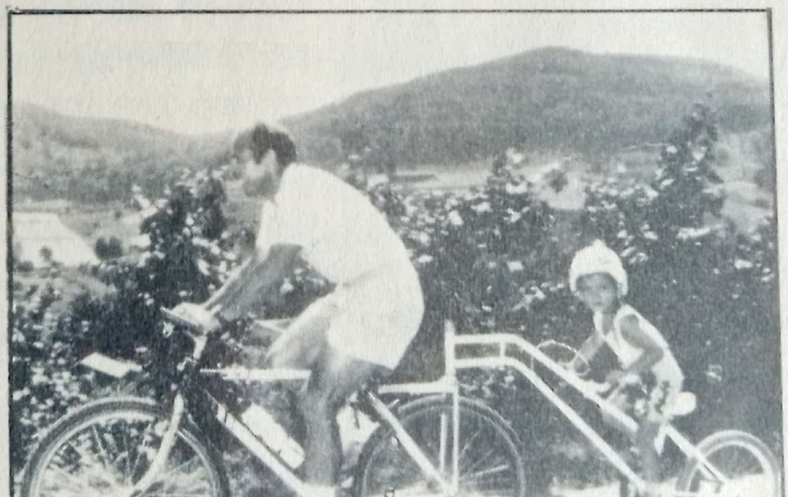
पंजाबी भाषा के जाने-माने कवि और लेखक डा. हरभजन सिंह को के. के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से 'सरस्वती सम्मान'।



हैप्पी स्कूल, दरियागंज नई दिल्ली में बाल दिवस समारोह।



यूरोप से आए दुर्लभ जीव पांडा : दार्जिलिंग के चिड़ियाघर में भेजे गए।



पापा की साइकिल मेरी भी साइकिल।

दो अंगूठियां

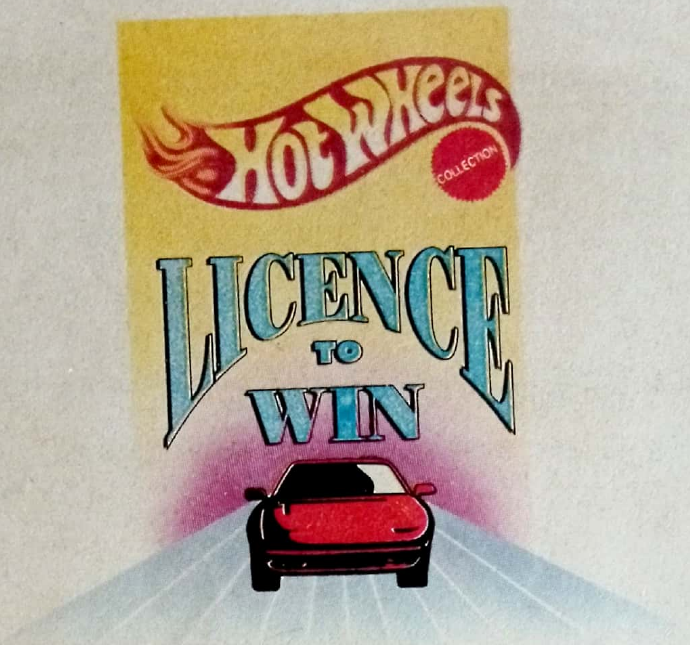


दो भाई थे । बड़ा महेश— नेक और मेहनती । छोटा जयराम— तिकड़मी और खोटा । एक दिन...
महेश, कीरतपुर में सिद्ध आए हैं । करामाती हैं । लक्ष्मी भक्त हैं । चलें...
इच्छा है, तो चलो । तुम्हारा भला होगा । कल...
अगले दिन दोनों सिद्ध के पास पहुंचे । धूनी से उसने दो अंगूठियां निकालीं ।
आग में हाथ ! बाप रे !
अरे, राख से निकलीं, तो मिट्टी जैसी । मगर बाहर आते ही... चमत्कार...
सामने रखकर मां लक्ष्मी का स्मरण करना । धन का लाभ होगा । एक-एक दोनों को...
रास्ते में
मेरी अंगूठी तुम रख लो । घर पहुंच कर...
ले लेना । लाओ...
थक गए तो सुस्ताने बैठ गए । महेश को नींद आ गई । जयराम के मन में पाप आ गया...
सो गया । दोनों अंगूठियां चुरा लूं । घर जाकर नहीं दे सकेगा, तो बदले में सम्पत्ति...धनी बन जाऊंगा ...


महेश को पता न चला । घर जाकर जयराम ने अपनी अंगूठी मांगी...
बनाओ मत । मुझे भिखारी ही रखना चाहते हो ?...राजा से शिकायत करूंगा...
पता नहीं, कहां गईं ! चोरी गईं या गिर गईं ! अब कहां से दूं ?
महेश के मना करने पर जयराम ने राजा के दरबार में फरियाद की । राजा ने महेश को बुलाकर...
तुम इसकी सिद्ध अंगूठी क्यों नहीं लौटाते ?
कहां से...कैसे... खो गईं या...
किंतु
हमें न्याय करना है । अंगूठी नहीं लौटा सकते, तो जयराम को दस हजार रुपए दो...वर्ना जेल...क्यों जयराम ?
दस हजार ही सही ।...मुझे स्वीकार है।
रास्ते में मेरे सो जाने पर शायद इसी ने... तभी तो यह मुसकरा रहा है ।
कुछ सोच महेश ने राजा से कहा— ''इतना धन अभी मेरे पास नहीं । मैं इसे पुर्जा दे दूंगा । मेरी ससुराल से ले आएगा ।'' जयराम मान गया । पुर्जा लेकर...
महेश को खूब उल्लू बनाया ।...ऐश करूंगा । ये दोनों सिद्ध अंगूठियां मेरा घर भर देंगी ।...अरे...
छीन लो दोनों अंगूठियां
और पुर्जा भी...



नकाबपोशों ने जयराम से पुर्जा और दोनों अंगूठियां छीन लीं । वह रोता-चिल्लाता फिर दरबार में पहुंचा...
दुहाई महाराज की । महेश के गुंडों ने रास्ते में ही वह पुर्जा छीन लिया...
गुंडे ! हमारे न्याय का अपमान...
महेश को सिपाही पकड़ लाए । राजा ने कड़ककर उसे धमकी दी । जयराम को तुरंत दस की जगह बीस हजार देने को कहा ।
ये रुपए लो जयराम इन दोनों अंगूठियों से अब मैं...
??
ये तो मेरी हैं । उन गुंडों ने पुर्जे के साथ-साथ मुझसे छीनी...
झोंक में जयराम ने अपराध स्वीकार कर लिया था । महेश ने सच बात बताई तो राजा ने कड़ी छानबीन की ।
जयराम टूट गया...
चोरी ! सीना जोरी !
चुप रहो । क्षमा नहीं, दंड मिलेगा ।
क्षमा महाराज, धनी बनने के लिए मैंने ही इन्हें चुराया था ।
और फिर...
जैसे करनी, वैसी भरनी ! हे भगवान !
महेश जी, तुमने बड़ी चतुराई से मामला सुलझाया । आज से तुम न्याय मंत्री...
कुलदीप



LEO MATTEL

रोमांचक ईनाम आपके नाम

जब आप खरीदेंगे
हॉट व्हील्स कार, ईनाम मिलेंगे कितने शानदार...



जीतिए, आपका अपना
ड्राइवर्स लायसेंस

हॉट व्हील्स ट्रम्प कार्ड सेट
+
बैज
साथ में ड्राइवर्स लायसेंस

ख़ूबसूरत बेल्ट पाउच
+
सन वाइज़र
साथ में हॉट व्हील्स ट्रम्प कार्ड सेट
+ बैज और ड्राइवर्स लायसेंस

हॉट शॉट मिनी कैमरा
साथ में बेल्ट पाउच, सन वाइज़र,
हॉट व्हील्स ट्रम्प कार्ड सेट + बैज
और ड्राइवर्स लायसेंस

अधिक जानकारी के लिए अपने नज़दीक के हॉट व्हील्स विक्रेता से संपर्क कीजिए.

जल्दी कीजिए ! यह योजना सिर्फ़ 31 दिसम्बर, 1994 तक.

ITA.2612.95

सूरज का नया घर

—डा.ओमप्रकाश सिंहल

घटना हजारों साल पुरानी है। उन दिनों सूरज और पानी एक साथ रहते थे। वे पक्के दोस्त थे। रोज मिलना होता। उठना-बैठना होता। हमेशा सूरज ही पानी के घर जाता।

एक दिन सूरज पानी से कह उठा—"बुरा न मानो, तो एक बात पूछूं?"

पानी बोला—"बेखटके पूछो। मैं तुम्हारी किसी भी बात का बुरा नहीं मानता।"

सूरज ने पूछा—"प्यारे भाई! तुम कभी भी मेरे घर क्यों नहीं आते?"

पानी ने जवाब दिया—"मेरा परिवार बहुत बड़ा है। इतना बड़ा कि अगर हम सब लोग तुम्हारे यहां आ गए, तो तुम्हें अपना घर छोड़ना पड़ जाएगा।"

सूरज बोला—"तुम इसकी चिंता मत करो। मैं एक बहुत बड़ा-सा घर बनवा लूंगा।"

पानी ने जवाब दिया—"इतना कष्ट करने की क्या जरूरत है? तुम मेरे घर आए या मैं तुम्हारे घर गया, इसमें क्या फर्क पड़ता है?"

सूरज बोला—"मैं बहुत दिनों से नया घर बनवाने की सोच रहा था। पर किसी न किसी वजह से यह काम अब तक टलता ही रहा। अब मैं फौरन नया घर बनवाना शुरू करूंगा।"

पानी ने कहा—"प्यारे दोस्त! मेरा एक सुझाव सुन लो। जब अपना नया घर बनवाओ, तब उसका अहाता बहुत बड़ा रखना।"

सूरज बोला—"चिंता मत करो। जब आओगे, तब घर देखकर तबीयत खुश हो जाएगी।"

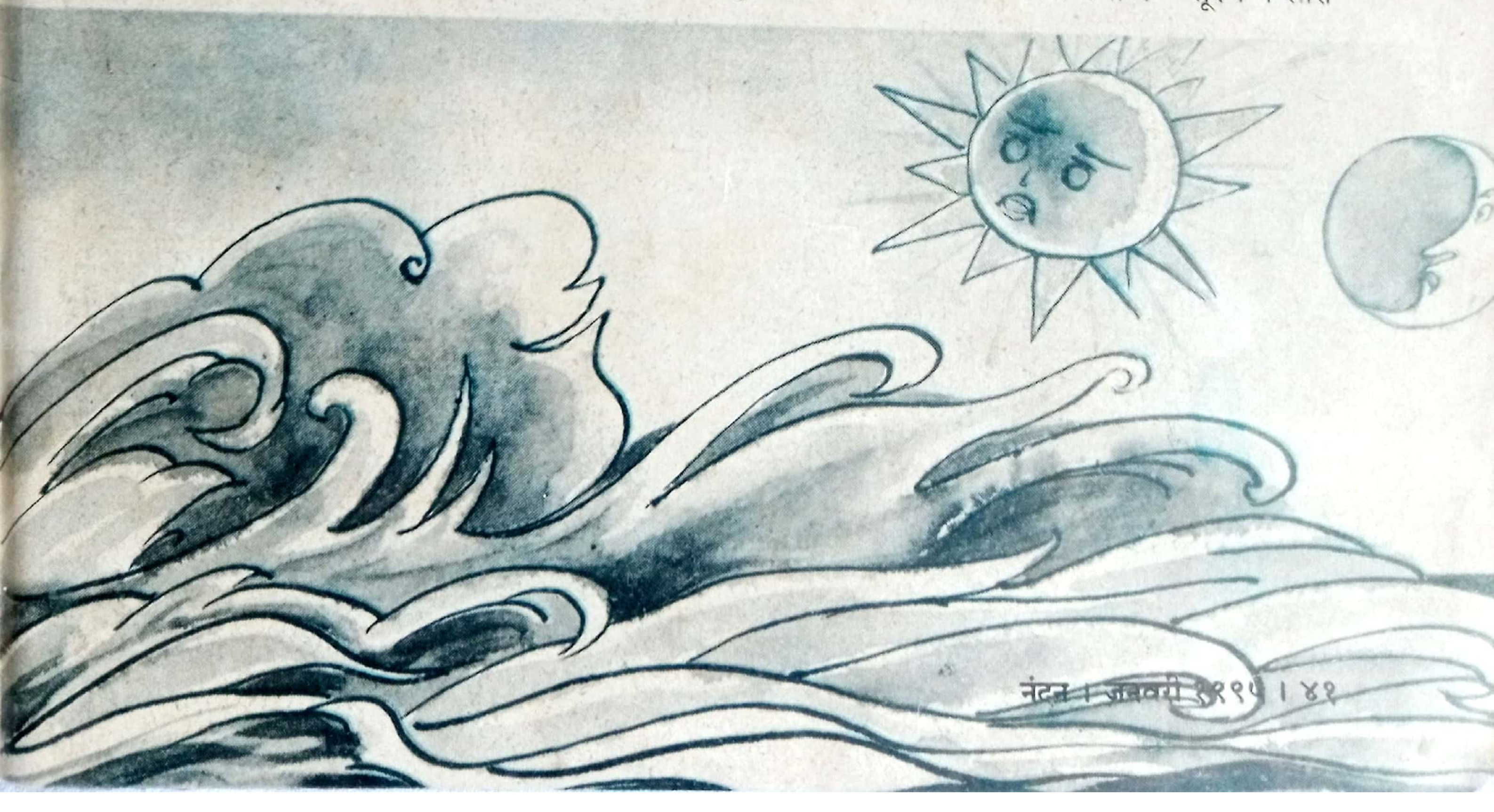
सूरज की बहुत प्यारी पत्नी थी—चंदा। जब सूरज अपने दोस्तों के यहां चला जाता, तब वह घर पर उसका इंतजार करती। एक दिन सूरज को घर लौटने में बहुत देर हो गई थी। वह सोच रही थी—'मालूम नहीं, आज उन्हें इतनी देर क्यों हो गई? मैं कहां जाऊं? किससे उनका अता-पता पूछूं?' तभी अचानक दरवाजे पर थाप सुनाई दी। उसने तुरंत दरवाजा खोला। मुसकराते हुए अपने पति का स्वागत किया।

सूरज बोला—"आज मैं तुम्हें खुशखबरी सुनाना चाहता हूं।"

चंदा बोली—"वह क्या?"

सूरज ने कहा—"कल से हम अपना नया घर बनवाना शुरू करेंगे।"

चंदा बोली—"बहुत अच्छी बात है। लेकिन तुम्हारे मन में यह विचार आया कैसे?" सूरज ने सारी



बात बता दी ।

सूरज नया घर बनवाने में जुट गया । उसने सूबसूरत घर बनवाया । अहाता भी खूब बड़ा रखा । जो भी देखता, दंग रह जाता । एक दिन उसने पानी को घर आने का न्योता दिया । पानी चाहते हुए भी मना नहीं कर सका ।

अगले दिन पानी अपना पूरा परिवार लेकर सूरज के घर चला । पहुंचने पर सूरज को आवाज दी । फिर कहा—"मैं सपरिवार आया हूं । अगर सब लोग भीतर आ जाएं, तो कोई परेशानी तो नहीं होगी ?" सूरज ने उत्तर दिया—"परेशानी कैसी ? एकदम नया घर है । खूब बड़ा अहाता है । अपने परिवार समेत बेखटके भीतर चले आओ ।"

पानी भीतर घुसा । ढेर सारी मछलियां, झींगे, केकड़े और न जाने कितनी तरह के जल-जंतु उसके साथ-साथ चले । अभी पूरा परिवार भीतर तक घुसा भी नहीं था कि घुटनों तक की जगह घिर गई ।

पानी ने फिर आवाज लगाई—"प्यारे दोस्त ! अच्छी तरह देख लो कि सारे परिवार का भीतर आना ठीक भी है या नहीं ।"

सूरज बोला—"किसी तरह का सोच-विचर मत करो । एकदम भीतर चले आओ । पानी सपरिवार भीतर घुसता गया । सिर तक की जगह घिर गई, फिर भी परिवार पूरा न आ पाया । उसने फिर पूछा—"क्या तुम यह चाहते हो कि मैं अपना पूरा परिवार लेकर भीतर आऊं !" इस बार सूरज और उसकी पत्नी चंदा ने एक साथ जवाब दिया—"हां भाई, सब भीतर आ जाएं । कोई भी नहीं छूटना चाहिए ।"

यह सुन पानी सपरिवार भीतर बढ़ता गया । सूरज और चंदा को छत पर जाना पड़ा । पानी ने फिर से अपना पुराना प्रश्न दोहराया । सूरज की ओर से भी पहले वाला जवाब आया । पानी का परिवार भीतर घुसा, तो सूरज और चंदा को छत भी खाली करनी पड़ी । वे दोनों आकाश में चले गए । कहते हैं कि तब से वे दोनों वहीं रहते हैं ।

(अफ्रीकी लोककथा)

अदल-बदल

—दिनेश 'दिवाकर'

गंगा के तट पर गांव था सोनाली । वह धोबियों का गांव था । सुबह होते ही स्त्री-पुरुष नदी के किनारे कपड़े धोने लगते । उनमें एक धोबी था मंगलू । मंगलू के परिवार में पत्नी और एक बेटा था दीनू। दीनू कामचोर था ।

एक दिन वह नदी के किनारे बैठा था। अचानक उसे नदी में एक सुनहरी मछली तैरती दिखाई दी । उसने सुना था कि सुनहरी मछली धन का खजाना होती है । उसने दौड़कर जाल उठाया । नदी में छलांग लगा दी । उसे सुनहरी मछली को ढूंढ़ने में कोई कठिनाई नहीं हुई । क्योंकि सुनहरे रंग के कारण मछली पानी में दूर-दूर तक दिखाई देती थी । उसके जाल में मछली फंस ही गई । वह मछली को ले,गांव को चल दिया । रास्ते में उसके कानों में एक आवाज सुनाई दी । उसने अपने कान मछली के पास कर दिए । मछली बोल रही थी—"हे मानव, तू मुझे क्यों अपने बंधन में लेना चाहता है ? तुम्हारी तरह हमें भी अपनी स्वतंत्रता प्यारी है । मुझे छोड़ दे, नहीं तो मेरा शाप तेरा विनाश कर देगा ।" पर दीनू ने मछली की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया ।

दीनू ने घर आकर कांच के मर्तबान में मछली को रख दिया । आसपास के गांवों में सुनहरी मछली की चर्चा फैल गई । मंगलू के घर लोगों का तांता लगा रहता । दीनू भी अवसर का लाभ उठाता । वह मछली को दिखाने के पैसे वसूल करता । उसके घर धन बरसने लगा ।

गांव में एक चोर था कर्मू । एक रात कर्मू दीवार फांदकर मंगलू के घर में घुस गया । लाख खोजने पर भी कर्मू को सुनहरी मछली नहीं मिली । उसने घर का कीमती सामान इकट्ठा किया और चलता बना ।

अगली सुबह मंगलू सोकर उठा । उसने घर का कीमती सामान गायब पाया । उसने बेटे से



कहा—''दीनू, चोर हमारे घर का सारा सामान ले गए।''

दीनू हड़बड़ा कर बिस्तर से उठा। आंगन में पहुंचा,जहां उसने सुनहरी मछली को छिपा रखा था। मछली को वहां देख चैन की सांस ली। फिर वह मंगलू से बोला—''पिता जी, जब तक सुनहरी मछली हमारे पास है,तब तक हमारे पास धन की कमी नहीं रहेगी।''

दिन बीतते गए। सुनहरी मछली का प्रदर्शन कर दीनू ने काफी धन बटोर लिया। सुनहरी मछली की खबर राजमहल तक पहुंची। राजा ने अपने मंत्री को मछली लाने भेजा। मंत्री अपने सैनिकों सहित सोनाली गांव पहुंचा। वह दीनू से बोला—''राजा सुनहरी मछली को देखना चाहते हैं। तुम मछली लेकर दरबार में हमारे साथ चलो।''

यह सुन दीनू की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने सुनहरी मछली के बल पर न जाने क्या-क्या सपने संजोए थे। वह बोला—''मैंने बहुत मेहनत से मछली पकड़ी है। मैं राजा को मछली कैसे दे दूं?''

''तुम मछली हमारे हवाले कर दो। वर्ना तुम मारे जाओगे।''-आंखें तरेरते हुए मंत्री ने कहा।

दीनू समझ गया कि भलाई इसी में है कि मछली दे दूं। फिर भी यदि कुछ धन मिल जाए, तो ठीक ही रहेगा। ऐसा सोच कर वह बोला—''मंत्री जी, यह मछली हमारे परिवार की आमदनी का साधन है। इस मछली के बिना हम भूखों मर जाएंगे। आप हमें मछली के एवज में कुछ धन दिला दें, तो आपकी बड़ी कृपा होगी।''

मंत्री ने मछली के बदले दीनू को धन देने का वायदा कर दिया। वह दीनू को साथ ले मछली सहित राजमहल की ओर रवाना हो गया। उधर राजमहल में पड़ोसी राज्यों से मेहमान आए थे। नगर के लोगों की भीड़ देखते ही बनती थी। सभी उत्सुकता से सुनहरी मछली की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हुईं। तभी मंत्री एक जार को काले कपड़े से ढककर दरबार में उपस्थित हुआ। सभी की नजरें जार की ओर थीं।

राजा का इशारा पाते ही मंत्री ने जार से कपड़ा हटा दिया। सभी हैरान थे। क्योंकि जार में साधारण मछली थी। मंत्री के होश गुम हो गए। राजा आगबबूला हो उठा। बोला—''मंत्री जी, सुनहरी मछली कहां है? यह तो साधारण मछली है।''

—''लगता है, दीनू ने चतुराई से मछली बदल दी है।''

''उसे फौरन यहां लाओ।''—राजा चिल्लाया।

सैनिकों ने दीनू को राजा के सामने खड़ा कर

दिया ।

राजा बोला—"दीनू, तुमने हमें धोखा दिया है । बताओ, सुनहरी मछली कहां है ? वरना जेल में बंद हो जाओगे ।"

"महाराज, मैंने सुनहरी मछली ही मंत्री जी को सौंपी थी । पता नहीं यह अदल-बदल कैसे हो गई ?"—दीनू ने गिड़गिड़ाते हुए कहा ।

"यह झूठ बोलता है । इसे कैदखाने में डाल दो । जब तक सुनहरी मछली का पता न बताए, इसे छोड़ा न जाए ।"—राजा ने हुक्म दिया ।

दीनू को मछली की चेतावनी याद आई । वह बोला—"महाराज, मुझे मछली की चेतावनी याद आ रही है । उसने कहा था— 'मुझे भी स्वतंत्रता उतनी ही प्यारी है जितनी कि मनुष्यों को होती है ।' मेरा विश्वास है कि इस मछली का रंग फिर से सुनहरी हो सकता है । मैंने सुनहरी मछली को बंधक बना रखा था । अतः उसने मुझे शाप दे दिया । यह सब उसी के शाप का फल है ।"

यह सुन, राजा ने सोचा—'हो सकता है कि दीनू ठीक बोल रहा हो ।' उसने कहा—"ठीक है लड़के ! हम तुम्हें एक मौका और देते हैं । यदि यह मछली फिर से सुनहरी हो गई तो हम तुम्हें छोड़ देंगे, नहीं तो कैदखाने में रहोगे ।"

दीनू ने यह बात मान ली । उसने राजा को गांव आने का निमंत्रण दिया । फिर उस मछली को लेकर अपने गांव लौट गया ।

सोनाली गांव में उस दिन बहुत भीड़ थी । सारा गांव चमक रहा था । नियत समय पर वहां राजा आया । दीनू के हाथ में जार था । जार में बंद मछली उछल रही थी, मानो उसे अपने स्वतंत्र होने का आभास हो गया हो । दीनू ने ठीक उसी स्थान पर मछली को छोड़ दिया जहां से उसे पकड़ा था । मछली नदी में तैरने लगी । परंतु यह क्या ! मछली तैरती हुई दूर निकल गई पर उसने रंग नहीं बदला । राजा गुस्से से बोला—"दीनू, मछली ने अपना रंग नहीं बदला । मछली को तो अब तक सुनहरे रंग का हो जाना चाहिए था । अब तुम सजा भुगतने को तैयार हो जाओ ।"

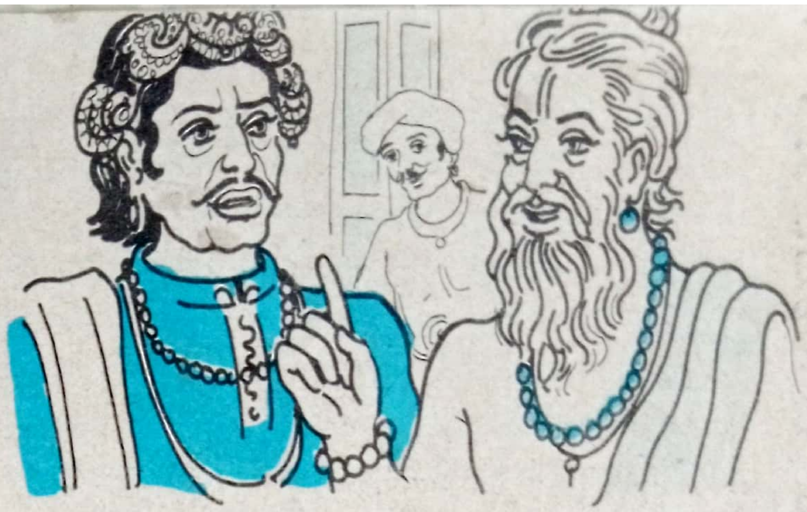
राजा का इतना कहना था कि सबकी आंखें चौंध गईं । उन्होंने देखा—मछली का रंग सुनहरी हो गया था । सारी नदी सुनहरी हो गई थी । दीनू ने चैन की सांस ली ।

राजा को अब दीनू की बात पर विश्वास हो गया । उसने कहा—"सुनहरी मछली का कहना ठीक था । हर प्राणी खुली हवा में सांस लेना चाहता है । सबको स्वतंत्रता अच्छी लगती है ।" फिर उसने दीनू को ढेर सारे उपहार दिए । ●



मुंहमांगा इनाम

—नागेश पांडेय 'संजय'



एक था राजा विचित्रसेन। था भी वह बहुत विचित्र। ऊटपटांग बातें सोचता और आदेश दे डालता। उसकी सनक की कोई थाह न थी।

एक बार उसने ढिंढोरा पिटवाया—"जो आदमी राज्य के सबसे बड़े मूर्ख को दरबार में लाएगा, उसे मुंहमांगा नाम मिलेगा।"

यह सुनकर लोगों में होड़ लग गई। लोगों का मूर्खों को लेकर दरबार में आना शुरू हुआ। राजा उनकी कारगुजारी सुनता, हंसता, लोटपोट होता। लेकिन रटा हुआ निर्णय सुनाता—"यह तो सामान्य-सी मूर्खता हुई। भाग जाओ यहां से।" लोग मन मसोस कर लौट जाते थे।

एक दिन एक साधु दरबार में आया। राजा उसे देखकर हंसा। बोला—"क्या तुम्हीं मूर्ख हो और खुद अपनी कारगुजारियां सुनाओगे?"

—"नहीं महाराज, मैं तो कारगुजारियां सुनाने आया हूं।"

"मूर्ख को साथ क्यों नहीं लाए?"—राजा बोला। साधु ने उत्तर दिया—"वह मूर्ख यहीं है, महाराज! उसका नाम आपको एक शर्त पर बताऊंगा।"

—"क्या शर्त है तुम्हारी?"

—"मूर्ख की कारगुजारियां सुनने के बाद ही आप कोई निर्णय लेंगे।"

"मुझे मंजूर है। बताओ कौन है वह मूर्ख और सुनाओ उसके कारनामे।"

साधु बोला—"वह मूर्ख कोई और नहीं, स्वयं आप हैं।"

"मैं! तुमने मुझे मूर्ख कहा।"—राजा की आंखों से चिनगारियां फूट पड़ीं।

साधु बोला—"महाराज, आप वचन दे चुके हैं कि मूर्ख की कारगुजारियां सुनने के बाद ही आप कोई निर्णय लेंगे।" राजा क्रोध का घूंट पीकर रह गया। बोला—"जल्दी सुनाओ।"

साधु ने कहा—"महाराज, आप अपना राज-काज भूलकर बेकार के तमाशों में खुद को उलझाए हुए हैं। लोग मूर्खता के मनगढ़ंत किस्से आपको सुनाते हैं। खेतों की फसलें सूख रही हैं। चोर-उचक्के मौके का फायदा उठा रहे हैं। पड़ोसी राजा ने हमारे राज्य पर आक्रमण करने का पूरा मन बना लिया है।"

यह कहकर साधु चुप हो गया। राजा का क्रोध उतर गया था। उसने गंभीर होकर कहा—"हां, वास्तव में मुझसे बड़ा मूर्ख कोई और नहीं। मांगो, अपना मुंहमांगा इनाम मांगो।"

"मैं आपसे राज्य मांगता हूं।"—साधु बोला। यह सुन, दरबार में सन्नाटा छा गया। भारी मन से राजा ने कहा—"मैं अपना राज्य आपको सौंपता हूं।"

साधु ठहाका मारकर हंस पड़ा। बोला—"महाराज, आपने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि मुंहमांगे इनाम के रूप में कोई आपसे आपका राज्य भी मांग सकता है। यह सब आपके बिना सोचे-विचारे लिए गए निर्णयों का फल है। मुझे राज्य नहीं चाहिए। राज्य आपका है, आपका ही रहेगा।" यह कहकर साधु चल दिया।

यह देख, राजा हक्का-बक्का रह गया। उसने साधु के चरण पकड़ लिए। कहा—"आपने मेरी आंखें खोल दीं। मैं आपको नहीं जाने दूंगा। आप यहीं, मेरे साथ रहें। यदि आप मेरी बात मान लें तो मैं समझूंगा कि आपने मेरी गलतियों को माफ कर दिया है।" यह सुनते ही साधु के कदम वहीं रुक गए। ●

बड़ा कौन

—मधु भटनागर

ग्रीस में ज्यूक नाम का एक प्रसिद्ध चित्रकार रहता था। वह फल-फूलों के इतने सजीव चित्र बनाता था कि देखने वाले धोखा खा जाते थे।

एक बार उसने सेबों के चित्र बनाए। वे इतने ज्यादा सजीव लगते कि देखने वाले पहचानने में गलती कर बैठते। यहां तक कि बाहर से चिड़िया उड़कर अंदर आई और उन्हें सचमुच का सेब समझ, चोंच मारकर खाने की कोशिश करने लगी। यह देख ज्यूक खुशी से फूला न समाया। अन्य सभी लोगों ने भी उसकी खूब प्रशंसा की। कहा कि उसने एक अद्भुत चित्र बनाया है।

अपने चित्रों की इतनी तारीफ सुनकर, धीरे-धीरे ज्यूक घमंडी होता चला गया। वह समझने लगा कि संसार में उससे ज्यादा अच्छा चित्रकार न कभी था, न है, और न होगा।

उसी शहर में परस नामक एक अन्य चित्रकार भी रहता था। वह भी बहुत सुंदर व सजीव चित्र बनाता था, परंतु उसे अपनी चित्र-कला पर कोई घमंड नहीं था। ज्यूक की चित्र-कला एवं उसके घमंड के विषय में भी परस ने सुन रखा था।

ज्यूक ने स्वयं को संसार का सर्वश्रेष्ठ चित्रकार मान रखा है, यह सुनकर परस ने निश्चय किया कि वह भी एक चित्र बनाएगा। फिर ज्यूक को अपना चित्र दिखाने के लिए अपने घर बुलाएगा।

परस ने एक भोले-भाले लड़के का चित्र बनाया। उसके आगे एक खूबसूरत जालीदार पर्दा भी पेंट किया। चित्र को देखकर लगता था, मानो लड़के की पेंटिंग को पर्दे से ढक दिया गया हो।

चित्र पूरा बनने के बाद परस ने विनय पूर्वक ज्यूक को अपने घर आमंत्रित किया। ज्यूक ने सहर्ष उसका निमंत्रण स्वीकार किया और परस के घर जा पहुंचा। परस ने उसे चित्र दिखाया तो थोड़ी देर वह उसे देखता रहा। फिर बोला—"चित्र के आगे से यह पर्दा हटाओ

ढम-ढम

—मनोज राय

बहुत पहले भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में एक गांव था—मिसमी। वहां एक अनाथ मछुआरा रहता था—ताराओन। एक दिन वह मछली पकड़ने गया। उस दिन मछली के स्थान पर एक नाग उसके जाल में फंस गया।

दरअसल वह नाग, नाग लोक का राजा था। अपने पिता को जाल में फंसा देख कर नाग - कन्या घबराई। उसने सुंदर स्त्री का रूप धारण कर लिया। वह ताराओन के पास पहुंचकर बोली—"यदि तुम मेरे पिता जी को छोड़ दोगे, तो मैं तुमसे विवाह कर लूंगी।"

युवक मान गया और उसने नाग को छोड़ दिया। नाग कन्या ने उससे विवाह कर लिया।

ताराओन और नाग कन्या का विवाह गांव वालों को नहीं भाया। उन्होंने विवाह की खबर राजा को दे दी। राजा ने ताराओन को बुलाकर कहा—"तुमने हमारी परम्पराओं को तोड़ा है। तुम्हें दंड मिलेगा। कल सुबह तुम्हारे और मेरे मुर्गे में लड़ाई होगी। जो हारेगा, उसे गांव छोड़ कर जाना होगा।"

युवक डर गया। उसने घर आकर सारी बातें पत्नी को बताई। नाग कन्या बोली—"इसमें इतना डरने की क्या बात है? मैं अभी नाग लोक से एक बलवान मुर्गा ले आती हूं।"

यह कहकर वह नाग लोक चली गई। कुछ देर बाद वह मुर्गा लेकर आ गई।

दूसरे दिन राजा और युवक के मुर्गे आपस में भिड़ गए। नाग लोक का मुर्गा अधिक बलवान था, इसलिए राजा का मुर्गा हार गया।

परंतु राजा बोला—"ताराओन! इससे फैसला नहीं हो पाया है। अतः कल सुबह जो लोहित नदी को उलटी दिशा में बहा देगा, वही विजयी होगा।"



ताकि चित्र स्पष्ट दिखाई दे सके। इस पर परस ने मुसकराकर कहा—''यह कोई वास्तविक पर्दा नहीं है। यह तो चित्र में ही बना है।''

यह सुनकर ज्यूक की गर्दन शर्म से झुक गई। वह परस से बोला—''तुम तो मुझसे भी बड़े चित्रकार निकले। पक्षी नासमझ होते हैं जो मेरे चित्रों को देखकर धोखा खा जाते हैं, परंतु मैं तो एक सफल चित्रकार होते हुए भी असली और नकली पर्दे का भेद नहीं पहचान पाया। तुमने मुझे अच्छी सीख दी है, अब मैं कभी घमंड नहीं करूंगा।''

इतना सब कहने के बाद भी ज्यूक के मन में बहुत ईर्ष्या जागी। उसने एक तसवीर बनाई। उसमें एक बच्चा हाथ में अंगूरों का गुच्छा लिए खड़ा था। तसवीर की सजीवता देख लोग वाह-वाहकर उठे। बाहर से चिड़िया उड़कर आई और अंगूरों के गुच्छे पर चोंच मारकर खाने का प्रयास करने लगी। यह देखकर ज्यूक उदास हो गया। लोगों ने उसकी उदासी का कारण पूछा, तो वह बोला—''आमतौर से चिड़िया बच्चों को देखकर उड़ जाती हैं। लेकिन मेरे बनाए चित्र में लड़के की ओर चिड़िया का ध्यान ही नहीं है, जबकि वह अंगूरों को वास्तविक समझ रही हैं। मेरी कला में अभी बहुत कमी है।यही कारण है मैं चित्र में बने लड़के को वास्तविक न बना पाया। शायद मुझे अभी अभ्यास की बहुत जरूरत है।'' उस दिन से ज्यूक ने घमंड करना छोड़ दिया और नए से नए चित्र बनाने में जुट गया। ●

ताराओन के लिए लोहित नदी के बहाव को उलटी दिशा में मोड़ना असंभव था। उसने यह बात नाग कन्या को बताई। उसने पति को ढाढस बंधाया—''डरो नहीं! मेरे पिता जी तुम्हारी मदद करेंगे।'' वह अपने पिता जी के पास गई। नाग कन्या ने अपने पति की परेशानी बताई। पिता ने उसे सुंदर टोकरी दी। कहा—''टोकरी को नदी में डालते ही, धारा उलटी दिशा में बहने लगेगी। नाग कन्या अपने घर पहुंची। उसने ताराओन को सारी बातें बता दीं।।

ताराओन ने टोकरी लोहित नदी में डुबा दी। तुरंत नदी का बहाव उलटकर राजा के महल तक पहुंच गया। ताराओन खुशी से झूम उठा। वह राजा से बोला—''राजन! मैं जीत गया हूं। शर्त के अनुसार आपको यह गांव छोड़कर चले जाना चाहिए।''

परंतु राजा कहां हार मानने वाला था? वह बोला—''इस निर्णय को भी अंतिम नहीं माना जाएगा। अब हमें युद्ध करना चाहिए। इसी युद्ध से निर्णय होगा।''

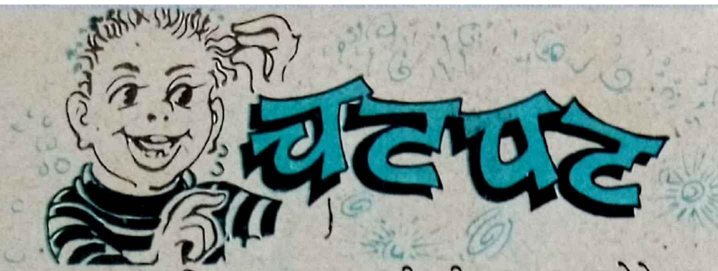
ताराओन भागा-भागा अपनी पत्नी के पास पहुंचा और सारी बातें बताईं। राजा के पास बड़ी फौज थी। परंतु ताराओन तो अकेला था। नाग कन्या उसकी परेशानी सुनकर फिर नाग लोक में पहुंची। वहां से वह सोने का ढोल और उसे बजाने की छड़ी ले आई।

सुबह राजा अपनी फौज के साथ लड़ाई के लिए आया। ताराओन पहले से ही तैयार था। राजा और फौज को देखकर नाग कन्या ढोल बजाने लगी। ढोल की ढम-ढम सुनकर वृक्ष, जानवर, घास-पत्ते आदि नाचने लगे।

राजा और सैनिक भी हथियार फेंककर झूमने लगे।

अब ताराओन और उसकी पत्नी नाग कन्या गांव के राजा-रानी बन गए। आज भी अरुणाचल के वंशज ताराओन जनजाति के नाम से जाने जाते हैं।

(पूर्वांचल की लोक कथा)



□ एक मित्र— तुम अपनी भी कुछ सुनाओगे या खड़े-खड़े मेरा मुंह ही देखते रहोगे ?
दूसरा मित्र— बोलूं तो तब, जब तुम चुप हो जाओ । और हां, मैं तुम्हारा मुंह नहीं, बल्कि तुम्हारी जेब देख रहा हूं ।

□ अध्यापक— सुरेश, कल तुम झूठा बहाना बनाकर यहां से जल्दी घर चले गए थे । आज क्या इरादा है ?
सुरेश— हां सर, आज मैं सच कहकर अपने घर चला जाऊंगा ।

□ एक पड़ोसी— तुमने घर में बिल्ली क्यों पाल ली ?
दूसरा पड़ोसी— पालना तो नहीं चाहता था, पर तुम्हारे घर में रहने वाले चूहों ने मेरी नाक में दम कर दिया । इसीलिए बिल्ली पालनी पड़ी ।

□ कवि— कहिए तो मैं एक ही कविता सुनाकर अपना स्थान ग्रहण कर लूं ?
एक श्रोता— मान्यवर ! नेकी और पूछ-पूछ ।

□ एक नाविक— यदि आज मेरी नाव डूब जाए, तो तुम क्या सबक लोगे ?
दूसरा नाविक— यही कि नाव में आदमी के साथ जानवरों को नहीं बैठाना चाहिए ।

□ अजय— अरे भाई, कमाल हो गया । बाग वाले को चकमा देकर निकल आया ।
विजय— तुम चकमा देकर नहीं, बल्कि खाकर आए हो । अपनी जेब टटोलो, खाली मिलेगी । तुम्हारा पर्स बाग में ही गिर गया है । तभी तो माली ने तुम्हें भागने से रोका नहीं ।

□ एक मित्र— तुम्हारी बातें सुनकर सिर में दर्द होने लगा । कुछ काम की बातें करो ।
दूसरा मित्र— मुझे मालूम था, तुम यही कहोगे, इसलिए सिर दर्द की गोली साथ लाया था । पहले इसे खा लो, फिर काम की बातें होंगी ।

□ मकान मालिक— लगता है, तुमने सप्ताह भर से घर की सफाई ही नहीं की ।
किराएदार— पर मैं तो यहां कल ही आया हूं ।

□ पिता— बेटा, हर काम समय पर करना चाहिए ।
बेटा— ठीक है, मैं आपको याद दिला दूं कि आप मुझे जेब खर्च समय पर नहीं देते । अतः मेरे सारे काम गड़बड़ हो जाते हैं ।

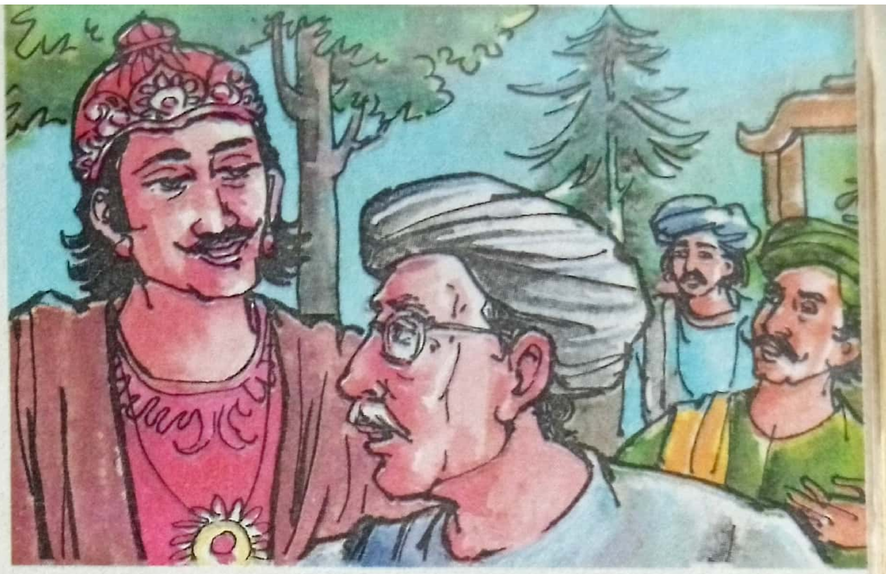
□ संजय— मैं किसी से दोस्ती नहीं तोड़ता ।
अजय— हां, क्योंकि दोस्त तुम्हें अपने आप छोड़ देते हैं ।

□ डाक्टर— भाई, मैं समय से मरीजों को देखता हूं ।
बबलू— पर मुझे क्या मालूम था कि पड़ोसी का लड़का मुझसे अभी लड़ बैठेगा ?

□ सुरेश— रुपया कमरे में गिरा है, तो यहां क्यों खोज रहे हो ?
नरेश— क्योंकि तुम यहां हो ।

□ एक आदमी— बिजली तो समय पर आती नहीं, पर बिजली का बिल समय पर जरूर आ जाता है ।
अधिकारी— हां, क्योंकि यहां के डाकखाने में काम करने वाले लोग हर काम जल्दी से निपटाते हैं ।





तेनालीराम ३२१

शाल पर इत्र

राजा कृष्णदेव राय महल के बगीचे में टहल रहे थे। शाम का समय था। साथ में मंत्री, सेनापति और तेनालीराम भी थे। विचार विमर्श चल रहा था।

अचानक गुलाब-बाड़ी के पास आकर राजा रुक गए। मंत्री से बोले—''चमेली-कुंज के पास से गुजरता हूं, तो चमेली की गंध, मोगरा के पास से निकलता हूं, तो मोगरा की गंध और यहां गुलाब की। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि सारे पौधे तो रहें, किंतु गंध एक जैसी आए ?''



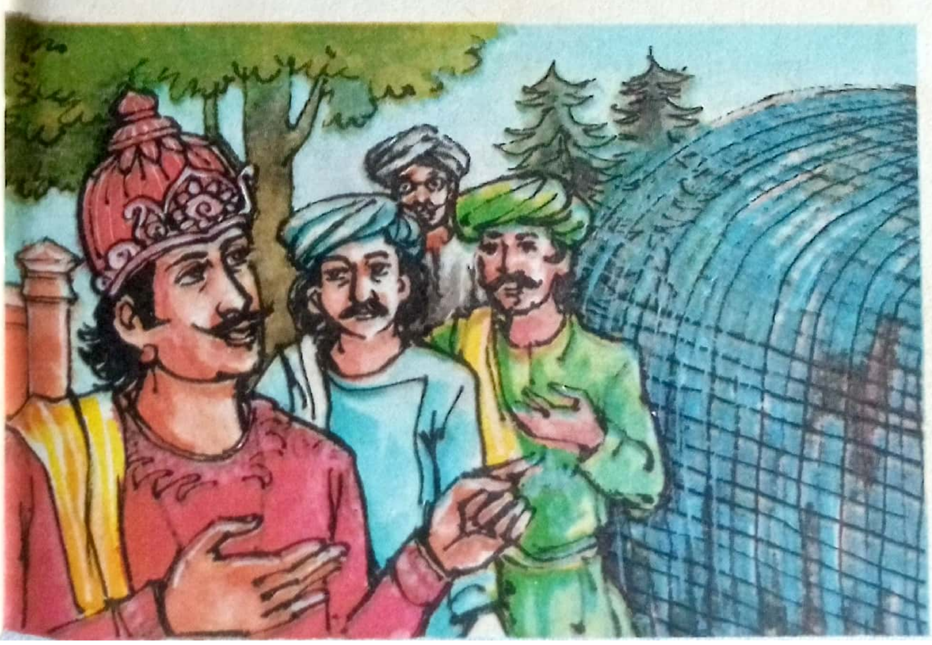
मंत्री अवाक। राजा ने सेनापति की ओर देखा। वह बोला—''ऐसा कैसे हो सकता है महाराज ! फूलों की गंध एक जैसी हो ही नहीं सकती।'' फिर तेनालीराम की ओर संकेत करके कहा—''तेनाली जी चाहें, तो शायद यह भी हो सके।''

राजा ने तेनालीराम की ओर देखा। तेनालीराम ने बात बदलते हुए कहा—''सर्दी शुरू हो गई है महाराज। आप शाल ओढ़ लें।''



सुनकर राजा को भी सर्दी-सी महसूस हुई। तुरंत तेनालीराम महल में गया। शाल लाकर राजा को ओढ़ा दिया। राजा फिर घूमने लगे। चमेली-कुंज के पास आकर रुक गए। बोले—''कमाल है, अब यहां मुझे गुलाब की सुगंध आ रही है।''

आगे मोगरा खिला था। वहां भी राजा को गुलाब की सुगंध आई, तो बोले—''यह तो चमत्कार हो गया। अब हर ओर एक जैसी ही गंध आ रही है।''



मंत्री, सेनापति एक दूसरे को देखने लगे। राजा ने तेनालीराम से कहा—''सच बताओ, तुमने ऐसा कौन-सा जादू कर दिया है ?''

''केवल आपके शाल में गुलाब का इत्र छिड़क दिया था महाराज।''—तेनालीराम बोला।

राजा तेनालीराम की पीठ पर हाथ रखकर जोर से हंस पड़े !


दादाजी को है पसंद, दादीमाँ को भी सही,
पापा भी चोरी से खाते, मम्मी तो कम नहीं
हमसब भी जिसके मतवाले, है वही मॉर्टन यही॥
SCRABBLE
MORTON
SWEETS
उस दिन क्या ही आनन्ददायक स्क्रैबल खेल हो रहा था और उसे जमाने का श्रेय था मॉर्टन को।
मेरे परिवार की तो सदा से ही पहली पसंद रही है—मॉर्टन।
उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा साथ ही अनेकानेक जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध,
ग्लूकोज़ और चीनी की पौष्टिकता से भरपूर।
चॉकलेट एवं कोकोनट कुकीज़, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ,
लेक्टोबोनबोन्स, मैंगोकिंग एवं अन्य अनेकों मनलुभावन स्वादों में उपलब्ध।
आहहा! क्या लाज़वाब स्वाद!
जीवन का अनुपम माधुर्य
TOFFEE
मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार
CC/M-3/93 HIN
चेतावनी : MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अपर गैंगेज सूगर एण्ड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापारचिन्ह है। किसी भी प्रकार से व्यापारचिह्न अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।


ऐसा भी होता है!
शाम का वक्त था. सोनू स्कूल से घर लौट रहा था. अचानक तेज हवा चलने लगी...
और एक उड़न-तश्तरी आसमान से उतरी और ठीक सोनू के पास आकर रुक गई...
उसमें से एक बौना-सा जीव निकला और सोनू से बोला...
"मुझसे दोस्ती करोगे?"
"त... त... तुम हो कौन?"
"मैं मंगल ग्रह से आया हूँ. दोस्ती करने."
सोनू के मुँह से निकल गया
"ठीक है"
"तो ये लो हमारी दोस्ती की निशानी. मेरी मनपसंद चीज़ जो तुम्हारी ही धरती का जादू है."
"जादू?"
"बिल्कुल. न गुठली न छिलका आम का खास मज़ा"
"आम? ऐसी सर्दी में! जल्दी दो."
"लो दोस्त, खोलो मुँह और कभी आँखें बंद टाइट और यू लो मेरी प्यारी मैंगो बाइट"
"हं! मैंगो बाइट!"
सोनू खुशी से उछल पड़ा. तो उसकी फेवरेट मैंगो बाइट मंगल ग्रह में भी फेवरेट है!
जैसे ही उसने मैंगो बाइट मुँह में डाली वह दोस्त ने मैंगो बाइट से भरा हुआ एक बॉक्स थमा दिया और "फिर मिलेंगे" कह कर उड़ गया.
पारले
मैंगो बाइट


मेरा अमूल चॉकलेट चिड़ियाघर
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
Amul
CRUNCH
MILK CHOCOLATE
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
Amul
Amul
ORANGE
Amul
CRISP
Amul
Badambar
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट
वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फ़ेडरेशन लिमिटेड
आणंद ३८८ ००१.
Amul
The Taste of India

नदी में नथ

— जाकिर अली 'रजनीश'

बहुत समय पहले की बात है। चमनपुर में एक ग्वाला रहता था। नाम था नंदू। वह बहुत ईमानदार आदमी था। उसके पास सात गायें थीं। सूरज निकलने से पहले वह उठता, गायों को चारा-पानी देता। फिर नहा-धोकर गायों का दूध निकालता। उन्हें चरागाह भेज देता और स्वयं दूध बेचने चला जाता। दोपहर तक दूध बेचकर लौट आता। थोड़ी देर आराम करता। तब तक गायें लौट आतीं। वह फिर उनके लिए सानी-पानी में लग जाता।

ग्वाले की पत्नी थी चपला। वह बहुत चतुर और लालची थी। वह हमेशा ऊंचे-ऊंचे सपने देखा करती। उसकी इच्छा थी कि वह खूब अच्छा पहने, खूब अच्छा खाए। हमेशा नंदू को दूध में पानी मिलाने के लिए कहती। नंदू को पत्नी की यह बात पसंद न आती। वह उसे डांटता। चपला चुप रह जाती और मन ही मन नंदू को भला-बुरा कहती।

नंदू के ग्राहक उस पर बहुत विश्वास करते थे। वह सबको खरा दूध देता और अच्छे पैसे लेता। उसका दूध महंगा तो जरूर था, पर था एकदम शुद्ध। इसीलिए सभी लोग उसकी इज्जत करते थे, इससे नंदू हमेशा खुश रहता।

एक दिन वह गाय दुह रहा था। उसी समय उधर से एक कौआ उड़ता हुआ निकला। उसके पंजों में रोटी का एक टुकड़ा अटका था। अचानक वह टुकड़ा उसके पंजों से छूट गया और सीधा गाय की पीठ पर आ गिरा। इससे गाय चौंक गई और तेजी से उछल पड़ी। उछलने से गाय का एक पैर नंदू के दाहिने पैर पर पड़ा। वह चबूतरे से नीचे गिर पड़ा। सारा दूध बह गया। गिरने से नंदू के हाथ की हड्डी टूट गई।

चपला ने यह देखा, तो दौड़ पड़ी। नंदू को उठाया। हड्डी टूट जाने की वजह से दर्द होने लगा। दर्द जब सहा न गया, तो उसकी आंखों में आंसू आ गए। चपला दौड़कर वैद्य जी को बुला लाई। उन्होंने नंदू के हाथ पर लेप किया, खपच्चियां बांधीं फिर आराम करने के लिए कहकर चले गए।

अब घर का सारा बोझ चपला पर आ पड़ा। खाना बनाने से लेकर गायों को चारा देने, दूध दुहने और बेचने भी उसे ही जाना पड़ता। इसके अलावा उसे नंदू की देखभाल भी करनी पड़ती। नंदू चुपचाप बैठा तमाशा देखता। भला एक हाथ से वह कर भी क्या सकता था? उसे अपने आप पर गुस्सा आता। कभी-कभी तो वह ऊबकर खुद ही काम करने लगता। पर चपला उसे मना कर देती। बेबस नंदू मन मसोसकर रह जाता।

अब चपला की चांदी थी। वह मनमानी करती। उसे रोकने वाला तो बिस्तर पर पड़ा था।



दूध बेचने जाते समय राह में एक नदी पड़ती थी। चपला नदी से थोड़ा-सा पानी मिला लेती। अब दूध ज्यादा पैसे में बिकता। कोई जब पूछता कि दूध पतला क्यों है, तो वह कह देती कि बरसात का महीना है इसलिए दूध पतला है। नंदू को पता न चले, इसलिए वह फालतू पैसे अपने पास अलग इकट्ठे करती रहती।

नंदू जानता था, चपला बहुत लालची है। वह बार-बार पूछता कि तुम नदी से पानी तो नहीं मिला लेतीं? पर चपला हर बार साफ झूठ बोल देती। भोला-भाला नंदू उसकी बात पर विश्वास कर लेता।

धीरे-धीरे एक माह बीत गया। नंदू की हड्डी जुड़ गई। वह थोड़ा-बहुत काम भी करने लगा। लेकिन दूध बेचने अब भी चपला ही जाती थी।

एक महीने में चपला के पास ढेर सारे पैसे इकट्ठे हो गए। एक दिन दूध बेचकर लौटते समय, वह सुनार की दुकान पर जा पहुंची। अपने पैसों से उसने अच्छी-सी नथ खरीदी और खुशी-खुशी घर की ओर चल पड़ी।

नदी के पास पहुंचकर उसने सोचा —'मैं नथ पहनकर देखूं! पता तो चले, इसे पहनकर कितनी सुंदर दिखती हूं।'

यह सोचते हुए वह नदी किनारे खड़ी हो गई। नदी में उस समय पानी कम था। वह एकदम शांत थी। चपला ने नथ निकाली और पानी में अपनी परछाईं देखकर उसे पहनने लगी।

अचानक नथ उसके हाथ से छूट गई। नथ को पकड़ने के चक्कर में चपला का पैर फिसला। वह नदी में गिर पड़ी। नथ मिलना तो दूर, उलटे एक बड़े पत्थर से टकराकर उसके माथे में चोट लग गई। खून बहने लगा।

पानी का पैसा पानी में जा मिला। ऊपर से चोट भी लगी। चपला ने साड़ी के पल्लू से खून पोंछा और भारी कदमों से घर की ओर चल पड़ी। उसने मन ही मन फैसला कर लिया कि अब कभी वह दूध में पानी नहीं मिलाएगी। •

सुनार का खोट

सुनार के बारे में कहते हैं कि किसी को नहीं बख्शता। कोई कैसा ही परिचित हो, खोट के बहाने कुछ न कुछ चोट कर ही देगा। एक बार किसी बादशाह ने सुनार से पूछा—"कोई तुम्हें सोना दे, तो उसमें से कितना गड़प कर सकते हो?"

सुनार बोला—"चाहें तो सौ फीसदी—यानी सारा ही।"

बादशाह चौंककर बोला—"हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे।" कहा—"हमें सोने की मूर्ति गढ़वानी है। शर्त यह है कि मूर्ति महल में ही गढ़नी होगी।"

बादशाह ने सुनार को सोना दिलवा दिया। महल में ही सुनार ने काम शुरू कर दिया। बादशाह ने कड़ा पहरा बैठा दिया। सुबह से शाम तक सुनार काम करता, रात को अपने घर चला जाता। आते-जाते उस



पर कड़ी निगरानी रखी जाती कि कुछ ले न जाए।

उधर सुनार ने अपने घर पर पीतल की एक मूर्ति बना ली। वह मूर्ति अपनी स्त्री को सौंप दी।

राजमहल में खरे सोने की मूर्ति तैयार हो गई। उसी दिन सुनार की स्त्री दही का मटका सिर पर रखकर आवाज लगाती हुई निकली—"दही लो, दही।"

सुनार ने कहा कि खटाई के लिए इससे दही खरीद लिया जाए ताकि मूर्ति चमकाई जा सके। भला किसे ऐतराज होता? दही वाली को महल में बुलवा लिया गया। उसकी मटकी में से सुनार ने पीतल की मूर्ति निकाल ली। सोने की मूर्ति उसमें डाल दी।

सुनार की स्त्री ने दही के पैसे लिए और अपनी राह पकड़ी। सोने की मूर्ति सुनार के घर पहुंच गई।

सुनार ने बादशाह को पीतल की मूर्ति ले जाकर दे दी। बोला— "गुस्ताखी माफ हो सरकार, मेरी बात रह गई। आपने सोना दिया था पर यह मूर्ति पीतल की है। सोने की मूर्ति मेरे घर से मंगवा लें।" ●



साठ गांव बकरी ने चरे

एक राजा था, शिकार का शौकीन। एक बार शिकार खेलने गया। जंगल में जानवर का पीछा करते-करते अपने साथियों से बिछुड़ गया।

रात हो गई। भूखा-प्यासा राजा किसी तरह एक किसान के दरवाजे पर पहुंचा। किसान राजा को क्या जाने? किसान ने मेहमान समझकर उसे बैठाया, पानी पिलाया। कुछ देर बाद भोजन बनाकर खिलाया। उसके सोने के लिए बिस्तर लगाया।

राजा किसान से बहुत खुश हुआ। अगले दिन राजा चलने लगा, तो उसने एक पत्ता उठाया। किसान के नाम साठ गांव लिख दिए। किसान को बताया तो वह फूला न समाया। राजा अपनी राह चला गया।

किसान की थी एक पालतू बकरी। बकरी वहां आई और चट से उस पत्ते को चबा लिया। किसान जब तक उसे रोकता, पत्ता बकरी के पेट में पहुंच चुका था। अब किसान करे तो क्या करे? वह किसी तरह रोता-कलपता राजमहल पहुंचा। दरबान उस गंवार को अंदर ही न जाने दें। बहुत हाथ-पांव जोड़ने पर राजा तक पहुंच पाया। राजा ने देखते ही उसे पहचान लिया। राजा कुछ पूछते तभी किसान चिल्लाकर बोला—"माई-बाप, मैं बरबाद हो गया। साठ गांव बकरी ने चबा लिए।"

आसपास के लोग हैरान होकर गंवार किसान को देख रहे थे कि क्या बकता है? लेकिन राजा समझ गया। उसने तांबे के टुकड़े पर खुदवाकर उसे दुबारा आदेश-पत्र दिया। किसान को गांवों का पक्का मालिक बना दिया।

तब से किसी का बड़ा नुकसान होने पर लोग कहते हैं—'साठ गांव बकरी ने चर लिए।' ●

वन की बेटी

—संजय सिन्हा

हिमालय की गोद में बसे नेपाल और भूटान के बीच सिक्किम का राज्य अपनी सुंदरता के कारण लुभा रहा था। चारों ओर हरे-हरे पेड़ और फूलों से लदी हुई डालियां महकती रहती थीं, जिन पर रंग-बिरंगे पक्षी उड़ते रहते थे। उन्हीं जंगलों में सिक्किम की वीर बालाएं सुंदर हिरनियों-सी विचरण करती थीं। वे जब जंगल में घूमने या लकड़ियां अथवा औषधियां लेने जातीं, तो अपने जूड़े में एक छोटी-सी छुरी खोंसकर घर से निकलतीं। उनकी यह छोटी छुरी वन-पशुओं से बचने और जड़ी-बूटियां एकत्र करने में सहायक होती।

बात उन दिनों की है, जब अंग्रेजों का अधिकार सिक्किम पर भी था। उसी समय प्रतापसिंह नाम के एक सरकारी अधिकारी अपनी वीरता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। उनकी बेटी चम्पा बहुत सुंदर थी। चम्पा को खुले जंगल में घूमना बहुत पसंद था। वह भी अपने जूड़े में छोटी छुरी खोंसकर वन में दूर तक चली जाती और वहां से सुंदर-सुंदर फूल चुनकर लाती। उन फूलों के गुलदस्ते बनाकर वह बेहद खुश होती। उसके बालों का जूड़ा सदा सुंदर-सुंदर फूलों से महकता रहता था।

एक दिन चम्पा अपनी छोटी बहन मुग्धा के साथ वन में गई। उस दिन मौसम बड़ा सुहाना था। वे दोनों बहनें इधर से उधर दौड़ती हुई खेल में लग गईं। एक अंग्रेज वहां झाड़ी के पीछे छिपा, दोनों लड़कियों को देख रहा था। वह चम्पा के रूप पर मोहित हो गया। उसने झाड़ी से बाहर आकर चम्पा को पुकारा। भोली-भाली चम्पा उसके पास जाकर खड़ी हो गई।

वह अंग्रेज एकटक चम्पा को देखने लगा। यह बात चम्पा को अच्छी नहीं लगी। वह पीछे लौटने लगी, तभी अंग्रेज ने कहा—''जाओ मत, रुको। तुम नहीं जानतीं कि मैं यहां का अफसर हूं। मैं तुमको पसंद करता हूं। तुम मेरे बंगले पर चलो और सुख से रहो।''

चंचल चम्पा का चेहरा बुझ-सा गया। अब उसकी समझ में आ गया कि अंग्रेज अफसर दुष्ट है। अतः उसने कहा—''तुम्हें मुझ से ऐसी बातें कहते लज्जा नहीं आती?''

अंग्रेज तो अपनी शान में अंधा हो रहा था। उसने लपककर चम्पा का हाथ पकड़ लिया। दूसरे ही क्षण चम्पा एक झटके से हाथ छुड़ाकर गरजती हुई बोली—''साहब बहादुर! अब जरा भी आगे बढ़े, तो खबरदार।''

अंग्रेज साहब के सिर पर मौत खेल रही थी। उसे लगता था कि एक साधारण लड़की उसका कर ही क्या सकती है! उसने चम्पा का हाथ फिर कसकर पकड़ लिया। अतः चम्पा ने बाएं हाथ से अपने जूड़े की छुरी निकालकर उस अंग्रेज की छाती में भोंक दी। अंग्रेज भूमि पर गिरकर तड़पने लगा। चम्पा अपनी बहन मुग्धा के साथ घर लौटी। उसकी छोटी बहन मुग्धा ने अपने पिता से सारी बातें कहीं। इतने में बहुत से अंग्रेज घोड़ों पर चढ़ आए और उन्होंने चम्पा के पिता का घर चारों ओर से घेर लिया। उस घायल अंग्रेज ने अपने साथियों को बताया था कि प्रतापसिंह की लड़की ने बिना कारण ही उसे मारा है।

उसके पिता का घर अंग्रेजों ने घेर लिया है, यह देखकर चम्पा को बहुत क्रोध आया। वह सिंहनी की तरह अपनी छुरी लेकर निकल पड़ी और उन अंग्रेजों को ललकारते हुए बोली—''मैंने तुम्हारे दुष्ट साथी को मारा है। जो भी दुष्टता करेगा, मेरी छुरी प्यासी नागिन की तरह उसका रक्त पी लेगी।''

अंग्रेज एक बालिका का यह साहस और रौद्र रूप देखकर चकित हो गए। जब उन लोगों को पूरी बात का पता चला, तब वे सब बगैर कुछ बोले चुपचाप वहां से लौट गए। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. नए साल में सब कुछ— अनोखा होगा। (यहां/वहां)

२. सपने में देखी मैंने— की एक कुटी। (फूलों/फूस)

४. सच अम्मां, यह— तो मेरी जान ले लेगा! (जाड़ा/जादू)

८. सोने-सी फसल थी, मगर— ने सब तबाह कर दिया। (पानी/पाले)

९. अजी, इधर से— बच्चे तो नहीं गुजरे बूढ़ी नानी! (दो/वे)

११. हां बेटी, — का त्याग करने में ही सुख है। (धन/मान)

१२. सुंदर-सुंदर फूलों वाली एक बेल।

ऊपर से नीचे

३. मैंने कहा था न,— की पोशाक को इनाम मिलेगा। (भालू/भाई)

५. लेकिन मित्र, तुम्हारा कल का— तो बहुत कड़वा था। (पाठ/पान)

६. — पथिक को मिल जाती है तरु की ठंडी छाया! (रुके/थके)

७. उस विचित्र महल से निकलकर आया, तो देखा, सामने वही— है। (कुआं/कुली)

१०. इसे चूहे का लकड़दादा भी कहते हैं।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३१३

नाम ________________

उम्र ______ पता ________________

____



नं. ज्ञा. प. ३१३



आधा-आधा

—डा. सुरेन्द्रकुमार 'महाचन्द्र'

एक बादशाह को अपने बादशाह होने का बड़ा घमंड था। इस बात से उसके राज्य के सभी कर्मचारी परेशान थे। प्रजा भी बहुत दुखी थी। वह बिना बात लोगों को कड़े से कड़ा दंड दे देता था।

एक बार राज्य में कहीं से एक संत पधारे। बादशाह को जब इस बात का पता चला, तो उसने तरह-तरह से संत को परेशान किया। उनका अपमान करवाया। मगर संत ने सब कुछ सह लिया और बादशाह से कुछ नहीं कहा। जब बादशाह के खूब परेशान करने पर भी संत ने राज्य नहीं छोड़ा, तो बादशाह ने खुलेआम कहला भेजा—"या तो तुम राज्य छोड़ दो, अन्यथा तुम्हें कोड़े लगाते हुए पूरे राज्य में घुमाया जाएगा।"

संत पर इस बात का भी कोई असर नहीं हुआ। वह और उत्साह से प्रवचन करने लगे। बादशाह को यह बात बड़ी बुरी लगी। उसने संत को कैद कर अपने सामने पेश करने का हुक्म जारी कर दिया। सैनिक गए और संत को गिरफ़्तार कर ले आए।

बादशाह ने संत से कहा—"मैंने तुम्हें पहले ही चेतावनी दी थी, मगर हे ढोंगी, तुमने मेरा राज्य नहीं छोड़ा। अब तुम्हारे शरीर पर अनगिनत कोड़े भी लगेंगे और पूरे राज्य में घुमाया जाएगा।"

बादशाह की बात सुनकर संत बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए और उलटे मुसकराने लगे। इस पर बादशाह और अधिक क्रोधित हो उठा। चीखकर बोला—"हे मूर्ख! इतना कठोर दंड सुनकर भी तू मुसकरा रहा है।"

संत ने मुसकराते हुए कहा—"हे बादशाह! बात ही कुछ ऐसी है कि मुझे तुम पर तरस भी आ रहा है और हंसी भी।"

"वह क्यों?" —बादशाह ने फिर चीखते हुए कहा।

तब संत ने बादशाह से पूछा—"हे बादशाह! कल्पना करो, तुम कहीं ऐसे स्थान में भटक गए हो, जहां पानी न मिले। तुम प्यास से इतने व्याकुल हो कि जान निकली जा रही हो। उसी समय कोई आधा प्याला गंदा पानी देते हुए तुमसे आधा राज्य बदले में मांगे, तो तुम क्या करोगे?"

"यह भी कोई पूछने की बात है। मैं बिना सोचे-समझे उसे आधा राज्य दे दूंगा। कम से कम जान तो बचेगी।" —बादशाह ने उत्तर दिया।

संत ने पुनः पूछा—"लेकिन यदि उस गंदे पानी के कारण तुम बीमार पड़ जाओ और मरणासन्न हो जाओ। ठीक उसी समय तुम्हारा इलाज करने वाला हकीम तुमसे ठीक करने के बदले में, बाकी बचे हुए आधे राज्य की मांग करने लगे, तो तुम क्या करोगे?"

बादशाह ने झट से कहा—"मैं तुरंत उसे बाकी आधा राज्य भी दे दूंगा। जब जीवन ही नहीं रहेगा, तो राज्य का मैं क्या करूंगा?"

इस पर संत ने मुसकराते हुए कहा—"तब तो हे बादशाह, तुम्हारा घमंड बिल्कुल व्यर्थ है। इसे त्याग देना ही अच्छा है। जो राज्य मात्र आधा प्याले गंदे पानी के कारण ही समाप्त हो जाए, उस पर घमंड कैसा!"

बादशाह की समझ में सब कुछ आ गया था। उसने तुरंत संत के पैर पकड़ लिए और जीवन में कभी घमंड न करने की प्रतिज्ञा की। ●

खाली हाथ

—जीवराम जोशी

राजपुर के ठाकुर ने सौ-सौ रुपए की तीस ढेरियां लगाईं, यानी तीन हजार रुपए । उन दिनों आज की तरह नोट नहीं चलते थे । लोग थैलियों तथा बोरियों में भरकर रुपए लाते, ले जाते थे ।

ठाकुर ने मियां फुसकी से कहा—"सुबह जल्दी आ जाइएगा । तीन हजार रुपए लेकर गोंडल गांव जाना है । वहां जयराम पटेल के बेटे अशोक पटेल को रुपए देने हैं । मैंने तभा भट्ट को भी सुबह जल्दी आने के लिए कह दिया है ।"

दूसरे दिन तभा भट्ट ठाकुर की बैठक में आकर बैठ गए । मियां फुसकी को आने में कुछ देर हुई । भट्ट जी ने हंसते हुए पूछा—"इतनी देर क्यों कर दी ?"

मियां जी ने कमर में लटकी तलवार की तरफ इशारा किया । भट्ट जी चिढ़ गए । मियां फुसकी ने हंसकर कहा—"हमें तीन हजार रुपए लेकर जाना है । रास्ते में कोई चोर-लुटेरा मिल गया, तो आपको दो थप्पड़ लगाएगा और रुपयों की थैली लेकर भाग जाएगा । लेकिन मेरी तलवार देखते ही वह डर जाएगा । फिर तो पांच पैसे भी लेने के लिए मेरी तरफ नहीं बढ़ेगा । मैं यह तलवार उसकी गर्दन पर रख दूंगा ।"

वे दोनों बातें कर ही रहे थे कि ठाकुर तीन हजार रुपयों की थैली लेकर आ गए । मियां फुसकी ने ठाकुर से कहा—"यह थैली भट्ट जी को दे दीजिए । भट्ट जी थैली संभालेंगे और मैं उनके पीछे-पीछे तलवार लेकर चलूंगा । मेरी तलवार देखकर कोई भी पास नहीं फटकेगा ।"

ठाकुर ने भट्ट जी को रुपयों की थैली सौंप दी ।

दोनों चल पड़े । आगे-आगे तभा भट्ट और पीछे-पीछे मियां फुसकी चल रहे थे । भट्ट जी के कंधे पर रुपयों की थैली थी । मियां फुसकी तेजी से चलने के कारण आगे निकल गए थे । मियां फुसकी तलवार की मूंठ पर हाथ रखकर खांसते -खांसते बढ़ रहे थे ।

लगभग दो घंटे लगातार चलने के बाद मियां



फुसकी को थोड़ी थकावट लगी। तभी उन्हें एक तालाब दिखाई पड़ा। तालाब के किनारे एक वट का पेड़ था। गर्मी के दिन थे। मियां जी वहां ठहर गए। पीछे देखा, तो भट्ट जी दिखाई नहीं दिए। मियां जी ने सोचा—'जब तक भट्ट जी यहां आएंगे, तब तक मैं थोड़ा विश्राम कर लूं।'

मियां फुसकी ने पलटकर देखा, तो कांप उठे—सामने एक आदमी हाथ में कुल्हाड़ी लिए खड़ा था। वह लुटेरा था। वह बोला—"मियां जी, इस कुल्हाड़ी की एक चोट से आपके सिर के दो टुकड़े हो जाएंगे। सारे रुपए मेरे हवाले कर दो। इसी में तुम्हारी खैर है।" यह सुन, मियां फुसकी हंस पड़े। लुटेरा गुस्से से बोला—"लाओ, रुपए मुझे दे दो। अब देर लगाओगे, तो मैं कुल्हाड़ी से तुम्हारा काम तमाम कर दूंगा। दे दो तीन हजार रुपए!"

मियां फुसकी हंसकर बोले—"मुझे हंसी इसलिए आ रही है कि तुम से कोई भूल हो गई है।"

लुटेरे ने पूछा—"क्या मतलब?"

मियां फुसकी ने कहा—"मतलब यह कि तुम्हारी तीन हजार रुपए की बात तो सौ फीसदी सही है, लेकिन रुपए तो गोंडल गांव से लाने हैं। इस समय मैं खाली हाथ हूं।"

लुटेरे ने कहा—"तो क्या उस ठाकुर के आदमी ने मुझे जो समाचार दिया था, वह झूठा था?"

मियां फुसकी ने मुसकरा कर कहा—"समाचार तो सच था, लेकिन तीन हजार रुपए लेकर जाने की बात नहीं थी, बल्कि गोंडल गांव जाकर रुपए लाने की बात थी। इसलिए यह गड़बड़ी हो गई। हम तो रुपए लेने जा रहे हैं, देने नहीं।"

यह सुन लुटेरा लौट पड़ा। तभी उसने तभा भट्ट को आते देखा। उसने फिर मियां जी की तरफ देखा। मियां जी ने सोचा—'यह लुटेरा भट्ट जी से रुपए छीन लेगा। मार-पिटाई भी करेगा।' इतने में भट्ट जी वहां आ पहुंचे। उन्होंने मियां से पूछा—"क्यों खड़े हैं?"

लुटेरे ने तभा भट्ट की तरफ देखते हुए कहा—"लाओ, रुपयों की थैली मुझे दे दो।"

यह सुनकर भट्ट जी ने आश्चर्य से कहा—"कौन से रुपयों की थैली?"

लुटेरे ने भट्ट जी की तलाशी ली। उनके पास कोई थैली थी ही नहीं।

मियां फुसकी बोले—"अरे मेरे भाई, रुपए लेकर हम जाते होते, तब तो हमारे पास रुपए होते! हम तो रुपए लेने जा रहे हैं। तभा भट्ट रुपयों का बोझ ढोने का काम नहीं करते।'

अब लुटेरे ने मियां फुसकी की तलाशी ली। मियां फुसकी की जेब में एक रुपया पड़ा था।

मियां फुसकी ने कहा— "मेरे भाई, यह रुपया आप इनाम समझकर रख लीजिए।" लुटेरे ने वह रुपया नीचे फेंक दिया और चला गया।

भट्ट जी ने मियां फुसकी से पूछा—"इस आदमी को कैसे पता चला कि हम तीन हजार रुपए लेकर जा रहे हैं?"

मियां फुसकी ने बताया—"ऐसे लोगों को रुपए-पैसे की भनक लग ही जाती है, लेकिन रुपयों की थैली आपके पास थी, वह कहां गई?"

तभा भट्ट ने कहा—"मैं दूर से आपको देख रहा था। मैं समझ गया कि किसी चोर-उचक्के ने आपको रोक लिया है। मामला गड़बड़ देख, मैंने रुपयों की थैली गड्ढे में छिपा दी थी।"

मियां फुसकी बहुत खुश थे। उन्होंने भट्ट जी को गले से लगा लिया।

भट्ट जी ने कहा—"मियां, तुम अपने को बहुत चतुर समझते हो, पर इस बार तो बुद्धिमानी का काम मैंने किया है।'

—"मैंने भी कम बुद्धि नहीं लगाई। मैंने उसे बहका दिया था कि हम रुपए लेकर नहीं, बल्कि रुपए लेने जा रहे हैं।"

"चलो, हम दोनों ने ही बुद्धि का काम किया है और उस लुटेरे को खाली हाथ लौट जाना पड़ा।"—इस प्रकार की बातें करते वे गड्ढे के पास पहुंचे। रुपयों की थैली लेकर वे गोंडल गांव की ओर बढ़ गए।

(अनुवादक : गोपालदास नागर)


चीटू-नीटू
इस वर्ष हम समय की बचत का ख़ास ख़्याल रखेंगे
यानी दो घंटे का काम एक घंटे में
1995
तेज हिट मारना भैया ताकि कम समय में ज्यादा स्कोर...
फिक्र न करो, अब तो समय की बचत ही करनी है
हिट तो तेज नहीं लगा पर मैं एक रन की बजाए दो लेने के चक्कर में..
कैच
क्यों भैया, सजा भुगत रहे हो क्या
सर भूगोल पढ़ा रहे थे। समय बचाने के लिए मैं साथ-साथ इतिहास की पुस्तक भी...
अब देखो, मैं कैसे एक घंटे का सफर तीस मिनट में...
भैया, इतनी गोलियां एक साथ
इंजेक्शन भी दो-दो
शायद डाक्टर मुझे छः दिन की बजाए तीन दिन में ठीक करना चाहता है

शीर्षक बताइए

अनूठा सिंगार : फूलों के हार इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए, कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ जनवरी '९५ तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : मार्च '९५ अंक

चित्र : हेमंत चौहान





पुरस्कृत चित्र

अक्तूबर '९४ अंक में प्रकाशित चित्र पहेली : १३१—विजेता :

जयदीप दास (आयु १३ वर्ष) द्वारा श्री प्रदीपचंद्र दास, रंग भवन, नंदी साही, चौधरी बाजार, कटक-७५३००१।

इनके चित्र भी पसंद आए—दिव्या सिंह, गुड़गांव; नितिनमोहन देहरादून; प्रवीण कुमार, त्रिवेंद्रम; श्वेता कुमारी, भटिंडा (पं.)।

बाल-सभा


आभा सोनी


अंकुर श्रीवास्तव


नीरज शर्मा


दीपक राज


समां

पत्र मिला

☐ वार्षिक उपहार विशेषांक ने हमें ढेर सारे उपहार दिए । चार चित्र-कथाएं सबसे बड़ा उपहार था । दीपावली की चमकती लौ में यह अंक मनोरंजन के रूप में हमें अनोखा प्रकाश दे गया ।

—शिवकांत, पटना (बि.)

☐ मुझे 'नंदन' पत्रिका बेहद प्यारी लगती है । इस पत्रिका की प्रत्येक कहानी और प्रतियोगिता, 'आप कितने बुद्धिमान हैं', 'चीटू-नीटू' और 'बाल समाचार' रोचक लगते हैं ।

—दिलीपकुमार, गढ़पारा, रायपुर (म.प्र.)

☐ नवम्बर '९४ अंक में 'यह मेरा है', 'घर नहीं जाऊंगा', 'अखरोट की करामात', 'एक लोटा पानी' तथा 'करनी का फल' रचनाएं विशेष पसंद आईं । यह अंक हमारे दिल में 'गागर में सागर' भर गया । **—जाबरसिंह, बंगलौर**

☐ दीपावली अंक बड़ा रोचक लगा । मैं 'नंदन' का नियमित पाठक हूं । पत्रिका को मेरे पापा भी पढ़ते हैं । यह हम सबको प्रिय है । 'काली पहाड़ी', 'असली जीत' तथा 'चीटू-नीटू' के कारनामे पसंद आए ।

—राजीव, अजय महर्षि, वामनवास, सीकर (राज.)

☐ मैं 'नंदन' का नियमित पाठक हूं । नवम्बर '९४ अंक मन को छू गया । 'चीन की सैर', 'हमारा पर्यावरण' तथा 'तेनालीराम' रोचक स्तंभ है । **—कल्पेश जोशी, नैनीताल**

☐ 'नंदन' पत्रिका का नया पाठक हूं । नवम्बर अंक में 'चाचा नेहरू', 'श्री लक्ष्मी-गणेश' और 'रघुनाथ मंदिर' बहुत अच्छा लगे । **—सतपाल सौदा, करनाल (हरि.)**

☐ नवम्बर '९४ वार्षिक उपहार विशेषांक मिला, तो मन प्रसन्न हो गया । इस अंक में 'श्री लक्ष्मी-गणेश' का रंगीन चित्र आकर्षक था । 'नए बालगीत' एवं सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक और रोचक थीं । मुझे हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है ।

—सोनी सहाय, आरा (बि.)

☐ नवम्बर अंक में 'चीन की सैर' व 'नंदन खेल' अच्छे लगे । एलबम पाकर जी खुश हो गया ।

—बिप्लव राय, गुवाहाटी (असम)

☐ नवम्बर अंक में जो रचनाएं पसंद आईं वे हैं— 'चीन में भारत', 'डाक टिकट संग्रह' और 'करनी का फल' । यह पत्रिका मनोरंजक व ज्ञानवर्धक है ।

—अंजुल जोशी, दिल्ली

☐ 'नंदन' का वार्षिक उपहार विशेषांक अनेक विशेषताओं से सुसज्जित था । 'मुखपृष्ठ', 'रंगीन झांकी', 'एलबम' व 'आओ बात करें' बहुत पसंद आए । आपने दीवाली के शुभ अवसर पर ज्ञान एवं शिक्षा का अतुलनीय उपहार दिया है ।

—अंकुर अग्रवाल, नवलगढ़ (राज.)

इनके भी पत्र उल्लेखनीय रहे : राजा बाबू शिवम्, मझौली पचदही (बि.); सुनील जुयाल, देहरादून; विद्या भारती राठौड़, भैरूंदा (राज.); अमित, दरभंगा ।

आगामी अंक

वसंती मौसम के संग, नंदन के विविध रंग
फरवरी अंक यानी मस्ती भरी चंग

☐ **एशिया की ऊंची प्रतिमा—मंगल महादेव एलबम में—मनोहारी दर्शन !**

☐ सैनिकों ने युवक को घेर लिया । उसने राजकुमारी की गरदन पर तलवार टिका दी । फिर क्या हुआ ? 'विश्व की महान कृतियां' में तमिल उपन्यासकार शांडिल्यन के ऐतिहासिक उपन्यास 'राजा की भेरी' का सार ।

☐ **आओ गीत लिखें फूलों के—दो पृष्ठों में रंग-बिरंगे फूल—स्वागत करते वसंत का ।**

साथ में सभी स्थायी स्तंभ

आ गया तूफान

—कुलदीप तलवार

रशीद एक गड़रिया था। उसका गांव समुद्र के किनारे था। गांव में मछुआरे ज्यादा थे। वे रोज सुबह अपनी नावों में बैठकर समुद्र में निकल जाते। दिन ढलने लगता तो थके-हारे लौटते। रशीद भेड़ें चराते हुए यह सब देखता रहता।

गांव में कई लोग व्यापार भी करते थे। उन्होंने काफी पैसा कमाया था। रशीद के मन में था कि वह भी कभी समुद्र की यात्रा करे। भेड़ चराने का काम छोड़कर औरों की तरह व्यापारी बनकर खूब पैसा कमाए।

एक दिन इसी सब में खोया रशीद चरागाह में बैठा था। तभी एक घुड़सवार वहां से गुजरा। दोपहर हो चली थी। धूप तेज थी। घुड़सवार भी रशीद के पास, पेड़ के नीचे आ बैठा। फिर दोनों में बातें होने लगीं। घुड़सवार ने उसे बताया—"मैं एक व्यापारी हूं। कल सुबह हमारी नाव माल लादकर सफर पर निकलेगी। मैं बीस बार इसी तरह माल लेकर समुद्री यात्रा कर चुका हूं। आगे कई द्वीप हैं। हम हर द्वीप पर जाकर माल बेचते हैं और खरीदते हैं। इसी तरह कई द्वीपों के बीच यात्रा करता हूं मैं।"

व्यापारी की बात सुनकर रशीद रोमांचित हो उठा। उसने कहा—"मैं भी समुद्र की यात्रा करना चाहता हूं। मैं समुद्र के इतने पास रहता हूं, पर आज तक कहीं नहीं गया। मेरी उम्र तो बस इसी चरागाह में भेड़-बकरियां चराते हुए बीती है। क्या मैं आपके साथ चल सकता हूं?"

"हां, हां, क्यों नहीं। मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूंगा। कल तुम बंदरगाह में आ जाना। मेरा नाम सुखराम है। वहां किसी से भी सुखराम व्यापारी के बारे में पूछना। बस, तुम मेरे पास पहुंच जाओगे।"—कहकर सुखराम अपने घोड़े पर बैठा और समुद्र की ओर चला गया।

अब रशीद को भला चैन कहां? उसने मन ही मन



फैसला कर लिया—'मैं आज ही भेड़ें बेचकर पैसा इकट्ठा करूंगा और कल बंदरगाह पहुंच जाऊंगा। मैं सुखराम के साथ मिलकर व्यापार करूंगा। फिर तो मेरे भी दिन बदल जाएंगे।'

उसी शाम रशीद भेड़ों के व्यापारी के पास पहुंचा। उससे कहा—"मैंने चरवाहे का काम छोड़ने का फैसला कर लिया है। मैं अपनी भेड़ें बेचना चाहता हूं?"

"फिर क्या करोगे तुम?"—व्यापारी ने हैरानी से पूछा।

"मैंने एक आदमी से बात कर ली है। मैं और वह मिलकर व्यापार करेंगे। मैं भी उसके साथ नाव में माल लेकर जाऊंगा।"—रशीद ने प्रसन्न स्वर में बताया।

भेड़ों का व्यापारी रशीद का मुंह देखता रह गया। उसने कहा—"रशीद, ऐसा करके तुम बहुत भारी गलती करोगे। तुम भला व्यापार के बारे में क्या जानो? तुमने इससे पहले समुद्र में यात्रा भी नहीं की। ऐसा न हो कि जो कुछ आज तुम्हारे पास है, वह भी हाथ से जाता रहे।"

व्यापारी ने रशीद को बहुत समझाया पर वह भला कहां मानने वाला था। आखिर व्यापारी ने कहा—"मैं तुम्हारी भेड़ें खरीदूंगा नहीं, अपने पास गिरवी रख लूंगा। यह बात मैं तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा

हूं ।"

रशीद ने अपनी भेड़ें व्यापारी के पास गिरवी रख दीं और रुपए लेकर चला गया । उसी रात वह अपना घर बंद करके बंदरगाह की तरफ चल दिया । उसे उम्मीद थी कि उसका सपना सच होकर रहेगा । वहां पहुंचकर रशीद ने सुखराम के बारे में पूछा तो पता चला, वह तो अपनी नाव लेकर चला गया है ।

रशीद परेशान हो उठा । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि सुखराम चला क्यों गया ? कुछ देर वह सोच-विचार में डूबा खड़ा रहा, फिर उसने सोचा—'सुखराम चला गया तो कोई बात नहीं, मैं खुद नाव लेकर जाऊंगा ।' इसके बाद वह नाव वाले के पास गया। उससे बात की ।

नाव वाले ने पूछा—"तुम्हें नाव चलाना आता है क्या ?"

—"नहीं तो ।"

"तब फिर नाव किसलिए चाहिए ?"—नाव वाले ने पूछा ।

"मुझे नाव में माल लेकर जाना है । मैं व्यापार करना चाहता हूं"—रशीद ने कहा ।

रशीद की अटपटी बात सुनकर नाव वाला हंसने लगा । उसे महसूस हो गया था कि रशीद एकदम अनाड़ी है । उसने कहा—"मैंने तुम्हारे जैसा नासमझ आदमी नहीं देखा । भला इस तरह भी कोई सफर पर निकलता है ।"

नाव वाले की बात सुनकर रशीद कुछ घबरा गया । उसने कहा—"तुम मेरे लिए नाव तथा एक मल्लाह का इंतजाम कर दो । मैं मल्लाह को साथ ले जाऊंगा, उसीसे नाव चलाना भी सीख लूंगा ।"

नाव वाला कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला—"जब तुमने जाने की हठ ठान ली है,तो यही सही । मैं ले चलूंगा तुम्हें । पर अगर तुम किसी मुसीबत में फंस जाओ, तो मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी ।"

सौदा तय हो गया । रशीद ने बेचने के लिए कुछ सामान खरीदा और नाव में जा बैठा । नाव वाला नाव को खे कर ले चला । रशीद ध्यान से देख रहा था कि वह नाव कैसे चला रहा है और सोच रहा था—'इसमें क्या है, मैं भी जल्दी ही नाव चलाना सीख जाऊंगा ।'

समुद्र शांत था । चमचमाती धूप खिली हुई थी । रशीद को यात्रा में आनंद आ रहा था लेकिन थोड़ी देर बाद ही आकाश में काले-काले बादल घिर आए । तूफानी हवा बहने लगी । रह-रहकर बिजली कड़कने लगी । शांत समुद्र में हलचल मच गई । बड़ी-बड़ी लहरें उठने लगीं । रशीद की नाव लहरों पर छोटे-से तिनके की तरह थरथराने लगी ।

समुद्र की हालत देख, रशीद घबरा गया । उसकी समझ में न आया कि क्या करे । वह खुदा को याद करने लगा । नाव वाले ने कहा—"हम तूफान में फंस गए हैं । पता नहीं अब क्या होगा ?" तभी नाव उछली और उसमें रखा सारा सामान पानी में जा गिरा । नाव वाला नाव को दूसरी तरफ मोड़ ले गया । उसने कहा—"मैं वापस चल रहा हूं। आगे नहीं जाऊंगा ।"

अब रशीद को भी लग रहा था कि इस तरह यात्रा पर निकलकर उसने बड़ी भूल की है । काफी देर बाद नाव वाला जैसे-तैसे नाव को किनारे पर ले आया । उसने रशीद को नाव से उतार दिया । ठंड और थकान से रशीद बुरी तरह कांप रहा था । उसका सपना चूर-चूर हो गया था । उसका सब कुछ चला गया ।

अगले दिन रोता-कलपता रशीद अपने गांव जा पहुंचा । वह भेड़ वाले के पास गया । उसे कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी । उसका हुलिया देखकर ही भेड़वाला सब कुछ समझ गया। उसने कहा—"रशीद, मैंने तो तुम्हें पहले ही मना किया था पर तुम नहीं माने । खैर मनाओ कि तुम्हारी जान बच गई ।"

रशीद फूट-फूटकर रो पड़ा। उसने कहा—"भैया, मेरी नासमझी ने मुझे बरबाद कर दिया । मैं पहले ही ठीक था ।"

अगली सुबह रशीद चरागाह में फिर भेड़ें चरा रहा था । उसके चेहरे पर गहरी उदासी थी । ●

रहीम का ऊंट

रहीम के माता-पिता की मृत्यु हो चुकी थी। दुनिया में वह बिल्कुल अकेला था। न कोई रिश्तेदार न भाई या बहन।

उसके घर से थोड़ी दूर डा. गोपाल का घर था। एक बार जब डा. गोपाल कहीं जा रहे थे तो उन्होंने रास्ते में रहीम को रोते देखा। पास आकर रोने का कारण पूछा। उसने बताया कि वह दो दिन से भूखा है। उसके मात-पिता नहीं हैं।

इतने नन्हे बच्चे को इस हालत में देखकर डा. गोपाल का दिल भर आया। वह बोले—"कोई बात नहीं बेटा, तुम मेरे साथ चलो।"

डा. गोपाल,रहीम को घर ले आए। उनके दो बच्चे थे—रीता और राजेश। डा. गोपाल ने अपनी पत्नी और बच्चों को रहीम के बारे में बताया, उन्हें भी बहुत दुःख हुआ। वे उसका खूब ध्यान रखते। कोशिश करते कि उसे किसी बात से दुःख न पहुंचे। रीता-राजेश अपने साथ-साथ रहीम को भी पढ़ना-लिखना सिखाते। जब वे खेलने जाते तो उसे अपने साथ ले जाते। पहले-पहल रहीम को इतने बड़े घर में कुछ अजीब-सा लगता लेकिन अब धीरे-धीरे उसका मन लगने लगा था।

एक बार की बात, राजेश का जन्मदिन आया। राजेश, रीता के साथ-साथ रहीम के लिए भी कपड़े बनाए गए। जन्मदिन के दिन घर को खूब सजाया गया। चारों ओर हरी-पीली झंडियां लहरा रही थीं। वंदनवार और फूलों की झालरें लटक रही थीं।

धीरे-धीरे मेहमानों का आना-जाना शुरू हो गया। राजेश के लिए तरह-तरह के उपहार लाए जा रहे थे। रीता और रहीम उन उपहारों को संभालकर एक तरफ रखते जा रहे थे। बहुत देर तक दावत चलती रही। मेहमानों के जाते-जाते रात आधी बीच चुकी थी। रीता की बहुत इच्छा थी कि सारे उपहारों को खोलकर देखे, मगर मम्मी-पापा ने कहा कि सब सो जाएं।



अगली सुबह रीता, राजेश और रहीम उपहारों को देखने लगे। किताबें, खिलौने, खेल का सामान। इस सारे सामान में रहीम को लकड़ी का बना ऊंट सबसे अधिक पसंद आया। वह उसे देखकर बार-बार कह रहा था कि ऊंट कितना सुंदर है।

राजेश ने यह देखा तो बोला—"रहीम यह सारा सामान हम तीनों का है। यह ऊंट तुम्हें सबसे अधिक पसंद है तो तुम रख लो।"

रहीम बोला—"भइया,मैं इस ऊंट को कहां ले जाऊंगा? मैं भी तो यहीं रहता हूं।"

उसकी बात सुनकर रीता बोली—"अरे हां। राजेश भइया ऐसा करते हैं, आज से इस ऊंट का नाम हुआ, रहीम का ऊंट।" रीता की बात सुनकर राजेश और रहीम हंसने लगे।

—विनीत अहीतान, मेहसाणा (गुज.)

पिता ने कहा

सुमित को आते देख रानू, आशू और छोटू दूर से ही शोर मचाने लगे—"पापा आ गए। पापा आ गए।" बच्चों की आवाज सुनकर सुमन भी दौड़ी आई।

घर के अंदर आकर सुमित ने सारा सामान एक तरफ रख दिया। कहा—"सुमन, आज मैं बच्चों के लिए बहुत अच्छी मिठाई लाया हूं। जल्दी से प्लेट में ले आओ।" मिठाई का नाम सुनकर बच्चे उछल-कूद मचाने लगे।

सुमन प्लेट में मिठाई रख लाई। खा-पीकर बच्चे बाहर खेलने चले गए। सुमन बोली—"तुम्हारे पास

पैसे तो थे नहीं फिर इतनी सारी मिठाई कहां से ले आए ?''

सुमित ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। सुमन कहने लगी—''देखो, ईमानदारी की सूखी रोटी भी मंजूर है लेकिन तुम रिश्वत लेकर घर में मिठाई लाओ, यह बात मुझे पसंद नहीं है।''

एक दिन बच्चों को पता चलता है कि उनके स्कूल में भाषण प्रतियोगिता होने वाली है। अध्यापिका बच्चों से कहती हैं कि सभी बच्चों को अपने माता-पिता के साथ आना है। रानू भी भाषण देने वालों में अपना नाम लिखवा देती है।

भाषण प्रतियोगिता के दिन सब बच्चे अपने माता-पिता के साथ स्कूल पहुंचते हैं। रानू, आशू और छोटू के साथ सुमन और सुमित भी हैं। प्रतियोगिता शुरू होती है। विषय है—'बेईमानी और ईमानदारी।' रानू जब भाषण देने आती है और बेईमानी के खिलाफ बोलती है तो सुमित को लगता है, जैसे सारी बातें उसीसे कही जा रही हों। वह समझ नहीं पाता कि क्या करे और क्या न करे ?

लौटते हुए सुमित सोचता है—'आखिर वह रिश्वत क्यों लेता है ? बच्चों के लिए ही न। मगर जब बच्चों को पता चलेगा कि उनका पिता रिश्वत लेता है तो उन पर क्या बीतेगी ? वे उससे नफरत करने लगेंगे ?' उसकी आंखें भर आती हैं। वह सुमन से कहता है—''आज रानू ने मेरी आंखें खोल दी हैं। अब से मैं कभी रिश्वत नहीं लूंगा। बेईमानी नहीं करूंगा।''

—विवेक परमार, डबरा (म. प्र.)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं: भूपेंद्र, जगाधरी; **कनिका गुप्ता,** शिमला; **संजीव कुमार,** कुसुंडा; **मधुमीता मिश्र,** राउरकेला (उड़ीसा)।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. घड़ी में समय बदल गया है।
२. उसके नीचे वाले चित्र में चोंच छोटी है।
३. सोफे का पाया काला हो गया है।
४. लेम्प शेड पर लगा टैग बड़ा है।
५. बोली लगाने वाले के हाथ में लगे कागजों पर अधिक पंक्तियां हैं।
६. उसके मूंछें हैं।
७. बर्तन देने वाले का बायां हाथ बर्तन के नीचे दिखाई दे रहा है।
८. सामने सबसे आगे बैठे आदमी ने चशमा पहन रखा है।
९. लाट का नम्बर बदल गया है।
१०. नम्बर लिए खड़े व्यक्ति के गेटिस का एक सिरा गायब है।

शीर्षक बताइए
परिणाम



'नंदन' नवम्बर '९४ में छपे बहुत सारे शीर्षक मिले। चित्र पर इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

मिट्टी की यह मेरी गाड़ी, पेड़-पौधे करें सवारी।
—तनिमा बजाज, पोस्ट आफिस के बाजू में, रामपायली, जि. बालाघाट, पिन—४८१३३५ (म. प्र.)।

मम्मी खिलौने लाईं, गुड़िया रानी मुसकराईं।
—अमित सिन्हा, द्वारा रमाकांत प्रसाद सिन्हा, भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, प्रतिभा काम्प्लेक्स, जुबली रोड, गोरखपुर (उ. प्र.)।

गाड़ी खड़ी है तैयार, मैं चली घूमने बाजार।
—रूपेशकुमार प्रसाद, शुक्ला बिल्डिंग, पहला माला—१५ कोलसे बाड़ी, कल्याण, पिन— ४२१३०६ (महा.)।

मेरी गाड़ी आई, माल साथ लाई।
—अनुराधा सांखला, पूनाराम सांखला, पो. रियांबाड़ी, जि. नागौर (राज.)।

इनके शीर्षक भी सराहे गए: ललित कुमार खत्री, **देहरादून;** मेरिना मिंजु, जमशेदपुर; दीप्ति गोयल, नई **दिल्ली; आशीष पाल,** धनबाद; शालू चौधरी, सीकर **(राज.); संतोष कुमार चौधरी,** हुगली (प. बं.)।

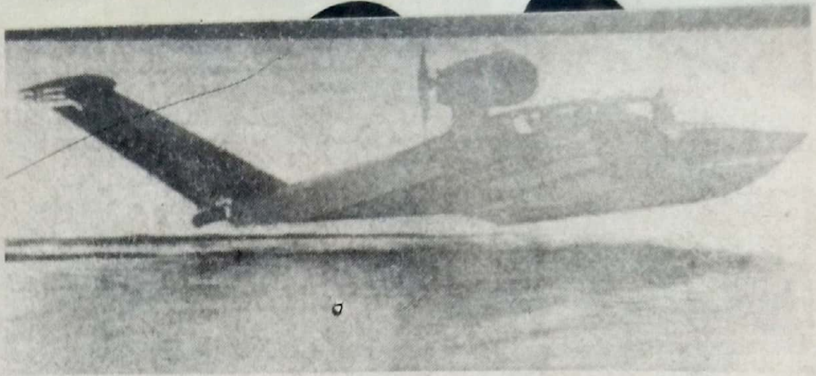
अजब-अनोखी दुनिया

खुल जा सिमसिम : अलीबाबा और चालीस चोर का किस्सा याद है ? गुफा के दरवाजे पर खुल जा सिमसिम कहते ही दरवाजा खुलता। बंद हो जा सिमसिम की आवाज पर गुफा का दरवाजा बंद। अमरीका में आजकल ऐसी ही खिड़कियां बिक रही हैं। मारविन कम्पनी की ये खिड़कियां 'रिमोट कंट्रोल' से चलती हैं। बटन दबाओ, खिड़की बंद। इन जादुई खिड़कियों की एक और खासियत है। बरसात के समय इन्हें बंद करने के लिए भागने की जरूरत नहीं। खिड़कियों में ऐसे संवेदी यंत्र लगे हैं, जो पानी की बूंदें पड़ते ही खिड़की बंद कर देते हैं। खिड़कियों में खतरे के अलार्म भी लगे हैं। चोर ने खिड़की तोड़ी या कोई खुली खिड़की से घुसा, तो अलार्म बज उठेगा।

दांतों की सुरक्षा के लिए वार्निश : आजकल दांतों के रोग बढ़ रहे हैं। दिल्ली के श्रीराम औद्योगिक अनुसंधान संस्थान ने हाल ही में एक दंत वार्निश तैयार किया है। इससे दांतों को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है।

हाथ के इशारे से चलने वाली मशीन : राजा-महाराजाओं के ठाठ थे। ताली बजाई और सेवक हाजिर— हुक्म दीजिए मालिक ? अब ये काम मशीनें करेंगी। रेडियो बनाने वाली कम्पनी फिलिप्स ने ऐसा सी डी प्लेयर (काम्पेक्ट डिस्क बजाने की मशीन जिस पर गाने बजते हैं) बनाया है जिसमें घड़ी लगी है। सुबह अलार्म घड़ी की तरह ठीक समय पर गाना बज उठेगा। आप नींद से उठ जाएंगे। गाना बंद करने के लिए बिस्तर पर लेटे-लेटे हाथ हिलाइए। मशीन हाथ की गति देखकर, गाना बंद कर देगी।

अल्युमीनियम की चेसिस : मोटरों की चेसिस जल्दी ही लोहे के बजाए अल्युमीनियम की बनने लगेंगी। इंजन के अधिकांश हिस्से भी इसी धातु के बनेंगे। इससे गाड़ियों का वजन घटेगा। वजन घटने से एक लिटर पेट्रोल में कार ज्यादा चलेगी।



पंखोंवाली नाव : भविष्य की नाव कैसी होगी ? अब कल्पना की उड़ान भरने की जरूरत नहीं है। वैज्ञानिकों ने उसका नमूना तैयार कर लिया है। भविष्य की नाव छोटे-से हवाई जहाज के आकार की होगी। यह नाव पानी की सतह से करीब ६ फीट ऊपर हवा में तैरेगी।

'फ़्लेयर क्राफ्ट' नाम की यह नाव करीब सवा सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से उड़ती है। इसकी चकरी घूमने लगती है। पंखों की हवा का दबाव बढ़ जाता है और नाव पानी के ऊपर करीब ६ फीट की ऊंचाई पर तेजी से दौड़ती है। हाल ही में एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में इसका प्रदर्शन किया गया।

नन्हा-सा स्केल : लम्बाई-चौड़ाई मापने के पैमाने (स्केल) से हम आमतौर पर मिलीमीटरों में लम्बाई माप सकते हैं। अगर लम्बाई और छोटी हो तो माइक्रान यानी मिलीमीटर के हजारवें हिस्से तक मापने का पैमाना चाहिए।

एक जापानी कम्पनी ने हाल ही में एक नया पैमाना (स्केल) बनाया है। इस पैमाने की मदद से ०.२ माइक्रान की लम्बाई भी मापी जा सकती है।

गाय दुहने वाले रोबोट : हालैंड की गाएं काफी दूध देती हैं। इतना कि आदमी दूध दुहते-दुहते थक जाए। इसका हल है मशीनों से दूध दुहना।

हालैंड की एक कम्पनी है—एमीलूर्ड। उसने एक मशीनी मानव (रोबोट) बनाया है। यह मशीनी मानव गाय दुहने का काम करता है। कम्पनी का दावा है कि आगे चल कर गायों को आदमी से ज्यादा इन मशीनों से प्रेम हो जाएगा। ये रोबोट गायों को दुहते समय उन्हें चारा भी खिलाते हैं।

—बृजमोहन गुप्त

नई पुस्तकें

लखन पटवारी
साधु के तीन उपदेश
लेखक : शुभंकर बनर्जी; प्रकाशक : यात्री प्रकाशन, बी-१३१, सादतपुर, दिल्ली-९४; मूल्य : १० रुपए प्रत्येक

बच्चों को कहानी सुनने में बड़ा मजा आता है। लोक-कथाओं की तो बात ही कुछ और है। सदियों से ये कथाएं बड़े-बूढ़े अपने बच्चों को सुनाते रहे हैं। हर बार उनका आनंद बढ़ता ही जाता है। अब तक ये कथाएं सुनी-सुनाई जाती थीं। अब तीन-तीन कहानियों के संकलन छापे गए हैं। सभी कहानियां रोचक हैं। मुखपृष्ठ रंगीन और आकर्षक है। अगर अंदर के चित्र भी रंगीन होते तो अच्छा रहता।

सच्चाई की करामात
आदर्श विद्यार्थी बनो
चरित्र-बल

सभी पुस्तकों के लेखक : जगतराम आर्य; प्रकाशक : किताबघर, मेन रोड, गांधीनगर, दिल्ली-३१; सजिल्द पहली पुस्तक मूल्य : ३० रुपए, अन्य दोनों २५ रुपए प्रत्येक।

बहुत-से लोग नहीं जानते कि जगतराम आर्य बच्चों के लेखक थे। उन्होंने जो कुछ लिखा, वह बच्चों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी पठनीय है। नैतिक शिक्षा, देशभक्ति, शहीदों-संतों से जुड़ी घटनाओं को उन्होंने खास तौर से लिखा। उनकी पुस्तकें जीवन-शिक्षा के लिए अच्छी हैं। ये पुस्तकें स्कूलों के पुस्तकालय में अवश्य रखी जानी चाहिएं।

सच्चाई की करामात : इसमें महापुरुषों और नायकों के जीवन की सत्रह घटनाएं हैं। सभी प्रेरक और रोचक हैं। पुस्तक पढ़कर लगता है कि सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है। दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं, जिसे हम सत्य बोलकर न पा सकें।

आदर्श विद्यार्थी बनो : खास तौर से किशोरों के लिए यह पुस्तक लिखी गई है। स्वावलम्बन, परिश्रम, वीरता, ब्रह्मचर्य तथा अनुशासन आदि के बारे में बताया गया है। बीस अध्यायों में बंटी हुई पुस्तक में आदर्श जीवन जीने की कुंजी छिपी है।

चरित्र बल : छोटी-छोटी पौराणिक घटनाओं के द्वारा लेखक ने चरित्र निर्माण पर जोर दिया है। इसमें कोरे उपदेश ही नहीं दिए गए, उन्हें सरल भाषा और रोचक ढंग से लिखा गया है।

सूरज के आंगन में—लेखक : देवेन्द्र मेवाड़ी; प्रकाशक : प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय, डा. के. एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-१२ : मूल्य : ३० रुपए।

हिंदी के श्रेष्ठ विज्ञान लेखकों में देवेन्द्र मेवाड़ी का नाम जाना-पहचाना है। उन्होंने सौर मंडल के नए-पुराने रहस्यों को बातों-बातों में खोलकर रख दिया है। पहेलियां बुझाते और प्रश्न करते बच्चों को देवी दा तारों भरे आकाश के बारे में बताते हैं—ग्रह-उपग्रहों, क्षुद्र ग्रहों, उल्का तथा धूमकेतुओं की दिलचस्प जानकारी देते हैं। पाठक यह भी जान लेते हैं कि आज केवल एक चांद नहीं है। मानव अब तक ६३ चांदों का पता लगा चुका है। अनेक चित्रों, छाया चित्रों से सजी यह पुस्तक सभी को पढ़नी चाहिए।



नंदन ज्ञान-पहेली : ३११

परिणाम

कमाल कर दिया इस बार पाठकों ने। पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। पांच सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध : पांच : प्रत्येक को दो सौ रुपए

१. अंकुर बंसल, करनाल; २. अजयकुमार गर्ग, दरभंगा; ३. सुनील शर्मा, बीकानेर; ४. लोकेशकुमार गोयल, दिल्ली; ५. रविकुमार, सहरसा।

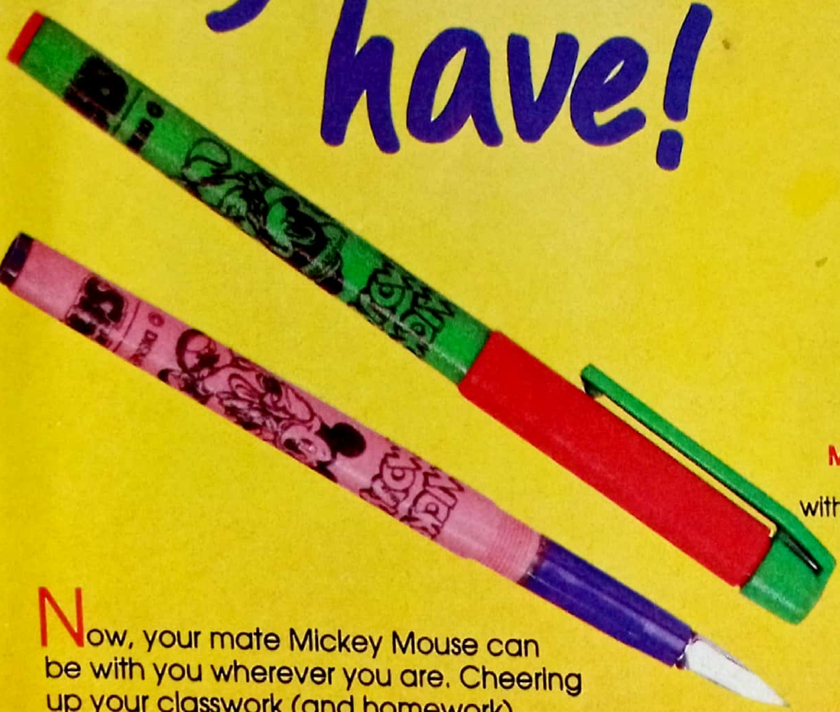
उत्तर : गोरखधंधा

१. किसी भी जलती वस्तु से छुआ कर जला सकते हैं; २. आम का वृक्ष; ३. साइफन से; ४. शहद; ५. जूते के अंदर पंजों की ओर कपड़ा भर दें।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

The Nicest Class Mate you could have!





MICKEY MOUSE NEO FOUNTAIN PENS
In exciting body colors,
with a modern injection filling system that
puts the fun back into filling ink!

Now, your mate Mickey Mouse can be with you wherever you are. Cheering up your classwork (and homework) with Mickey Mouse Neo Fountain Pens.

And adding a whole lot of color to your day with Mickey Mouse Colorstix!

So, get your Mickey Mouse pens from Stic. And you've got the greatest mate of them all.



R.KANGA/STIC/18/94

MICKEY MOUSE COLORSTIX
In 12 exciting colors including never-befores like Flesh Tint, Sky blue and Light Pink. Plus a set of FREE MICKEY MOUSE STICKERS with every pack of 12 or 6 Colorstix Pens.

MICKEY MOUSE PENS

Stic

© Disney

Stic Pens Pvt. Ltd. C-101, Mayapuri Industrial Area, Phase II, New Delhi 110 064.

नंदन रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९४ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

